ज्योतिष नवनीत
आचार्य भास्करानन्द लोहनी

ज्यौतिष-नवनीत

[होरा गणित]

अर्थात्

सोदाहरण ज्यौतिष स्वयं शिक्षक

⊛

उत्तरखण्ड

⊛

लेखक :—

आचार्य भास्करानन्द लोहनी

शास्त्री, ज्योतिषाचार्य

(निदेशक, अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान तथा सांस्कृतिक शोध परिषद)

JYOTISH-NAVANEET

(Uttar Khand)

By—Acharya Bhaskaranand Lohani

Price : Rs. Hundred only

* प्रथम संस्करण

* सम्वत् २०४७ वि० (१९९१)

* प्रकाशक : आग्रहायण प्रकाशन
१५ चांदगंज गार्डन, लखनऊ–२२६०२०

* मुद्रक : चेतना प्रिंटिंग प्रेस, २२ कैसरबाग, लखनऊ

* मूल्य : सौ रुपये मात्र

अधिकृत विक्रेता :—

१—यूनिवर्सल बुकसेलर्स, हजरतगंज, लखनऊ ।

२—प्रकाश बुक डिपो, श्रीराम रोड, लखनऊ ।

३—सरदार सोहन सिंह बुकसेलर, ३४ वक्षीगली, इन्दौर-४

४—रंजन पब्लिकेशन्स, १६ अन्सारी रोड, दिल्ली ।

५—के० के० गोयल एण्ड कम्पनी, २१४ दरीबाकलां, दिल्ली-६

६—नेशनल बुक हाउस, एस.सी०ओ० ७०-७२/३, सेक्टर १७ डी, चण्डीगढ़ ।

७—हिन्दी बुक सेन्टर, आसफ अलीरोड, नई दिल्ली-२

विषय सूची

१--मूल गण्डान्तादि विचार ५-१९
२—षटवर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग, द्वादशवर्ग और षोडशवर्ग आदि साधन २०-४०
३—इष्टशोधन ४१-५०
४—दशवर्ग आदि का विचार (फलादेश विधि) ५१-५५
५—दशासाधन ५६-७८
६—दशाओं का फल ७९-८४
७—आयु विचार व आयु साधन ८५-११५
८—ताजिक ज्यौतिष (वर्षफल, मासफल दिनफल निर्माण) ११६-१४१
९—पारशीय ज्यौतिष की विशिष्ट पद्धतियाँ १४२-१६१
१०—विश्व की समय प्रणालियाँ १६२-१७२
११—उत्तरी गोलार्ध में भारतेतर देशों का इष्टसाधन व कुण्डली निर्माण १७३-१८२
१२—दक्षिण गोलार्ध का इष्टकाल व लग्न साधन १८३-१८७
१३—ग्रहनक्षत्र और उनकी शान्ति १८८-१९६
१४—कुण्डली निर्माण की पाश्चात्यविधि १९७-२१४
१५—लघु गणक कोष्ठक से ग्रहस्पष्ट विधि २१५-२१७
१६—सप्तवर्ग चक्र (सारिणी) प्रयोग विधि २२१

* * *

निरयन लग्न सारिणी-अक्षांश ४० १८६-१८७
लघु गणक कोष्ठक २१८-२१९
सप्तवर्ग सारिणी २२१-२२३

दो-शब्द

ज्यौतिष के होरा सम्बन्धी गणित कार्य की पुस्तकों के अभाव
को देखते हुए अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान तथा
सांस्कृतिक शोध परिषद द्वारा संचालित
परीक्षाओं के पत्राचार पाठ्यक्रम
के रूप में इन धारावाहिक
(ग्रंथ) लेखों को
लिखा गया
है।

प्रयास यही रहा है कि ज्यौतिष के कठिन से कठिन एवं दुरूह
विषय को सरल से अति सरल रूप में उदाहरण सहित
इस ढंग से प्रस्तुत किया जाय, ताकि कोई भी
अध्येता या छात्र बिना किसी के सहारे
या मार्गदर्शन के इस विद्या में सिद्ध-
हस्त हो सके। आशा है विद्या-
र्थियों तथा ज्योतिर्विदों के
लिए यह ग्रंथ समान
रूप से उपयोगी
सिद्ध होगा।

—लेखक

मूल-गण्डान्तादि विचार*

पिछले पाठों में ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी प्रारम्भिक गणित बतलाया गया था। अब इस विषय को आगे बढ़ाने से पहले फलित सम्बन्धी कुछ दिग्दर्शन करायेंगे।

फल विचार के अनेक साधन और अनेक ढंग हैं, जो क्रमशः दिये जायेंगे। विशेषकर जातक अथवा जन्मपत्र के बारे में तीन क्रम मुख्य हैं।

(अ) जन्मकालीन समय का फल जिस वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण इत्यादि में जातक का जन्म हो-तदनुसार जातक के भविष्य तथा प्रकृति के बारे में बतलाया जाता है। इस सम्बन्ध में फलादेश विविध ग्रंथों में हैं किन्तु 'जातका भरण' नामक ग्रंथ में इस विषय पर अच्छा साहित्य है। जैसे समय में जातक का जन्म होगा उसके अनुसार उसके भविष्य जीवन के बारे में सोचा जा सकता है, अतः जन्म के समय का बड़ा महत्व है। जिस प्रकार राजवंश या सम्पन्न घर में कोई भाग्यहीन बालक भी जन्म ले तो भी वह राजा या करोड़पती भले ही न हो सम्पन्न अवश्य होगा और एक ग्वाले के यहाँ राजयोग में भी बालक जन्म ले तो वह अधिक से अधिक एक सम्पन्न या समाज का प्रधान ही हो सकता है, राजा नहीं। जैसे जन्मकालीन पारिवारिक स्थिति से बालक के जीवन पर प्रभाव पड़ता है वैसे ही जन्म कालीन शुभ या अशुभ समय का भी जातक पर प्रभाव पड़ता है, अच्छे समय पर जिस जातक का जन्म हो, भले ही उसकी स्थिति साधारण हो फिर भी जन्म कालीन ग्रहस्थिति से उसका भाग्य व आचार विचार अच्छा होगा। इसके विपरीत कुसमय में जन्मे बालक के ग्रहयोग उत्तम होते भी उतना अच्छा न होगा। अतः जन्मकालीन समय पर ध्यान देना आवश्यक है। इस विषय पर समाज में प्रचलित कुछ मुख्य विचार यह हैं।

---

*इस अध्याय की सामग्री 'वृहदैवज्ञ रंजन' पर आधारित है।

गण्डान्त

गण्डान्त तीन प्रकार के होते हैं। तिथि गण्डान्त, नक्षत्र गण्डान्त और लग्न गण्डान्त।

(१) नक्षत्र गण्डान्त—अश्विनी, मघा तथा मूल में आरम्भ की दो घड़ी और रेवती, अश्लेषा तथा ज्येष्ठा की अन्तिम दो घड़ी गण्डान्त कहे जाते हैं, यह सर्व मान्य मत है, यद्यपि कुछ ग्रंथों में इससे अधिक समय भी गण्डान्त माना गया है, एक मत से—

अश्विनी ३ घड़ी आदि में।
मघा ४ घड़ी आदि में।
मूल ६ " "।
रेवती १२ घड़ी अन्त में।
अश्लेषा ११ " "।
ज्येष्ठा ६ " " ऐसा भी उल्लेख है।

(२) तिथि गण्डान्त—नन्दातिथियों के (१. ६. ११) आरम्भ में तथा पूर्णा तिथियों (५. १०. १५.) के अन्त में एक-एक घड़ी को तिथि गण्डान्त कहते हैं।

(३) लग्न गण्डान्त—कर्क, वृश्चिक तथा मीन लग्न के अन्त में आधी घटी और मेष, सिंह, धन के आरम्भ में आधी घटी लग्न गण्डान्त कहा जाता है।

गण्डान्त वास्तव में कुछ नियत सन्धि का समय है, ऐसे संधिकाल में जन्म शुभ नहीं माना गया है। महर्षियों ने इसका फल इस प्रकार बतलाया है—

नक्षत्रगण्डान्त—माता को अशुभ।
तिथिगण्डान्त—पिता को "।
लग्नगण्डान्त—स्वयं को "।

विस्तार से विचार करते हुए महर्षि बादरायण ने कहा है—

गण्डान्त—जन्मसंध्यासमय हो	—रात्रि में	—दिन में
नक्षत्र का—स्वयं को	—माता को	—पिता को
तिथि का—माता को	पिता को	—स्वयं को।
लग्न का—पिता को	—स्वयं को	—माता को।

ग्रंथकार लल्ल के मतानुसार कोई भी गण्डान्त हो जन्म दिन में होने पर पिता को, रात्रि में माता को, संध्या समय (संध्या शब्द से प्रातः संध्या और सायं संध्या दोनों से तात्पर्य है) स्वयं को अशुभ होता है।

गण्डान्त का विशेष विचार यह है कि गण्डान्त में उत्पन्न शिशु जीवित कम रहते हैं, और यदि जीवित रह गये तो अशुभ फल करते हैं, लेकिन जीवित रह कर भी ऐसे शिशु या तो माता पिता को अशुभ फल करते हैं, अथवा स्वयं जन्मस्थान से बाहर रहते हैं। पिता माता आदि परिवार के लिए सुख संतोषकारी नहीं होते।

गण्डान्त का परिहार

गण्डान्त में शिशु उत्पन्न होने पर शास्त्रों में उनकी शान्ति के लिये होम, यज्ञ, तथा दान का विधान है। शास्त्रों में ऐसा भी प्रमाण मिलता है कि विशेष स्थितियों में जन्म गण्डान्त का दोष नहीं होता जैसे—

(१) कन्या का जन्म दिन में गण्डान्त में हो।

(२) पुत्र का जन्म गण्डान्त में रात का हो।

(३) जन्म कुण्डली में एकादश स्थान में कोई शुभग्रह या चन्द्रमा हो तो गण्डान्त दोष नहीं रहता।

मूल और अभुक्त मूल

मूल का जन्म समाज में बड़ा अशुभ माना जाता है, लेकिन इतने भयभीत होने की बात नहीं है। वास्तव में इसका दोष उन तथाकथित ज्योतिषियों पुरोहितों को है जो मूलशान्ति के नाम पर अपनी जेब गरम करने के लिये शिशु जन्म के मंगल समय पर अपने निहित स्वार्थ के लिये माता-पिता को भय दिखाकर अमंगल करते हैं। पता नहीं दूसरे प्रान्तों में क्या स्थिति है यहाँ उत्तर प्रदेश में तो पण्डितों की बलिहारी है। यह ऐसा प्रान्त है जहाँ मुसलमानों का पूर्ण शासन रहा, जिससे यहाँ की संस्कृति नष्ट हो गयी है। बड़े यज्ञों, कर्मकाण्ड के बारे में कौन कहे कर्मकांड एवं पूजा-पाठ के साधारण व्यवहारों की जानकारी भी यहाँ के पंडित वर्ग को नहीं है 'आंख के अन्धे नाम के नयनसुख' यह पंडित अपना तथा यजमान का क्या भला करेंगे, दुःख है।

मूल वास्तव में मूल नक्षत्र का ही नाम है। जिसका जन्म मूल में हो उसी को कहा जा जायगा कि मूल में जन्म है, लेकिन यहाँ लखनऊ में मुझे पता चला कि मूल १ नहीं ६ हैं। आप आश्चर्य करेंगे कि यहाँ पर अश्विनी, मघा, मूल,

रेवती, अश्लेषा और ज्येष्ठा यह ६ नक्षत्र मूल हैं । इन ६ नक्षत्रों में से किसी भी एक में किसी भी समय आपका शिशु जन्म ले तो कह दिया जायगा कि मूल में जन्मा है जिसकी शान्ति के नाम पर सैकड़ों पाखन्ड तो रचें जायेंगे, लेकिन वास्तविक शान्ति और उसके क्रम को जानने वाला पंडित नगर भर में ढूंढ़े न मिलेगा । ऐसे ही मैंने एक पंडित जी से पूछा—"पंडित जी मूल तो एक ही है, फिर ६ मूल आपके यहाँ कौन से शास्त्र में हैं ?" पंडित जी ने तपाक से उत्तर दे दिया कि—"अश्विनी, मघा, अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती मूल हैं" मैंने कहा—'पंडित जी यह तो गन्डान्त हैं, मूल थोड़े हैं । अगर हम यह भी मान लें कि आप 'गन्डान्त' को भी मूल ही कहते हैं तो भी इन नक्षत्रों के आदि या अन्त में केवल ४८ मिनट ही गन्डान्त होते हैं । पूरे नक्षत्र में २४ घन्टे जब भी जन्म हो मूल कैसे हुए ?" अब तो पंडित जी सकपकाये, बोले 'कोई अपना पेट किसी तरह भर रहा है, दूसरे की जीविका पर आपको क्या करना है ?' हाय रे जमाना ! हाय रे कलियुग ! उदर निमित्तं बहुकृत वेषः' जब धर्म के ठेकेदारों की यह दशा है तो औरों की क्या कहें ? यहाँ तो इनकी ठगी चल भी जायेगी, लेकिन ऊपर इस ठगी का वे क्या उत्तर देंगे ?

छोड़िये यह लोगों के रोजी का विषय है ।

अस्तु मूल नक्षत्र ही मूल है । अभुक्त मूल ज्येष्ठा और मूल के संधिकाल को कहते हैं इसको मूल से भी अशुभ माना गया है जिसमें शान्ति कर लेने के उपरान्त ही शिशु का दर्शन करना शुभ है । अभुक्त मूल कितना समय माना जाय, इस पर मत इस प्रकार हैं:—

(१) वशिष्ठ—ज्येष्ठा के अन्त की १ मूल की आदि १ कुल दो घड़ी ।

(२) लल्ल—उपरोक्त ।

(३) वृहस्पति—आधा घड़ी ज्येष्ठा के अन्त और आधी मूल के आरम्भ की, कुल १ घड़ी ।

(४) नारद—ज्येष्ठा अन्त की २ मूल की आदि २ कुल चार घड़ी ।

समीक्षा के तौर पर दो घड़ी 'अभुक्त मूल' मान लेना ठीक होगा । इनकी शान्ति आवश्यक है ।

मूल नक्षत्र में जन्म होने पर मूल शुभ हैं या अशुभ और क्या फल करेंगे, इस पर शास्त्रों में बहुत से मत और विचार हैं, जिनमें मुख्य-मुख्य मत यह रहे—

(१) श्रीपति, वशिष्ठ, कात्यायन, गर्ग प्रभृति के मत से नक्षत्र के चरणानुसार फल—

प्रथम चरण में जन्म पिता को अशुभ।

दूसरे में---माता को अशुभ।

तीसरे में—धन तथा भाइयों (गृह, भूमि, धन, अन्न, पशु, वस्त्र आदि सब धन कहे जाते हैं) को अशुभ।

चौथे में—कुल के लिए अशुभ लेकिन बड़ा यशस्वी और सम्पन्न शुभ है।

(२) दिवा, सायं, रात, प्रात: जिस समय जन्म हो क्रम से पिता, माता, पशु, तथा मित्रों के लिए अनिष्टकर होगा।

(३) मूल निवास के अनुसार जन्म जिस सौर मास में हो उसके अनुसार-

(अ) आषाढ़, भाद्र, आश्विन, माघ में जन्म—मूल का निवास स्वर्ग में, शुभ हैं।

(आ) कार्तिक, चैत, पौष, श्रावण में—पृथ्वी के मूल का वास, यह अशुभ हैं।

(इ) फाल्गुन, मार्गशीर्ष, वैशाख, ज्येष्ठ—में पाताल के मूलशुभ हैं।

(४) मूल वृक्ष की कल्पना से फल विचार।

इस पद्धति से विचार के लिये पहले बतलायी रीति से भयात भभोग के द्वारा स्पष्ट भुक्त घटी बना लें तब फल देखें। इस पद्धति मेंअनेक उपमत हैं—

(अ) स्पष्ट भुक्त घटी	मूलबास	फल
७ तक	—मूल (जड़) में	--स्वामी नाश
१५ तक	—स्तम्भ ,,	—हानि
२५ तक	—त्वचा ,,	—सहज नाश
३६ तक	—शाखा ,,	—माता को अशुभ
४८ तक	—पत्र ,,	—कलावान
५३ तक	—पुष्प ,,	—राजप्रिय
५७ तक	—फल ,,	—राज्यलाभ
६० तक	—शिखा ,,	--अल्पायु।
(अ) ४ तक	—जड में	—पूर्वोक्त फल।
११ तक	—स्तभ ,,	— ,,
२१ तक	—त्वचा ,,	— ,,
२९ तक	—शाखा	— ,,
३८ तक	—पत्र ,,	— ,,

४३ तक—पुष्प „ — „
४९ तक—फल „ — „
६० तक—शिखा „ — „

(इ) ८ तक—जड़ —मूलनाश
१४ तक—स्तम्भ —धनहानि
२३ तक—त्वचा —बन्धुनाश
३४ तक—शाखा —मातृनाश
४१ तक—पत्र —कुटुम्ब हानि
४८ तक—पुष्प —राज्यमान्य
५३ तक—फल —राज्यलाभ
६० तक—शिखा —अल्पायु

(५) मूल नक्षत्र की एक पुरुषाकार कल्पना कर। इसमें भी पहले स्पष्ट भुक्त घटी की आवश्यकता है—

इस प्रणाली से विचार में भी अनेक उपमत हैं—

	घटी	तक	स्थान	फल
(i)	५	तक	शिर	राजा हो
	१२	तक	मुख	पिता को अशुभ
	१६	तक	कंधा	बलवान हो
	२४	तक	बाहु	बलवान हो
	२७	तक	हाथों में	हत्यारा हो
	३६	तक	हृदय में	मंत्री हो
	३८	तक	नाभि में	ब्रह्मवेत्ता
	४८	तक	गुह्य में	अतिकामुक
	५४	तक	जांघ में	विद्वान
	६०	तक	पैरों में	अल्पायु
(ii)	६	तक	शिर	चोट भय
	१२	तक	मुख	शुभ
	१८	तक	द० बाहु	भ्रातृनाश
	२४	तक	वा० बाहु	मातुलनाश
	३०	तक	हृदय	शुभ

३६	तक	नाभि	स्वामिनाश
४२	तक	दा० हाथ	माता को अशुभ
४८	तक	बा० हाथ	,,
५४	तक	गुह्य	चोर हो
६०	तक	पाद	धनहानि ।

(iii) ५	तक	शिर	कुलघाती
१०	तक	वदन	फल ज्ञात नहीं
१४	तक	द०स्कंध	,,
१८	तक	बा०स्कंध	,,
२६	तक	बाहु	,,
२८	तक	हस्ते	,,
३६	तक	हृदय	,,
३८	तक	नाभि	,,
४८	तक	गुह्य	,,
५४	तक	जानु	,,
६०	तक	पाद	,,

(iv) ४ घटी तक पिता नाश, इसके बाद ९ तक धनक्षय, १४ तक भ्रातृनाश, २४ तक मातृनाश, ३३ तक स्वयं नाश, ३९ तक राज मान्य, ४४ तक राज्य लाभ, ५१ तक अल्पायु, और ६० तक दरिद्र हो ।

इस प्रकार मूल नक्षत्र के जन्म के बारे में ग्रंथों में पर्य्याप्त सामग्री है। जिससे विविध मत-मतान्तरों को लेकर सार स्वरूप शुभ या अशुभ फलों की कल्पना करनी चाहिए। मूल विचार का संक्षिप्त सार यह है कि यदि मूल के १, २, ३ चरणों में जन्म हो, तथा जन्म सौर मास कार्तिक, चैत्र, श्रावण और पौष में किसी में हो तो पृथ्वी स्थित मूलदोष के कारण सूक्ष्म विचार की आवश्यकता है। अन्यथा मूल निवास स्वर्ग, पाताल का हो या चतुर्थ चरण में जन्म हो तो भय की कोई बात नहीं है। शास्त्रकारों ने जहाँ 'नाश' पितानाश, मातानाश शब्दों का प्रयोग किया है उसके यह अर्थ नहीं कि उनका नाश ही हो, यह केवल उनके लिये प्रतिकूल है ऐसा संकेतमात्र है। इसका कितना प्रभाव होगा यह ग्रहों की अन्य स्थितियों पर भी निर्भर है।

मूलदोष–परिहार

जैसा कि ग्रंथों में ही उसके परिहार में कहा गया है कि जिसके लिए मूल अशुभ हों, उसके लिये यदि कुण्डली में अन्य ग्रहस्थिति शुभ हो तो मूल अशुभ नहीं करते और मूल दोष का परिहार हो जाता है। एक उदाहरण लीजिये, किसी के मूल पिता के लिये अशुभ हैं, लेकिन जन्मकुण्डली के और ग्रहयोग पिता का सुख अच्छा बतलाते हैं, तो मूल का कुफल नहीं होगा।

मूल सार्पोद्भवो दोषो न स्यात्पित्रादयोग्रहा:।
उच्चस्थान स्थिता सौम्ये दृष्टाश्च बलिनो यदि।,

मूलदोष परिहार का एक वाक्य और भी मिलता है। मूल के प्रथम चरण में रात को, द्वितीय चरण में दिन का जन्म हो तो दोष नहीं रहता—

मूलाद्यपादे निशी नैव तातं,
रिष्टं द्वितीयेऽहनि नैव मातु:॥

मूल, अश्लेषा तथा गण्डान्त में यह भी विचारणीय है कि चन्द्रमा पापयुक्त है या शुभ है और बलवान है या निर्बल ? शुभयुक्त, बलिष्ट होने पर अशुभ फल नहीं होगा, दुर्बल तथा पापग्रस्त होने से अशुभ करेगा।

वास्तविक तत्व यह है कि केवल मूल के फलों से ही किसी शुभ या अशुभ फलों का निश्चय नहीं हो सकता। यह तो जन्मकुण्डली के अन्यान्य योगायोगों पर ध्यान देते हुए परस्पर सामंजस्य से देखने का विषय है। ज्योतिष में फल कथन के अनेक सिद्धान्त हैं, सबका निष्कर्ष लेकर ही किसी निश्चय पर पहुंचा जा सकता है।

श्वसुर को भी अशुभ

शास्त्रों में कहा गया है कि मूल में जन्मे बालक तथा कन्या श्वसुर के लिये भी प्रतिकूल होते हैं, कितने और किस प्रकार से प्रतिकूल होंगे इसका विचार पूर्वोक्त प्रकार से ही करना चाहिए।

मूल के प्रति कुछ विशेष

कूर्मयामल में मूल के प्रति अति सूक्ष्म विचार किया गया है, तदनुसार मूल की (स्पष्ट भुक्त घटी से) आरंभ से ४ तक, ११, १२, १५, १६, १७, १८, ३५, ३६, ४१, ४२, ५५, ५६ वीं घड़ी में जन्म अशुभ शेष में शुभ माना है।

जन्म के समय मूल नक्षत्र हो साथ ही शनि या सोमवार और तृतीया, षष्ठी, दशमी या शुक्लपक्ष की चतुर्दशी हो तो ऐसे मूल कुलक्षय कारक होते हैं।

कहा गया है कि मूल में जन्मे बालक को २७ दिन तक, ६ मास या ६ वर्ष तक न देखे। ऐसा विशेष स्थितियों में है। प्रायः ११ दिन के बाद शान्ति के उपरान्त देखने में कोई दोष नहीं है यह व्यवहारिक मत है, यह भी उस स्थिति में जब मूल प्रतिकूल हैं ऐसा सिद्ध हो। अन्यथा जन्म से ही दर्शन में कोई अनिष्ट नहीं।

मूल का खगोलीय पक्ष

ऊपर हमने मूल के बारे में फलित पक्ष को दिया, अब आधुनिक विज्ञान एवं खगोल भी इस विषय पर उपस्थित करते हैं जो कम रोचक नहीं है। आकाश में यह नक्षत्र वृश्चिक राशि के अन्त और धनुराशि के आरम्भ में स्थित है, जो स्थिर सम्पात से २४२ अंश पर खमध्य रेखा से ३१ अंश दक्षिण में है। यह अनुमानतः पृथ्वी से १२६६०००००,००००,००० मील दूर है, तथा इसका व्यास लगभग १८५८००००० मील का है। गर्मियों के दिनों में सूर्यास्त के बाद रात्रि के पूर्वान्ह में यह आकाश में दक्षिण की ओर स्पष्ट दिखलाई देता है। वृश्चिक राशि के तारा समूह से जो बिच्छू की आकृति बनती है, उस बिच्छू के ठीक पूंछ में यह तेज तारा है, इसके साथ ११ अन्य छोटे तारे हैं। आधुनिक वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि मूल का यह नक्षत्र मण्डल विषाक्त है। भारतीय साहित्य में मूल नक्षत्र को मृत्यु के देवता यम के सहचर निऋृति (काल) का लोक माना गया है। दूसरे रूप में वृश्चिक राशि बनाने वाले तारा समूह (बिच्छू) के पूंछ पर यह ठीक उस जगह है, जहाँ पर बिच्छू के डंक में बिष होता है, साहित्य की दृष्टि से यह इस विषाक्त नक्षत्र को बिच्छू के डंक में स्थान देना एक अनोखी कल्पना है, यदि आप गर्मियों में मूल नक्षत्र को आकाश में देखें तो लगेगा कि सचमुच बिच्छू का डंक जहर की ठोकर मारने को तैयार है।

प्राचीन वेदों में मूल का वर्णन

मूल की चर्चा केवल फलित ज्योतिष में ही नहीं वेदों में भी पायी जाती है। अथर्व वेद में मूल नक्षत्र को अशुभ, अरिष्टकर कहा गया है।

"अरिष्ट मूलम्"

तैत्तरीय श्रुति में मूलनक्षत्र के चार भाग हैं—

(i) विचृतौ—शुभ (पितरों का भाग)।

(ii) मूल बर्हणी—अशुभ (काल का भाग)।

(iii) मूल I—अशुभ (काल भाग)।

(iiii) मूल II—शुभ (प्रजापति का भाग)।

इसके अनुसार मूल का मध्यभाग अशुभ है। तैत्तरीय ब्राह्मण आदि में भी मूल की चर्चा है।

अश्लेषा

मल की तरह अश्लेषा का जन्म भी शुभ नहीं माना जाता है। इसके विचार की प्रणालियां यह हैं—

(१) स्वर्ग, पाताल भूलोक गत मूल के तरह अश्लेषा का भी विचार है।

(२) मूल की तरह अश्लेषा की भी स्पष्ट भुक्तघटी बनाकर फल विचार किया जाता है—

५ घटी तक—शिर में—राज्य प्राप्तिकारक।
१२ ,,—मुख में—पिता को अशुभ।
१४ ,,—आंखों में—माता को अशुभ।
१७ ,,—ग्रीवा में—धूर्त, ठग।
२१ ,,—स्कंध में—गुरु का भक्त हो।
२९ ,,—हाथों में—बलवान हो।
४० ,,—हृदय में—आत्मघाती हो।
४६ ,,—नाभि में—उत्तम स्त्री सुख, भ्रम वाला।
५५ ,,—गुदा में—तपस्वी।
६० ,,—पैरों में—धन हानि।

(३) रुद्रयामल तन्त्र में 'अश्लेषा का वृक्ष' कल्पना कर फल का विचार है इसमें भी पहले स्पष्ट भुक्त घटी बनानी होगी।

स्थान	घटी तक	फल
फल	१० ,,	धन लाभ
पुष्प	१५ ,,	राज्य लाभ
दल	२४ ,,	भय।
शाखा	३१ ,,	हानि।

त्वचा	४४ ,,	माता को अशुभ
लता	५६ ,,	पिता को अशुभ
स्कंध	६० ,,	स्वयं को अशुभ

(४) अश्लेषा का प्रथम चरण—राज्य लाभ शुभ ।
,, द्वितीय ,, —धनक्षय ।
,, तीसरा ,, —माता को अशुभ ।
,, चौथा ,, —पिता को अशुभ ।

इसमें मूल का विपरीत फल है ।

(५) निबन्ध चूड़ामणि में चरण का फल इस प्रकार है—
प्रथम चरण—राज्यलाभ ।
द्वितीय चरण—सुख ।
तृतीय चरण—बन्धुओं को अशुभ ।
चतुर्थ चरण—स्वयं को अशुभ ।

(६) कूर्मयामलानुसार—६०, ५९, ५८, ५७, ५०, ४९, ४६, ४५, ४४, ४३, २६, २५, २०, १९, ६, ५ अश्लेषा के इन घटियों में जन्म अशुभ, शेष में शुभ माना है ।

इस प्रकार तारतम्य से फल निश्चय करना चाहिये ।

सास को अशुभ

अश्लेषा में विशेष विचार यह भी है कि पूर्वोक्त प्रकार से अश्लेषा के दोषयुक्त भाग में जन्म हो तो बालक तथा बालिका सास को भी अशुभ होते हैं । मोटे तौर पर शास्त्रकारों ने अश्लेषा के १ प्रथम चरण को दोष रहित तथा शेष तीन चरणों को दोषी माना है ।

ज्येष्ठा में जन्म

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त में अभुक्तमूल तो है ही, साथ ही ज्येष्ठा के अन्य चरणों में भी जन्म का फल विचार है—

(१) प्रथम चरण—घर के मूल पुरुष को अशुभ ।
द्वितीय चरण—सहोदर को अशुभ ।
तृतीय चरण—धनहानि तथा माता को अशुभ ।
चतुर्थ चरण—स्वयं को अशुभ ।

(२) ६ घड़ी—नानी को अशुभ।
१२ घड़ी—नाना को अशुभ।
१८ घड़ी—मामा को अशुभ।
२४ घड़ी—माता को अशुभ।
३० घड़ी—स्वयं अशुभ।
३६ घड़ी—गोत्र वालों को अशुभ।
४२ घड़ी—माता तथा पिता के कुल को।
४८ घड़ी—ज्येष्ठ सहोदर को अशुभ।
५४ घड़ी—श्वसुर को अशुभ।
६० घड़ी—सर्वनाशकारक।

(३) ज्येष्ठा में उत्पन्न बालिका पति के बड़े भाई को तथा बालक पत्नी के बड़े भाई को अशुभ होता है।

ज्येष्ठा तथा मूल में नारद जी का विशेष मत

नारद जी के मतानुसार—

(अ) ज्येष्ठा के अन्त्यचरण का जन्मे केबल बालक ज्येष्ठ का नाश करता है। लड़की का जन्म हो तो ज्येष्ठ का नाश नहीं करती।

(आ) मूल में उत्पन्न बालिका माता-पिता को अशुभ नहीं होती।

(इ) ज्येष्ठा में उत्पन्न बालक-बालिका दिन में हो तो पितृकुल को, रात्रि का जन्म हो तो मातृ कुल को अशुभ होते हैं।

(ई) ज्येष्ठा के अन्त्यपाद में जन्म पिता को अशुभ होता है।

विशाखा

विशाखा नक्षत्र कन्या के हो तो देवरों के प्रति तथा लड़के के हो तो साले (स्त्री के छोटे भाई) को अशुभ माने जाते हैं। इसमें विचार यह है कि विशाखा के १, २, ३, चरण (तुलाराशि) हो तो दोष नहीं होता, चतुर्थ चरण में ही दोष माना गया है।

'विशाखा तूलया युक्ता देवरस्य शुभावहा:'

एकनक्षत्र

यदि पुत्र का या कन्या का ऐसे नक्षत्र में जन्म हो जो नक्षत्र उसके पिता, माता, भाई, बहिन, दादा, दादी का हो तो यह भी शुभ नहीं माना जाता है,

कहा गया है कि पहले के लिये (अर्थात् जिसका वह नक्षत्र पहले से हो) अनिष्ट करता है, इसकी भी शान्ति का विधान है।

कृष्ण-चतुर्दशी

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तिथि में जन्म भी शास्त्रकारों ने शुभ नहीं माना है। स्पष्ट फल जानने के लिये चतुर्दशी की भोग्य घटियों का चतुर्दशी के सर्व-भोग्य घटियों द्वारा भयात-भभोग की तरह स्पष्ट भुक्तघटी बना लें। यदि वह

१० घटी तक हो तो शुभ।

२० " तक हो तो पिता को अनिष्ट।
३० " तक हो तो माता को अनिष्ट।
४० " तक हो तो मातुल को अशुभ।
५० " तक हो तो वंश को अशुभ।
६० " तक हो धनहानि, संतान हानि।

इसकी भी शान्ति का विधान शास्त्रों में है।

अमावास्या

अमावास्या का जन्म मूल के समान ही अशुभ माना गया है, शास्त्रकारों ने कहा है कि जिस घर में अमावास्या में जन्म हो वह घर श्रीहीन हो जाता है, गर्ग ने तो यहां तक कहा है कि अपने यहां अमावास्या को पशु-पक्षी भी जन्म लें तो उसका स्वामी उन पशु-पक्षियों का त्याग कर दे।

शास्त्रों में इसकी भी शान्ति का विधान है।

जुड़वाँ बच्चे

ज्योतिष तथा धर्मशास्त्रों में यमल (जुड़वां) बच्चों का जन्म भी शुभ नहीं माना गया है। दोनों समान लिंगी हों तो स्वयं शिशुओं को तथा विपरीत लिंगी हो तो पिता को अनिष्ट समझा गया है इसमें भी शान्ति का विधान है।

त्रीतर

तीन कन्या होने के बाद पुत्र हो, या तीन पुत्रों के बाद चौथा गर्भ कन्या हो तो 'त्रीतर' कहते हैं। शास्त्रकारों के मतानुसार यह धन हानि, दुःख तथा अपने से ज्येष्ठों को अनिष्टकर माना है और शान्ति का विधान कहा है।

वैधृति–व्यतीपात और संक्रान्ति

शास्त्रकार शौनक ने व्यतीपात तथा वैधृति योग और संक्रान्ति के दिन जन्म को भी दारिद्रकारक माना है तथा शान्ति करने का निर्देश दिया है।

विषकन्या

इन दोषों के अलावा ज्योतिषशास्त्र में विषकन्या की भी चर्चा है। विषकन्याओं की चर्चा सर्वविदित है, विषकन्या ऐसी कन्या को कहा जाता है। जिसकी योनि में गर्मी जैसे भयानक संक्रामक रोगों के विषाणु मौजूद हों, ऐसी कन्या के संसर्ग में जो पुरुष आयगा वह रोगी होकरकालकवलित हो जायगा- ऐसी शास्त्रीय मर्यादा है, और वयोवृद्धों के अनुसार यह बात अनुभव सिद्ध भी है। वृद्ध लोग ऐसे अनेकों उदाहरण देते हैं। अतः 'विषकन्या' से विवाह महा-वैधव्य सूचक बड़ा अनिष्ट माना गया है।

यह तो ज्योतिषशास्त्र की चर्चा है, ज्योतिष शास्त्र के बाहर योरोप आदि देशों में कूटनीतिक विषकन्याओं की चर्चा मिलती है। ये राजनीतिक विष-कन्यायें जन्मजात न होकर विषैली औषधियों का प्रयोग कराकर तैयार की जाती हैं। रूपवती अनिन्द्य सुन्दरियों को मनोवाञ्छित प्रचुर धन देकर इस कार्य के लिये चुना जाता है, विषैली औषधियों के प्रयोग से जब वे विषकन्याएं बन जाती हैं तब छल-छन्द से शत्रुपक्ष में जाकर शत्रुपक्ष के प्रमुख एवं विशिष्ट व्यक्तियों को अपने रूपजाल में फंसाकर उनमें अपने संसर्ग द्वारा गलित रोग के के विषाणु पहुंचा देती हैं, ताकि वे अकाल ही में कालकवलित हो जांय।

हमारे ज्योपिषशास्त्रानुसार जन्मजात विषकन्याओं के लक्षण यह हैं—

(१) रविवार, द्वितीयातिथि, शतभिषा नक्षत्र में जन्म हो।
(२) मंगलवार, सप्तमी, अश्लेषा नक्षत्र में जन्म हो।
(३) शनिवार, द्वादशी, कृत्तिका या विशाखा नक्षत्र में जन्म हो।
(४) पंचमस्थान में शनि और सूर्य हों।
(५ लग्न में सूर्य और मंगल हों।

विष कन्या योग में जन्म लेने वाली कन्या विधवा, भाग्यहीन, सन्तान हीन होती है। यदि जन्म लग्न या चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह हो तो विष-कन्या का दोष मन्द हो जाता है। विषकन्या के विवाह के पूर्व शान्ति का विधान शास्त्रों में है।

वास्तव में विषकन्या का विचार यहाँ जन्म समय पर नहीं है, यह विचार विवाह एवं कुण्डली मिलान के समय रंडा, मृतप्रजा, कुलटा, विधवा, दुष्टा, असुता, दरिद्रा आदि कन्या के अन्य कुयोगों के साथ ही विचारना चाहिए, प्रसंग वश यह यहाँ दे दिया गया है।

ज्योतिषी को चाहिए कि वह सर्वप्रथम यह देख लें कि जातक का जन्म पूर्वोक्त किसी कुयोग में तो नहीं हुआ है? यदि कोई कुयोग हो तो जातक के पिता को उसकी शान्ति की सलाह धैर्यपर्वक देनी चाहिए। तब आगे अन्य फलादेश की बात आती है। यह हमने प्रसिद्ध विषयों की चर्चा की; देश भेद से ऐसे ही कुछ अन्य विचार भी हैं।

सहजनन

एक ही घर में यदि १० (दस) दिन के अन्दर दो स्त्रियों के बालक जन्में तो शुभ नहीं माना जाता। इसकी भी शान्ति का विधान है।

कार्तिक द्रष्ट्रा

तुला की संक्रान्ति से तेरह दिन तक कार्तिक द्रष्ट्रा कहे जाते हैं, कुछ आचार्यों के मत से कन्या के सूर्य में अन्तिम ६ दिन और तुला के सूर्य में आरम्भ के ७ दिन कार्तिक द्रष्ट्रा हैं लेकिन यह मत मान्य नहीं है, कार्तिक द्रष्ट्रा तुला संक्रान्ति से ही आरम्भ होते हैं। शास्त्रकारों ने इनमें जन्म का विचार तो किया ही है साथ ही इनमें शुभ काम भी निन्दित माने हैं। इनमें जन्म का फल इस प्रकार है—

पहला दिन—स्वयं को अनिष्ट।
दूसरा—पिता को।
तीसरा—माता को।
चौथा—वंश को।
पांचवाँ—भाई को।
छठा—गोत्र को।
सातवाँ—मामा को।
आठवाँ—सर्वनाश।
नवाँ—धननाश।
दसवाँ—स्वामीनाश।
ग्यारहवाँ—सास को अनिष्ट।
बाहरवाँ—श्वसुर को अनिष्ट।
तेरहवाँ—शुभ।

इनमें प्रथम चार स्वर्ग में, चार भूलोक में, ४ पाताल में माने गये हैं। भूलोक वाले मध्य के चारों (पांच से आठ तक) का फल अधिक अशुभ माना है। इसकी भी शान्ति का विधान है।

षट्वर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग, द्वादशवर्ग और षोडशवर्ग

बल-साधन

पिछले अभ्यासों में फलादेश कहने की रीति बतलाई जा चुकी है, जिससे यह विदित हो जाता है कि कौन ग्रह किस भाव (विषय) के बारे में अनुकूल (शुभ फलदायक) और किस भाव के बारे में प्रतिकूल (अशुभ फलदायक) है। इससे यह तो ज्ञान हो गया कि इस ग्रह का फल इस प्रकार है लेकिन उस ग्रह में उस अच्छे या बुरे फल देने की कितनी शक्ति है यह भी जानना आवश्यक है। ग्रह कितना ही अशुभ फल देने वाला हो यदि उसमें शक्ति नहीं है तो वह अशुभ नहीं कर सकेगा, इसी प्रकार बल न होने पर शुभफल भी प्राप्त न हो सकेगा। जैसे कोई शत्रु आपका कितना ही अनिष्ट चाहता हो यदि वह स्वयं जेल में बन्द है, स्वयं बीमार पड़ा है तो आपका क्या अनिष्ट कर सकता है। ऐसे ही आपका कोई कितना हो हितैषी क्यों न हो यदि वह स्वयं दुर्बल या दरिद्र है तो आपकी क्या सहायता कर पायेगा ? इसलिये ग्रहों का बल जानना अत्यावश्यक है।

सामान्यत: स्वक्षेत्री, उच्च या मित्र क्षेत्री ग्रह बली माना जाता है और नीच या शत्रुक्षेत्री निर्बल लेकिन यह एक स्थूल-विषय है। निश्चित रूप से बल जानने के लिये स्थान बल, उच्च बल, वर्गबल, युग्मायुग्मबल, केन्द्रादिबल, द्रेष्काणबल, दिग्बल, पक्षबल, कालबल, चेष्टाबल, निसर्गबल, दृष्टिबल, इत्यादि बलाबलों, का योग देखा जाता है। केशवी जातक प्रभृति ग्रंथों में इसका विस्तार से वर्णन है।

इस विभिन्न बलों में हम पहले 'वर्गबल' का विवरण दे रहे हैं। विभिन्न ग्रंथों में षट्वर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग, द्वादशवर्ग, चतुर्दशवर्ग, आदि की कल्पना की गयी है वृहत्पाराशर होराशास्त्र में इस पर विस्तार से चर्चा है। सम्प्रति 'दशवर्ग' और 'षट्वर्ग' का प्रचलन मुख्य है।

(अ) गृह, होरा, देष्काण, सप्तांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, त्रिशांश और षष्टांश यह दशवर्ग जातक में मान्य हैं।

(आ) ताजिक में गृह, होरा, द्रेष्काण, चतुर्थांश, पंचमांश, षष्टांश, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश, और द्वादशांश यह द्वादशवर्गी माने गये हैं।

(इ) गृह, होरा, देष्काण, चतुर्थांश, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडषांश, षष्ट्यंश के अलावा—विंशांश, चतुर्विशांश, सप्तविंशांश, खवेदांश, और अक्षवेदांश—वृहत्पाराशर में यह षोडशवर्ग कहे गये हैं।

इनके साधन के लिये सारिणी भी छपी मिलती हैं, जिससे शीघ्रता और सुविधा होती है। इनकी विधि इस प्रकार है—

(१) गृह—जो ग्रह या लग्न जिस राशि में हो उसी में रहता है, वही उसका गृह है।

(२) होरा—ग्रह या लग्न समराशि (२, ४, ६, ८, १०, १२,) में हो तो १५ अंश तक होने पर कर्क में १५ के बाद सिंह दिखलाया जायगा और विषम राशि में हो तो १५ अंश तक सिंह में १५ से ऊपर कर्क में होगा।

(३) देष्काण—ग्रह या लग्न १० अंश के भीतर हो तो अपने ही स्थान (राशि) पर रहेगा, १० से ऊपर २० अंश तक हो तो अपनी गृह की राशि से पांचवी पर और २० अंश से ऊपर हो तो अपनी राशि से नवीं राशि पर होगा।

(४) चतुर्थांश—ग्रह या लग्न ७।। साढ़े सात अंश तक हो तो अपने स्थान पर रहेगा, ७।३० से १५ तक अपने स्थान से चौथी राशि में, १५ से २२।३० तक अपने स्थान से सातवें स्थान (राशि) पर और २२।३० से ऊपर अपने स्थान से दशवीं राशि पर होगा।*

(५) पंचमांश—ग्रह या लग्न विषमराशि में हो तो ६ अंश के भीतर होने पर मेष में, १२ तक कुंभ में, १८ तक धन में, २४ तक मिथुन में, २४ से ऊपर तुला में होगा। समराशि में ६ अंश तक वृष में, १२ तक कन्या में, १८ तक मीन में, २४ तक मकर में और २४ के ऊपर वृश्चिक में होगा।

(६) षष्टांश—एक राशि में ६ का भाग देने से ५ अंश का एक खंड हुआ, ग्रह या लग्न समराशि में हो तो तुला से क्रमशः अर्थात् ५ अंश तक हो तो तुला में, १० तक वृश्चिक में, १५ तक धन में, २० तक मकर में, २५ तक

*** चतुर्थांश के स्वामी क्रमशः—सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन हैं।**

कुंभ में, ३० तक मीन में रहेगा। और विषम राशि में हो तो ५ अंक तक मेष में १० तक वृष में, १५ तक मिथुन में २० तक कर्क में, २५ तक सिंह में, २५ से ऊपर कन्या में रहेगा।

(७) सप्तमांश—एकराशि में ७ का भाग देने से ४ अंश १७ कला का एक खण्ड हुआ, इसी तरह ४।१७, ८।३४, १२।५१, १७।८, २१।२५, २५।४२, ३०।० के सात खण्ड हुये। ग्रह या लग्न विषम राशि में हो तो अपनी राशि से गिने-जितने खण्डों में हो अर्थात् ४।१७ तक हो तो उसी में रहेगा, ८।३४ तक उससे दूसरे में, इत्यादि। सम राशि में ग्रह या लग्न हो तो अपनी राशि से सातवीं राशि से गिनती होगी—४।१७ तक अपनी से सातवीं में, ८।३४ तक आठवीं में इत्यादि।

(८) अष्टमांश—इसमें ३।४५ अंश का एक भाग होगा। ग्रह या लग्न चरराशि (१, ४, ७, १०,) में हो तो मेष से, स्थिर में हो तो (२।५।८।११) धन से, द्विस्वभाव में हो तो (३।६।९।१२) सिंह से गिनती होती है। जैसे चरराशि में ३।४५ तक हो तो मेष, ७।३० तक वृष, ११।१५ तक मिथुन में इत्यादि।

(९) नवमांश—इसमें ३।२० का एक खण्ड होता है। ग्रह या लग्न—१, ५, ९, राशि में हो तो मेष से, २।६।१० में मकर से ३,७,११ में हो तो तुला से और ४।८।१२ में कर्क से गिनती होती है। जैसे ग्रह या लग्न कन्या के ३।२० तक हो तो मकर में, ६।४० तक कुंभ में इत्यादि।

(१०) दशमांश—एक खण्ड ३ अंश का हुआ। ग्रह या लग्न—मेष या तुला में हो तो मेष से, वृष या वृश्चिक में कुंभ से, मिथुन या धन में धन से, कर्क या मकर में तुला से, सिंह या कुंभ का सिंह से, कन्या या मीन का मिथुन से गिनती होती हैं। जैसे तुला में ३ अंश तक होने पर मेष में, ६ तक वृष में ९ तक मिथुन में इत्यादि *

(११) एकादशांश—इसमें एक खण्ड २।४३।३८ का हुआ। मेष, मीन कुंभ, मकर, धन, वृश्चिक, तुला, कन्या, सिंह, कर्क, और मिथुन, यह क्रमशः खण्ड हैं।

---

* वृहत्पाराशर होरा में दशमांश का दूसरा क्रम है, आगे सारिणी देखें। यह क्रम ताजिक का है।

ग्रह या लग्न ३ अंश ४३ कला ३८ विकला तक हो तो मेष में, ५।२७।१६ तक मीन में, ८।१०।५४ तक कुंभ में इत्यादि।

(१२) द्वादशांश—इसमें एक खण्ड ढाई अंश २।३० का है। २।३०, ५, ७।३०, १०, १२।३०, १५, १७।३०, २०, २२।३०, २५, २७।३०, ३० यह खण्ड हुए। ग्रह या लग्न की अपनी राशि से ही गिनती होती है, जैसे २।३० तक हो तो उसी में, ५ तक दूसरे में इत्यादि।

(१३) षोडशांश—एक खण्ड १।५२।३० का होता है। ग्रह या लग्न चरराशि में हो तो मेष से, स्थिर में सिंह से, द्विस्वभाव में धन से गिना जाता है। जैसे चरराशि कर्क में कोई ग्रह १।५२।३० तक हो तो मेष में, फिर वृष में इत्यादि।

(१४) त्रिशांश—ग्रह या लग्न विषम राशि में हो तो ५ अंश तक मेष में, १० तक कुंभ में, १८ तक धन में, २५ तक मिथुन में ३० तक तुला में रहता है। सम राशि में हो तो ५ तक वृष में, १२ तक कन्या में, २० तक मीन में, २५ तक मकर में और २५ से ऊपर वृश्चक में रहता है।

(१५) षष्ट्यंश—ग्रह या लग्न स्पष्ट की राशि को छोड़कर अंशादि शेष को दो से गुणाकर एक जोड़ दे, यह अपना षष्ट्यंश होगा। इस अंक में १२ का भाग देकर शेष जो मिले लग्न या ग्रह की अपनी राशि से उतनी संख्या तक गिनने पर जो राशि हो उसी में ग्रह अथवा लग्न होता है।*

इन दशवर्गों का प्रयोग जातक या ताजिक पद्धति के अनुसार करना चाहिए। इनमें भी षट्वर्ग या सप्तवर्ग का विचार मुख्य है। होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश यह षट्वर्ग है इसमें गृह जोड़ने से सप्तवर्ग होते हैं।

---

* यह क्रम 'फलित बिकास' (पं० रामयत्न ओझा कृत) के अनुसार है। बृहत्पाराशरी में षष्ट्यंश जानने का क्रम तो यही है, अर्थात् तदनुसार भी प्रत्येक खण्ड ३० कला का होता है तदनुसार सूर्य ४४वें खण्ड ही में रहेगा। लेकिन गणना का क्रम यह है कि जिस खण्ड में ग्रह हो, उसका आधा कर लें (ग्रह विषम खंड में हो तो इस आधे में एक और जोड़ दे) जो संख्या मिले ग्रह स्थित राशि से उतनी संख्या में ग्रह होगा। जैसे सूर्य ४४वें खण्ड में मीन राशि में है, ४४ का आधा २२, मीन से २२वीं धनु राशि का सूर्य हुआ।

एक उदाहरण

उदाहरण के लिये ५ अप्रैल १९६६ को २८/४१ इष्टकाल पर सूर्यस्पष्ट ११।२१।५३।२४ है। (श्री अन्तर्राष्ट्रीय आनन्द भास्कर पंचांग सम्बत् २०२३) इसके षट्वर्ग या दशवर्ग क्या होंगे ?

(१) सूर्य मीन का है अतः गृह में मीन का ही रहा।

(२) सम राशि में १५ अंश से ऊपर है, इसलिए सिंह का हुआ।

(३) बीस अंश से ऊपर है अतः अपनी राशि से (मीन से) नवां वृश्चिक में हुआ।

(४) १५ से २२/३० अंश के भीतर है, अतः अपनी राशि (मीन) से सातवें कन्या में हुआ।

(५) सम राशि में १८ से ऊपर २४ अंश के मध्य है अतः मकर में हुआ।

(६) समराशि में २० से २५ के मध्य है, कुंभ का हुआ।

(७) २१/५३ छठा भाग है, सूर्य सम राशि का है अतः अपनी राशि (मीन) से सातवीं कन्या से गिनने पर छठा कुंभ का हुआ।

(८) २१/५३ यह छठा भाग है मीन राशि द्विस्वभाव होने से सिंह से छठा गिना--मकर का हुआ।

(९) अंशादि २१/५३ सातवां खण्ड है, मीन का होने से कर्क से सातवां मकर का हुआ।

(१०) २१/० से २४ तक आठवां भाग हुआ, मीन का होने से मिथुन से आठवां मकर का हुआ।

(११) अंशादि २१।५३ नवें भाग में है। मेषादि से नवां भाग सिंह का हुआ।

(१२) २१/५३ नवां भाग हैं, मीन से नवां वृश्चिक का हुआ।

(१३) २१/५३ यह बारहवां भाग है, द्विस्वभाव मीन का होने से धन से बारहवां वृश्चिक का हुआ।

(१४) समराशि में २० से २५ क्षंश के मध्य होने से मकर का हुआ।

(१५) राशि छोड़कर अंशादि २१/५३/२४ × २ = ४३/४६/४८ + १ = ४४वें षष्टंश में सूर्य हुआ। इसमें १२ का भाग देकर शेष ८ बचा, मीन से आठवां तुला का सूर्य हुआ।

इसी तरह अन्य ग्रहों तथा लग्न के भी वर्ग निकालने चाहिए।

षट्वर्ग जानने के लिये सारिणी

होरा-सारिणी

राशि	मेष, मिथुन, सिंह तुला, धनु, कुंभ	बृष, कर्क, कन्या वृश्चिक, मकर, मीन	होरा पति
१५ अंश तक	५	४	देव
१५ से ३० तक	४	५	पितर

द्रेष्काण-सारिणी

स्वामी	अंश	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
नारद	१०	१	२	=	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अगस्त्य	२०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
दुर्वासा	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८

सप्तमांश-सारिणी

अंश	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	स्वामी
४/१७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	क्षार
८/३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	क्षीर
१२/५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	दधि
१७/८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	घी
२१/२५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	इक्षु
२५/५२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	मद्य
३०/०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	जल

नवमांश — सारिणी

अंश	मेष, सिंह, धन	वृष, क०, मकर	मि. तु कुम्भ,	कर्क, वृ० मीन	स्वामी
३/२०	१	१०	७	४	देव
६/४०	२	११	८	५	मनुष्य
१०/०	३	१२	९	६	राक्षस
१३/२०	४	१	१०	७	देव
१६/४०	५	२	११	८	मनुष्य
२०/०	६	३	१२	९	राक्षस
२३/२०	७	४	१	१०	देव
२६/४०	८	५	२	११	मनुष्य
३०/०	९	६	३	१२	राक्षस

द्वादशांश-सारिणी

स्वामी	अंश	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
गणेश	२/३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अश्विनी	५/०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
यम	७/३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
सर्प	१०/०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
गणेश	१२/३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
अश्विनी	१५/०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
यम	१७/३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
सर्प	२०/०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
गणेश	२२/३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
अश्वि	२५/०	१०	११	१२	१	२	ः	४	५	६	७	८	९
यम	२७/३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
सर्प	३०/०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

त्रिशांश-सारिणी

विषमे			समे		
स्वामी	अंश	मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ,	स्वामी	अंश	वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन
अग्नि	५	१	मेघ	५	२
वायु	१०	११	कुबेर	१२	६
इन्द्र	१८	९	इन्द्र	२०	१२
कुवेर	२५	३	वायु	२५	१०
मेघ	३०	७	अग्नि	३०	८

वृहत्पाराशर होराशास्त्रानुसार दशमांश

विषम राशि में स्वराशि से और समराशि में अपनी राशि की नवीं राशि से गणना है—

'दिगंशयाततश्चौजे युग्मेतन्नवमे भवेत्'

स्वामी समराशि में	स्वामी विषम में	अंश	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
अनन्त	इन्द्र	३	१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८
ब्रह्मा	अग्नि	६	२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९
ईशान	यम	९	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०
कुबेर	राक्षस	१२	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११
वायु	वरुण	१५	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२
वरुण	वायु	१८	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१
राक्षस	कुबेर	२१	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२
यम	ईश	२४	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३
अग्नि	ब्रह्मा	२७	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४
इन्द्र	अनन्त	३०	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५

दशमांशे महत्फलम्' उच्च सम्मान का विचार दशमांश से करे।

षोडशांश सारिणी

अंशादि	स्वामी (समे विषमे)	मेष, कर्क तुला, मकर	वृष, सिंह वृश्चिक, कुंभ	मिथुन, कन्या धनु, मीन
१/५२/३०	सूर्य/ब्रह्मा	१	५	९
३/४५/ ०	हर/विष्णु	२	६	१०
५/३७/३०	विष्णु/हर	३	७	११
७/३०/ ०	ब्रह्मा/सूर्य	४	८	१२
९/२२/३०	सूर्य/ब्रह्मा	५	९	१
११/१५/ ०	हर/विष्णु	६	१०	२
१३/ ७/३०	विष्णु/हर	७	११	३
१५/ ०/ ०	ब्रह्मा/सूर्य	८	१२	४
१६/५२/३०	सूर्य/ब्रह्मा	९	१	५
१८/४५/ ०	हर/विष्णु	१०	२	६
२०/३७/३०	विष्णु/हर	११	३	७
२२/३०/ ०	ब्रह्मा/सूर्य	१२	४	८
२४/२२/३०	सूर्य/ब्रह्मा	१	५	९
२६/१५/ ०	हर/विष्णु	२	६	१०
२८/ ७/३०	विष्णु/हर	३	७	११
३०/ ०/०	ब्रह्मा/सूर्य	४	८	१२

षोडशांश से वाहनों के सुखा-सुख का विचार होता है—
'सुखाऽसुखानां विज्ञानं वाहनानां तथैवच'

विंशांश-सारिणी

स्वामी विषमे	स्वामी समे	मेष, कर्क तुला, मकर	वृष सिंह वृश्चिक कुंभ	मिथुन कन्या धनु, मीन	अंशादि
काली	दया	१	९	५	१/३०
गौरी	मेधा	२	१०	६	३/ ०
जया	छिन्नशीर्षा	३	११	७	४/३०
लक्ष्मी	पिशाचिनी	४	१२	८	६/ ०
विजया	धूमावती	५	१	९	७/३०
विमला	मातंगी	६	२	१०	९/ ०
सती	वाला	७	३	११	१०/३०
तारा	भद्रा	८	४	१२	१२/०
ज्वालामुखी	अरुणा	९	५	१	१३/३०
श्वेता	अनला	१०	६	२	१५/ ०
ललिता	पिंगला	११	७	३	१६/३०
बगला	छुछुका	१२	८	४	१८/ ०
प्रत्यंगिरा	घोरा	१	९	५	१९/३०
शची	बाराही.	२	१०	६	२१/ ०
रौद्री	वैष्णवी	३	११	७	२२/३०
भवानी	सिता	४	१२	८	२४/ ०
वरदा	भुवनेश्वरी	५	१	९	२५/३०
जया	भैरवी	६	२	१०	२७/ ०
त्रिपुरा	मगला	७	३	११	२८/३०
सुमुखी	अपराजिता	८	४	१२	३०/ ०

'उपासनायां विज्ञानं साध्यं विंशति भागके'

अर्थात् उपासना का ज्ञान विंशांश से करे।

चतुर्विंशांश (सिद्धांश) सारिणी

अंशादि	स्वामी विषम राशि में	स्वामी सम राशि में	विषम राशि	समराशि
१/१५	स्कंद	भीम	५	४
२/३०	पशुधर	मदन	६	५
३/४५	अनल	गोविन्द	७	६
५/ ०	विश्वकर्मा	वृषध्वज	८	७
६/१५	भग	अन्तक	९	८
७/३०	मित्र	मय	१०	९
८/४५	मय	मित्र	११	१०
१०/ ०	अन्तक	भग	१२	११
११/१५	वृषध्वज	विश्वकर्मा	१	१२
१२/३०	गोविन्द	अनल	२	१
१३/४५	मदन	पशुधर	३	२
१५/ ०	भीम	स्कंद	४	३
१६/१५	स्कंद	भीम	५	४
१७/३०	पशुधर	मदन	६	५
१८/४५	अनल	गोविन्द	७	६
२०/ ०	विश्वकर्मा	वृषध्वज	८	७
२१/१५	भग	अन्तक	९	८
२२/३०	मित्र	मय	१०	९
२३/४५	मय	मित्र	११	१०
२५/ ०	अन्तक	भग	१२	११
२६/१५	वृषध्वज	विश्वकर्मा	१	१२
२७/३०	गोविन्द	अनल	२	१
२८/४५	मदन	पशुधर	३	२
३०/ ०	भीम	स्कंद	४	३

'विद्याया वेद बाह्यंशे' चतुर्विशांश से विद्या का विचार करें ।

सप्तविंशाँश (भाँश)

सप्तविंशांश में—१/६/४०, २/१३/२०, ३/२०/०, ४/२६/४० इत्यादि २७ भाग प्रत्येक राशि में होते हैं। प्रत्येक भाग के सभी राशियों में अश्विनी, यम, अग्नि आदि नक्षत्रों के स्वामी ही क्रमशः २७ अंशों के स्वामी होते हैं। गणना—

मेष, सिंह, धनु में—मेष से,

वृष, कन्या, मकर में—मकर से

मिथुन, तुला, कुम्भ में—तुला से,

कर्क, वृश्चिक, मीन में—मीन से गिनती होती है।

उदाहरण-सूर्यस्पष्ट ०/१५/८/० है, सप्तविंशाश में क्या स्थिति होगी ?

अंश १४/२६/४० से १५/३३/२० तक १४ वां भाग है, अतः १४ वें भाग का स्वामी त्वष्ट्रा हुए। मेष राशि में मेष ही से गिनना है अतः मेष से १४ वां—सप्तविंशाश में सूर्य २ वृष का हुआ।

"भांशे चैव बलाबलं" सप्तविंशांश से ग्रहों के बलाबल का विचार ही मुख्य है।

खवेदाँश

खवेदांश में—०/४५, १/३०, २/१५, इत्यादि प्रत्येक राशि में ४० खण्ड होते हैं।

इन अंशों के स्वामी प्रत्येक राशि में क्रमशः—विष्णु, चन्द्र, मरीचि, त्वष्ट्रा, धाता, शिव, रवि, यम, यक्षेश, गन्धर्व, काल, वरुण (पुनः विष्णु आदि क्रमशः, पुनः इसी प्रकार) क्रमशः स्वामी होते हैं।

गणना—(विषम) राशियों में मेष से और सम राशियों में तुला से होती है।

उदाहरण—सूर्यस्पष्ट ०/१५/८/० खवेदांश में क्या स्थिति होगी ?

०/४५, अंश के क्रम से १५/० से १५/४५ तक तक २१वां खण्ड, मेष से गणना करने पर २१वां धनुराशि में सूर्य हुआ, इस खण्ड के स्वामी यक्षेश हैं।

"खवेदांशे शुभाऽशुभं" इससे प्रत्येक भाव का शुभा शुभ विचार होता है।

अक्षवेदांश

अक्षवेदांश—में ०/४० अर्थात् ४० कला के प्रत्येक राशि में ४५ भाग होते हैं। चरराशियों में मेष से, स्थिर राशियों में सिंह से, द्विस्वभाव राशियों में धनु से गणना होती है।

चरराशि में—ब्रह्मा, शिव, विष्णु। स्थिर राशि में—शिव, विष्णु ब्रह्मा। और द्विस्वभाव में—विष्णु, ब्रह्मा, शंकर (पुनः पुनः) क्रमशः स्वामी होते हैं।

उदाहरण—सूर्य ०/१५/८/० अक्षवेदांश में किस राशि का होगा? क्योंकि ४० कला प्रतिखंड के हिसाब से १४/४० से १५/२० तक २३वां खण्ड है, चर राशि में मेष से गिनने पर कुंभ ११में सूर्य हुआ। इस खंड के स्वामी शिव हैं।

इस अक्षवेदांश से सभी भावों के बलाबल का विचार होता है।

षष्टंश के स्वामी

षष्टंशों के क्रमशः निम्न स्वामी हैं। विषम राशियों में क्रमशः और सम राशियों में विपरीत क्रम से गणना होती है—

घोर1, राक्षस2, देवता3, कुबेर4 यक्ष5, किन्नर6, भष्ट्र7, कुलघ्न8, गरल9, अग्नि10, माया11, पुरीष12, वरुण13, वायु14, काल15, सर्प16 अमृत17, चन्द्र18, पृथ्वी19, कोमल20, हेरम्ब21 ब्रह्मा22, विष्णु23, शिव24, देव25, आर्द्रा26, कलिनाश27, क्षीतीश28, कमलाकर29, गुलिक30, मृत्यु31, काल32, दावाग्नि33, घोर34, यम35, कण्टक36, सुधा37, अमृत38, पूर्णचन्द्र39, विषदग्ध40, कुलनाश41, वंशक्षय42, उत्पात43, कालरूप44, सोम्य45, कोमल46, शीतल47, द्रष्टाकराल48, इन्दुमुख49, प्रवीण50, काल51, दण्डायुध52, निर्मल53, सौम्य54, क्रूर55, अतिशीतल56, सुधा57, पयोधीश58, भ्रमण59, और इन्दुरेखा60,

प्रत्येक खण्ड तीस कला का होता है।

षष्टंश से भी प्रत्येक भाव के बलाबल का विचार होता है। इसके अलावा ग्रह और लग्न जिस अंश मे स्थित हों उस अंश के नामानुसार फल देते हैं।

नाड़ी ग्रंथोक्त १५० अंश

नाड़ी ग्रंथों की चर्चा से प्रायः पाठक विदित होंगे। दक्षिण भारत में इन ग्रन्थों का विशेष प्रचलन है। यह भृगुसंहिता सरीखे ग्रंथ हैं, जिसमें जन्मपत्र

के द्वारा अद्भुत एवं चमत्कारिक फलादेश करने की विधि है और इष्टकाल शोधन में भी इससे बड़ी सहायता मिलती है। वस्तुतः आज भी कुछ लोगों के पास ऐसे ग्रंथ हैं, किन्तु वे इस विद्या को गुप्त ही रखना चाहते हैं, और अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए छिपाये हुए हैं। कुछ लोग नाड़ी ग्रंथों के द्वारा ही 'भृगुसंहिता' के नाम से रुपया कमा रहे हैं, कुछ प्रकाशकों ने भृगुसंहिता के नाम पर मिथ्या साहित्य भी प्रकाशित किया है और कुछेक कर्णपिशाची (भूतसिद्धि) के घृणित साधना के द्वारा भी भूत कालीन बातें बतलाकर झूठ-मूठ में अपने को 'भृगुसंहिता' वाला बताकर भी ठग रहे हैं।

अस्तु सही रूप में सम्पूर्णरूप से अभी तक कोई नाड़ी ग्रंथ प्राप्त नहीं है। मद्रास सरकार को तेलगू भाषा में नाड़ी ग्रंथों के ११ खंड छिन्न-भिन्न पाण्डुलिपियों के रूप में प्राप्त हुए हैं, मद्रास सरकार ने तेलगू से संस्कृत में प्रतिलिपि करवाकर तीन खण्ड प्रकाशित भी कर दिये हैं। लेकिन उनमें कोई क्रम न होने से समस्या हल नहीं होती।

फिर भी जो कुछ साहित्य प्राप्त है, उसके आधार पर प्रकाश डाल रहे हैं।

नाड़ी ग्रंथों के विषय में बहुत लिखा जाता है परन्तु कुछेक विश्वसनीय नही हैं। वास्तव में ज्योतिष सम्बन्धी नाड़ी ग्रंथ बहुत कम हैं।

विख्यात ज्योतिर्बिद सत्याचार्य ने स्पष्ट रूप से नाड़ी ज्योतिष के आधार का वर्णन किया है और बताया है कि इन नाड़ी सिद्धान्तों के आधार पर भविष्य किस प्रकार जाना जा सकता है। प्रत्येक राशि के १५० विभाग किए हैं। प्रत्येक विभाग को नाड़ी अंश कहते हैं, जिसका परिमाण १२ कला का है। इसमें भी पूर्वार्ध व उतरार्ध दो भाग हैं इस प्रकार एक ही लग्न से ३०० अलग-अलग फल होते हैं, यह विभाग जातक के भाग्य के बीज को स्थापित करता है। अगर सही नाड़ी की स्थापना की जाती है तो सम्बन्धित व्यक्ति के संपूर्ण भूत और भविष्य का संक्षिप्त विवरण ज्ञात किया जा सकता है। वास्तव में सत्याचार्य कहते हैं कि सही नाड़ी अंश के अभाव में, जन्म समय का सही निर्णय नहीं किया जा सकता।

नाड़ियों के नाम

नाड़ियों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) वसुधा, (२) वैष्णवी, (३) ब्राह्मी, (४) कालकूट, (५) शंकरी,

(६) सुधाकरी, (७) सम, (८) सौम्य, (९) सूर, (१०) माया, (११) मनोहर, (१२) माधवी, (१३) मंजुस्वना, (१४) घोर, (१५) कुम्भिनी, (१६) कुटिला, (१७) प्रभा, (१८) वर, (१९) पयस्विनी, (२०) म ला, (२१) जगती, (२२) जर्झरा, (२३) ध्रुव, (२४) मुमला, (२५) मुद्गर, (२६) पाश, (२७) चम्पक, (२८) दामिनी, (२९) महा, (३०) कलुष, (३१) कमला, (३२) कान्ता, (३३) कला, (३४) करिकरा, (३५) क्षमा, (३६) दुर्धरा, (३७) दुर्भगा, (३८) विश्व, (३९) विशीर्णा (४०) विकला, (४१) वीला, (४२) बिभ्रम, (४३) सुखदा, (४४) स्निग्ध, (४५) सोदरा, (४६) सुरसुन्दरी, (४७) अमृतप्लाविनी, (४८) कला, (४९) कामद्रक, (५०) कारवीरानी, (५१) गमहर, (५२) कुट्टिनी, (५३) रौद्र, (५४) विशाख्य, (५५) विषनाशिनी, (५६) नर्मदा, (५७) शीतला, (५८) निम्नम् (५९) प्रीति, (६०) प्रियवर्द्धिनी, (६१) मनैघ्नी, (६२) दुर्भगा, (६३) चित्रा, (६४) चित्रणी, (६५) चिरञ्जीविनी, (६६) भूप, (६७) गदहरा, (६८) नल, (६९) नलिनी, (७०) निर्मला, (७१) नाड़ी, (७२) सुधामृत (७३) सुकालिका, (७४) कालिका कलुषकरा, (७५) त्रैलोक्यमोहनकरी, (७६) महामाया (७७) सुशीलता, (७८) सुभगा, (७९) सुप्रभा, (८०) शोभना, (८१) शिवदा, (८२) शिव, (८३) बल, (८४) ज्वाला, (८५) गद, (८६) गाध, (८७) नूतन, (८८) सुमन, (८९) हर, (९०) सोमावली, (९१) सोमलता (९२) मंगल (९३) मुद्रिका, (९४) क्षुद्र, (९५) मेलापगा, (९६) विश्वालय (९७) नवनीत, (९८) निशाचर, (९९) निवृत्त, (१००) निकदा, (१०१) सर, (१०२) समगा, (१०३) समदा, (१०४) सम, (१०५) विशम्भरा, (१०६) कुमारी, (१०७) कोकिला, (१०८) कुञ्जर, (१०९) ऐन्द्र (११०) स्वाहा, (१११) स्वधा, (११२) वाहिनी, (११३) प्रीति, (११४) रक्षाजलप्लवा, (११५) बारुणि, (११६) मदिरा, (११७) मैत्री, (११८) हदारुणि (११९) हारिणी, (१२०) मारुत, (१२१) धनञ्जय (१२२) धनकरा (१२३) धना, (१२४) कचपम्बुजा, (१२५) ईशानी, (१२६) शूलिनी, (१२७) रौद्री, (१२८) शिवा, (१२९) शिवकारी, (१३०) कला, (१३१) कुन्द, (१३२) मुकुन्द, (१३३) वरदा, (१३४) भासिता, (१३५) काण्डली, (१३६) स्मर, (१३७) कान्दला, (१३८) कोकिला, (१३९) कामी, (१४०) कामिनी, (१४१) कलशोद्भव (१४२) वीरप्रसू:, (१४३) संग्रचा, (१४४) सत्यग्न, (१४५) सतवरा, (१४६) श्राग्वी, (१४७) पातालिनी, (१४८) नाग, (१४९) पंकज, (१५०) परमेश्वरी।

विषम (odd) राशियों में गिनती सीधी होती है और सम (even) राशियों में विपरीत होती है। जैसे१५०वाँ अंश प्रथम हो जाता है द्विस्वभाव (Common) राशियों में ७६वें अंश से गिनती प्रारम्भ होती है। इसका अर्थ यह है कि उपर्युक्त सूची में उभयराशि में प्रथम नाड़ी अंश ७६ वाँ होगा।

उदाहरणार्थ—मिथुन लग्न १६ अ० ४० क० का है जैसे ३० अं० में १५० नाड़ी होते हैं। इसलिए १६ अं०४० क० के १००० कला हुई, इनमें १२ का भाग देने पर ८३ गत होकर ८४वीं नाड़ी विद्यमान है। क्योंकि मिथुन उभयराशि है। अतः उपर्युक्त सूची में ७६वें अंश से गिनती प्रारंभ होगी। मिथुन में ८४वाँ नाड़ी अंश क्रमांक ९ 'सूर' होगा। प्रत्येक नाड़ी में जन्म के अलग-अलग विस्तृत फल हैं।*

असाधारण महत्व

दुःख का विषय है कि आज नाड़ी ग्रंथ सम्पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हैं।

सामान्य रूप से एक लग्न का औसत मान लगभग दो घण्टे है, अर्थात् मध्यममान से एक लग्न दो घण्टे रहता है अतः दो घण्टे के समय के अन्दर जितने भी शिशु जन्म लेंगे उनकी जन्म कुण्डली एक ही बनेगी और उन सभी का फलादेश भी समान होगा, भले ही षट्वर्ग या भावचलित में कुछ अन्तर आ जाय और दशाकाल में कुछ मास या वर्ष का अन्तर हो जाय। लेकिन ऐसा होता नहीं है, दो जुड़वा बच्चे, जिनका अधिकांशतः जन्मलग्न एक ही होता है, और उनके परस्पर जन्म समय में मात्र ५/१० मिनट का ही अन्तर होता है लेकिन उनका जीवन एक समान नहीं होता।

नाड़ी ग्रंथों के अनुसार एक नाड़ी १२ कला की होती है और उसमें भी पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दो भाग होते हैं इस प्रकार एक खण्ड ६ कला का होता है। एक खण्ड को (६ कला) उदय होने में मध्यम मान से (औसत) १ पला अर्थात् मात्र २४ सेकिण्ड का समय लगता है। इस भांति प्रत्येक २४ सेकेण्ड में फलादेश बदल जायगा। अर्थात् दो व्यक्तियों के जन्म समय में मात्र २४ सेकेण्ड का अन्तर होने से ही फलादेश सर्वथा बदल जायगा। जब कि जन्म कुण्डली दो घण्टे में बदलती है।

* अधिक जानकारी हेतु मद्रास शासन द्वारा प्रकाशित देवकेरलम् (चन्द्रकलानाड़ी) देखें।

यह बात भी उल्लेखनीय है कि नाड़ी ग्रंथों से जो फलादेश वर्णित किया जाता है वह स्वयं आश्चर्यजनक व महत्वपूर्ण है और किसी भी पद्धति से ऐसा चमत्कारिक व प्रभावशाली फलादेश कथन सम्भव नहीं है। साथ ही जन्म काल एवं इष्टकाल संशोधन में भी यह परम सहायक है।

कई वर्ष पूर्व अंग्रेजी मासिक ज्योतिष पत्रिका "एष्ट्रौलौजिकल मैगजीन" में 'शतभिष' नाम से नाड़ी अंशों पर धारावाहिक लेख छपे थे। मुझे नवीनतम जानकारी नहीं है, सम्भव है इस लेखमाला में सभी १५० नाड़ी अंशों पर फलादेश छपा हो और वह पुस्तक रूप में प्रकाशित हो। इसी लेखमाला के प्रारम्भिक ६/७ पाठों का अनुवाद मेरे स्नेही मित्र श्री हरिकृष्ण छगांणी जी ने 'आग्रहायण' में प्रकाशनार्थ भेजा था, जो १९६९/७० में 'आग्रहायण' में छप चुके हैं। आग्रहायण के नवम्बर ६९ अंक में प्रकाशित "वसुधा" नामक प्रथम नाड़ी अंश का फलादेश प्रस्तुत कर रहा हूं, इससे पाठकों को नाड़ी ग्रंथों की फलकथन शैली के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त होगा।

वसुधांश का फल

प्रथम नाड़ी अंश का नाम वसुधा है अगर कोई जातक वसुधा अंश के पूर्वार्ध में जन्म लेता है तो वह शूद्र जाति का होता है। वह नदी या समुद्र के समीप के स्थान में धनवान-कुटुम्ब में जन्म लेगा। वह विष्णु का उपासक होगा आकृति सुन्दर होगी; थोड़ा स्थूल काय होगा; पिता प्रसिद्ध होगा; पिता की जीवन में अच्छी स्थिति होगी और दो पत्नियां होगी। जातक द्वितीय पत्नी से उत्पन्न सब से बड़ा लड़का होगा; भाई अल्पायु होंगे; माता-पिता की बचपन में मृत्यु हो जावेगी, चाचा के द्वारा सहायता प्राप्त करेगा, अच्छी शिक्षा होगी और रहन-सहन के तरीके अच्छे होंगे। दोनों पितामह और पिता बहुत भाग्यशाली होंगे, जमीन द्वारा सम्पन्नता प्राप्त होगी। देवताओं व ब्राह्मणों के प्रति आदर भाव रखेगा। तीन शादियां होंगी। प्रथम शादी २१वें वर्ष में होगी। कामुकभावना युक्त होगा, राज्य में उच्च पदाधिकार प्राप्त करेगा, नम्र प्रकृति और अच्छे गुणों से युक्त होगा, अनेक लोगों की रक्षा करने वाला होगा। बहुत धनवान होगा। पहली पत्नी बच्चे को जन्म देकर मृत्यु को प्राप्त हो जावेगी। २१ वें वर्ष में सरकारी नौकरी में प्रवेश करेगा। दूसरी शादी ३६ वें वर्ष में होगी, तीर्थ यात्रा पर जावेगा। ३० वें वर्ष में नौकरी में हानि होगी। तीसरी शादी ४० वें वर्ष के पश्चात होगी। तीसरी पत्नी से उत्पन्न सभी बच्चे मृत्यु को

प्राप्त होंगे। शान्ति करवाने से यह दोष दूर किया जा सकेगा। दो पुत्र और एक पुत्री दीर्घायु होंगे। जन्म से मृत्यु पर्यन्त भाग्यशाली होगा।

इस अंश में उत्पन्न व्यक्ति का यदि लग्न वृषभ होतो माता-पिता की मृत्यु ८ वें के अधिपति की दशा में हो जावेगी। अगर जन्म-नक्षत्र पुष्य, विशाखा या पूर्वा-भाद्र हो। शनि की सम्पूर्ण दशा अच्छी होगी। इसमें व्याह, राजकीय नौकरी में प्रवेश और पुत्र-जन्म होगा। बुध की दशा में जातक का स्वास्थ्य खराब रहेगा, घनिष्ठ सम्बन्धी जैसे भाइयों इत्यादि की हानि होगी। दूसरी शादी व द्वितीय पत्नी से पुत्र का जन्म व मृत्यु होगी। अगर राहु पांचवें भवन में है तो बच्चों के जन्मते ही मृत्यु होगी। शान्ति-उपाय करवाने से इस दोष पर विजय प्राप्त की जा सकेगी। जातक की फिर शादी होगी और इस पत्नी से उत्पन्न बच्चे जीवित रहेंगे। ऋषि कहते हैं कि वसुधा अंश के प्रथम भाग पूर्वार्ध में उत्पन्न जातक दीर्घायु होगा। जातक तृतीय दशा में राजाओं और उच्च व्यक्तियों के यहाँ सेवा करेगा। पिता की मृत्यु व्रण या कैंसर से होगी। चौथी दशा में सम्पन्नता बढ़ेगी और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। वह बहुत दान-पुण्य करेगा और धार्मिक-थान बनावेगा। ५वीं दशा का प्रारंभ अच्छा होगा। अगर १२वें का अधिपति देव स्थान में होगा तो सर्वदा विष्णु का चिन्तन करता रहेगा। उसकी लग्नेश की दशा में ६५ वर्ष की उम्र में मृत्यु हो जावेगी। ध्रुव नाड़ी ग्रंथ का ऐसा कथन है।

जब प्रारंभिक दशा अन्य ग्रहों की हो तब परिणाम क्या होगा? इस विषय पर अधिक प्रकाश नहीं डाला गया है क्योंकि हमारे अधिकार में जो नाड़ी का भाग है और जहाँ तक वसुधा व कुछ अन्य अंशों का संबंध है, पूरे नहीं है।* यह तो वसुधा अंश का संक्षिप्त और अपूर्ण फल है। इसके अलावा एक ही नाड़ी अंश का विस्तार से भी फल मिलता है, जैसे मेष लग्न में वसुधाअंश होने से क्या विशेष फल होगा और वृष आदि अन्य लग्न होने से क्या विशेषफल होगा।

समग्रनाड़ी ग्रंथ सम्बन्धी साहित्य उपलब्ध होने पर ज्योतिषशास्त्र अपने अतीत के वैभव को पुन: प्राप्त कर सकेगा।

मुझे आशा है कि मद्रास प्रदेशीय शासन, अपने पास उपलब्ध शेष तमिल पाण्डुलिपियों का संस्कृत रूपान्तर भी शीघ्र प्रकाशित करेगा। मुझे विश्वस्त रूप से ज्ञात हुआ है कि भारत में अनेक व्यक्तियों के पास, जिनकी संख्या दस-

---

* एस्ट्रोलोजीकल-मेगजीन, बैंगलोर से साभार (हिन्दी अनुवाद)।

पन्द्रह से ऊपर है, नाड़ीग्रंथों के सूत्र उपलब्ध हैं, इनके आधार पर वे भविष्य कथन भी करते हैं लेकिन उक्त सभी ने इस महत्वपूर्ण ज्ञान को गुप्त और अपने तक ही सीमित रक्खा है, क्योंकि उनकी आय एवं आजीविका का साधन बना हुआ है। वे किसी भी मूल्य में इस साहित्य निधि के संशोधन, सम्पादन, प्रसार एवं विद्यादान को सहमत नहीं हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही होगा कि आततायियों के आक्रमण से जो कुछ भी बहुमूल्य साहित्य बचा है वह इन व्यक्तियों के मृत्यु पर विलुप्त हो जायगा। इसके बावजूद मैं इस दिशा में प्रयास कर रहा हूँ।

इष्ट-शोधन

पिछले अभ्यासों में हमने दशवर्ग साधन की विधि बतलाई थी, दशवर्गों का प्रयोजन, इनका फल क्रमशः बतलाया जायगा लेकिन इससे पहले इष्ट शोधन की क्रिया बतला देना उचित होगा। जन्मपत्र निर्माण में पहले इष्टकाल की शुद्धि कर लेना आवश्यक है इसके लिए दश वर्गों का ज्ञान आवश्यक था। अतः दश-वर्गों के बारे में अन्य विवरण देने से पहले इष्टशोधन की चर्चा करेंगे।

इष्ट शोधन विधियाँ

ज्योतिष शास्त्र की सत्यता समय की शुद्धता पर निर्भर है जन्म का समय अर्थात इष्टकाल जितना शुद्ध होगा फलादेश भी उतना ही सही होगा, इसी हेतु किसी ने कहा है 'इष्ट बिना भ्रष्ट है ज्योतिष वैद्य कवित्व' वैद्यक और कवित्व का इष्ट से क्या प्रयोजन है विषयान्तर होने से यह यहां छोड़ देते हैं, किन्तु ज्योतिष का तो सारा आधार ही इष्ट है। कुछ लोग इस इष्ट का अर्थ 'दैवी साधना' लेते हैं, ऐसे अर्थ भी युक्तिसंगत तो है, परन्तु यहाँ वास्तव में 'इष्ट' का अर्थ जन्म समय से ही है।

क्या पुराने समय में, आज के सभ्य युग में भी समय की सत्यता संदिग्ध ही है। पुराने जमाने में समय ज्ञात करने के विश्वस्त साधन विद्यमान होते भी वे जन साधारण के लिए इतने सुगम न थे, जैसे कि आजकल घड़ियां हैं। आज-कल घड़ी आदि सुलभ साधनों के रहते भी समय सही नहीं होता। घड़ी का ही समय मन्द या तेज होता है, या ठीक बच्चा पैदा होते समय नहीं देखा जाता। कदाचित ठीक समय पता भी हो तो ज्योतिष के नीम-हकीम उसका कायाकल्प कर अशुद्ध बना देते हैं। कारण यह है कि सन्तान की उत्पत्ति के समय शिशु के अभिभावक शिशु की कुन्डली किसी नीम-हकीम से बनवा लेते हैं, यह एक खिल-वाड़ है। ये लोग ऐसे होते हैं जिनको जन्मस्थान के अक्षांश, रेखांश, लोकल समय, स्टैण्डर्ड समय और जन्मस्थान का सूर्योदय काल आदि के बारे में तिल भर भी जानकारी नहीं होती। यदि विश्वास न हो तो कभी जरा पूछिये—अक्षांश रेखांश का नाम सुनकर ही चौकेंगे। अतः इन नीम-हकीमों के हाथ से जो जन्म

कुण्डली बनती है; उसमें एक घन्टे तक की भी अशुद्धि हो जाना स्वाभाविक है और यह अशुद्ध कुन्डली ही जन्म कुण्डली की नींव होती है।

यह बड़े दुख का विषय है कि जन्मपत्र जैसे महत्वपूर्ण कार्य जिस पर होनहार नवजात बालक-बालिका का सम्पूर्ण जीवन आधारित होता है, विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। प्रायः दो जुड़वे बच्चे अधिक से अधिक ५।६ मिनट के अन्तर पर पैदा होते हैं, किन्तु दोनों का भाग्य एवं जीवन सर्वथा भिन्न होता है। जन्म का लग्न, नक्षत्र, राशि आदि भले ही न बदलें, अंश, कला आदि में अन्तर आ जाने से काफी अन्तर आ जाता है। एक उदाहरण जैसे—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में ५/३० प्रातः पर किसी का जन्म है, उसके जीवन में कोई घटना ५वें महीने घटती है ५/३५ प्रातः पर जन्म लेने वाले बालक के जीवन में वह घटना तीसरे ही महीने घट जायेगी। पहले तो बहुधा फलों में ही अन्तर आ जाता है, यदि फलों में अन्तर अधिक न भी आये तो वे फल कब घटित होंगे—इसमें भारी अन्तर आ जायेगा। ज्योतिष शास्त्र मूलतः गणित और और भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है, अतः समय में थोड़ा-सा भी अन्तर होने से अनर्थ हो जायेगा। अतः अभिभावकों का यह प्रमुख कर्तव्य है कि वे सही समय ज्ञातकर उसे अच्छे पठित विद्वान के समक्ष उपस्थित कर शुद्ध जन्मपत्र बनवायें। जन्म के समय पर बनने वाली छोटी-सी जन्मपत्रिका (टेवा) जन्मकुण्डली की नींव है, अतः यदि नींव ही ठीक न बनी हो तो उस पर भवन कैसे बनेगा।

आधुनिक समय में यदि जन्म समय ठीक भी रहे, तो भी संशोधन परमावश्यक है। हम मान लें कि घड़ी ठीक है और समय भी ठीक समय देखा गया है, फिर भी कुछ मिनट-सेकण्डों का अन्तर हो सकता है। इसमें भी बहुत भेद है कि जन्म का समय कौन माना जाय? कुछ लोग तो गर्भाधान का समय मूलसमय मानते हैं, क्योंकि एक प्रकार से जब शुक्राणु गर्भ में आया, तभी से उसका जीवन आरम्भ हो गया। दक्षिण भारत में कहीं पर जब शिशु का सिर योनि से बाहर दिखलाई दे वही समय लिया जाता है, कहीं पर जब बालक भूमिस्थ होता है उस समय को और कहीं पर बालक के प्रथम शब्द (रोने) से जन्म समय ग्रहण करते हैं। वास्तव में जब प्रसव के बाद पहला शब्द (रोये) करे, यही समय मानना चाहिए। विशेषकर जब आपरेशन द्वारा शिशु का जन्म हो, उसमें जन्म समय का निर्धारणकठिन होता है। इन सब बातों को देख लिया जाय कि किस

समय बालक या बालिका का जन्म सम्भव है तब उस शुद्ध समय को लेकर जन्मपत्र बनना चाहिए।

संशोधन विधियाँ

(१) जन्म समय को संशोधन कर शुद्ध जन्म पत्र बनाने की कई रीतियाँ हैं। यदि जन्म पत्र या जन्म समय अनुमानित हो, और ऐसी सम्भावना हो कि अनुमानित लग्न भी बदल सकता है, जैसा कि प्रायः गांवों में होता है—'खाना खाते वक्त' 'चांद खजूर पर चढ़ा था' 'झुरमुट के समय' आदि, ऐसे अवसर पर पहले मोटे तौर पर लग्न निश्चय किया जाना चाहिए। बृहज्जातक (सूतिकाध्याय ५) आदि ग्रंथों में इसकी विधि दी है—पिता जन्म के समय कहां था, कितनी उपसूतिकायें थीं, क्या बालक नालवेष्टित था, कैसे स्थल या भवन में जन्म हुआ, दीप था या नहीं, गृह का द्वार और दीप किस दिशा में था, शय्या किस दिशा में थी, शिशु जन्म पर रोया या नहीं और कितना रोया? आदि बहुत-सी बातें दी हैं, जिनके द्वारा कौन लग्न में हुआ है यह निश्चय किया सकता है। यद्यपि उपर्युक्त सभी बातें एक साथ नहीं मिलेंगी, फिर भी अधिक पुष्टि जिसकी हो उसे लेना चाहिए।

लग्न की राशि का स्वामी, लग्न की राशि, लग्न की नवांश राशि, और लग्न में जो नवांश राशि हो--इन चारों में जो बलवान हो (विशेषकर लग्न के नवांश की राशि या उसका जो स्वामी हो-) उसके अनुसार शिशु के देह की रचना और रंग (वर्ण) होता है इसके आधार पर लग्न और नवांश का निश्चय किया जा सकता है, कि बालक का वर्ण किस नवांश राशि या नवांशपति के तुल्य है। राशियों के स्वामी और उनका आकार बृहज्जातक (ग्रहभेदाध्याय २) आदि में दिये हैं (श्लोक ८ से ११ तक, अन्य ग्रन्थों में विस्तार से दिया है)। एक नवांश लगभग १० मिनट से १६ मिनट तक रहता है, अतः यदि १५/१६ मिनट से अधिक अशुद्धि हो तो जातक के देहाकार व वर्ण को देखकर समय शुद्ध किया जा सकता है। जातक का देहाकार और वर्ण किस नवांशपति के तुल्य हो उसी नवांश में जन्म मानना चाहिए।*

(२) एक नवांश जो १५/१६ मिनट रहेगा, इसके अन्दर भी ठीक निश्चित समय क्या है, इसको जानने के लिए दूसरी विधियाँ प्रयोग में लानी चाहिए :-

(अ) स्वर शास्त्रों में इसका एक प्रकार मिलता है और दक्षिण में इस प्रणाली का अच्छा प्रचलन है।

---

* ज्यौतिष मकरन्दभाग ३ और ज्यौतिष नवनीत-पूर्वखण्ड देखें।

अनलाब्बग्नि भू व्योम जल वाय्वधिपा खगा: ।
क्रमादर्कादयो वारे स्व स्व काल प्रवर्त्तका: ।
भूम्यादि पाद घटिका वृद्धि: स्यादर्घं यामके ।
याम्योत्तरार्घं तद् ह्रासादारोहश्चावरोहर्के ।।
परिवृत्तिद्वयं यामे प्रति प्रहर मीदृशं ।
स्त्री जन्म जल वाव्यो: स्याद्भू नभोग्निषुपुंजनि: ।
एतेन घटिका ज्ञान तेन लग्न प्रसाधयेत् ।

इसका अर्थ यह है कि दिन में जन्म हो तो दिनमान के रात्रि में जन्म हो तो रात्रिमान के बराबर १२० भाग करना चाहिए। सूर्यवार हो तो प्रथम तत्व अग्नि, सोमवार को जल, मंगल को अग्नि, बुध को पृथ्वी, वृहस्पति को आकाश, शुक्र को जल, और शनि को वायु तत्व सबसे पहले होगा। १ भाग पृथ्वी तत्व, २ भाग जल, ३ भाग अग्नि, ४ भाग वायु, ५ भाग आकाश, पुनः इसके विपरीत उल्टे क्रम से (इतना ध्यान रहे कि पहली गणना में पंचतत्वों की गणना पूरी कर अन्त में जो तत्व आयगा उसी से विपरीत गिना जायगा) अर्थात् कुल ३० भाग एक आवृत्ति में आते हैं। यही आवृत्ति ४ बार प्रत्येक दिन और रात्रि में घूमकर १२० भाग पूरे होंगे। पुत्र का जन्म हमेशा पृथ्वी, आकाश और अग्नि तत्व में तथा जल और वायु तत्व में कन्या का जन्म होता है। इसकी विधि प्रामाणिक और वैज्ञानिक प्रतीत होती है।*

इस प्रणाली से इष्ट संशोधन का एक उदाहरण:—रविवार को दिन में १२ ३० इष्ट पर क्या पुत्र का जन्म सही है? जब दिनमान ३२/४० के हो। दिनमान के पल बनाये तो १९६० पल, इनमें १२० का भाग देने पर १६ पला मिले। शेष ४० पला के विपल बनाकर १२० का भाग देने पर लब्धि २० विपल मिले। अत: १६ पल २० विपल = ९८० विपल का एक भाग हुआ।

अब इष्ट १२/३० के भी विपल बना लिये तो ४५००० हुए, इनमें ९८० विपल (१ भाग) का भाग देने पर लब्धि ४५ शेष ९०० विपल मिले, अर्थात प्रात: से ४५ व्यतीत होकर ४६वां भाग चल रहा है। अत: ३० भाग की एक आवृत्ति पूरी होकर (क्योंकि जन्म रविवार का है, अत: गणना अग्नितत्व से होगी) दूसरी आवृत्ति में १६वां भाग (३ अग्नि + ४ वायु + ५ आकाश

---

* यह सार श्री भालचन्द्र शंकर शास्त्री के लेख पर आधारित है और ऐसा विश्वास है कि लेखक ने मूलग्रन्थ देखकर ही लिखा होगा। (ज्योतिष विज्ञान मासिक–देहली)

+ १ पृथ्वी + २ जल (१५ पूरे हुए) अब विपरीत क्रम से + २ जल, अर्थात् १६ और १७वां भाग जल तत्व का है, इसलिए इसमें कन्या का जन्म होना था।

इससे पहले १४, १५ अंश भी जलतत्व थे उसमें भी पुत्र जन्म सम्भव नहीं है। अतः क्योंकि १६ वें भाग में ६०० विपल बीत चुके हैं, शेष ८० बिपल और १७वें भाग में ६८० विकल=कुल १०६० विपल के बाद (१७ पल ४० विपला) १८ भाग पृथ्वीतत्व में पुत्र जन्म सम्भव है। इसलिए जन्म समय का इष्ट अशुद्ध है और उसे १२/३० के स्थान पर १२/३०+०/१७/४०=१२/४७/४० होना चाहिए। या इष्ट १२/३० के काफी कम (अर्थात् १३ वें भाग में होना चाहिए।

(आ) मांदि या गुलिक—यह प्रणाली दक्षिण में काफी प्रचलित है, प्रायः दक्षिणी विद्वान बिना गुलिक के संशोधन किये जन्म पत्र नहीं बनाते। इसका विधान यह है कि दिनमान को (रात का जन्म हो तो रात्रिमान को) रविबार का जन्म हो तो २६ से, सोमवार को २२, मंगल को १८, बुध को १४, बृहस्पति को १०, शुक्र को ६, और शनिवार को २ से गुणाकर ३० का भाग दे। जो लब्धि मिले (रात्रि का जन्म हो तो इसमें दिनमान जोड़कर) इसे मांदि घटी कहते हैं, इष्टकाल से लग्न साधन की तरह मांदि घटी को ही इष्ट मानकर जो लग्न निकले, वही गुलिक है।*

जैसे पूर्वोक्त उदाहरण में दिनमान ३२।४० को रविवार होने से २६ से गुणा किया तो ८४६।२० हुआ, ३० का भाग देने पर लब्धि २८।१८ हुआ, यही २८।१८ मांदि घटी हुई। इसी को इष्ट मानकर लग्न निकाला (सूर्यस्पष्ट २।३ मानकर लग्न साधन की रीति से 'यत्सूर्यराश्यंशादि॰)' तो लखनऊ में २ अंश वृश्चिक लग्न हुआ। अतः वृश्चिक के २ अंश पर गुलिक हुआ। (यहां १२।३० इष्ट पर सिंह लग्न ८ अंश पर है) यों तो इसका काफी विचार है, प्रायः गुलिक जन्मलग्न से १,५,९ वें स्थान में होता है। ऐसा न हो तो कम से कम गुलिक जन्मलग्न से २, ६, ८, १२, में नहीं होता, यदि २, ६, ८, १२ में हो (और प्राणपद चन्द्रमा भी शुद्ध न हो तो) जन्म समय को अशुद्ध जानना चाहिए।

---

* कुछ के मत से रात्रि का जन्म हो तो गुणक भी भिन्न हैं [—सू १०, चं ६, मं २, बु २६, बृ २२, शु १८, श १४, रात्रिमान × ध्रुवक=भागा ३० लब्धि + दिनमान = मांदि इष्ट।

(इ) प्राणपद—इसका अधिक प्रचार उत्तर भारत में है। इष्ट घटी को ४ से गुणा करे, पलों में १५ का भाग देकर लब्धि भी जोड़ दें। इसमें सूर्य चर में हो तो सूर्य की राशि, द्विस्वभाव में हो सूर्य से पंचम राशि, स्थिर में तो सूर्य से नवम राशि जोड़ दें। १२ का भाग देकर जो शेष रहे, वह प्राणप्रद का लग्न होगा।

उदाहरण—इष्टघटी १२ × ४ = ४८, पला ३० में १५ का भाग दिया, लब्धि = २ शेष० अत: ४८ + २।० = ५०/०, सूर्य मिथुन राशि द्विस्वभाव में होने से मिथुन से पंचम राशि तुला का ७ जोड़ा ५०।० + ७।० = ५७में १२ का भाग देने पर शेष ९ अर्थात् धनराशि में प्राणपद हुआ।

मेरी दृष्टि में प्राणपद का विचार एक स्थूल विचार है, न कि यथार्थ, अत: मैं इसको अधिक महत्व नहीं देता। इसके अनुसार जन्मलग्न से प्राणपद १, ५, ९ में हो तो तभी शुद्ध है। अन्यथा नहीं। यहाँ जन्मलग्न सिंह से प्राणपद पंचम में पड़ा अत: इस प्रणाली से इष्ट शुद्ध हुआ।

(उ) तीसरा विधान है—चन्द्रमा से लग्न १, ५, ९ होना चाहिए।

पाराशरमते गुलिक साधन

गुलिक या मांदि साधन दूसरा ढंग भी मिलता है। वास्तव में गुलिक या मांदि को पाराशर ने उपग्रह माना है, हमने गुलिक साधन मान्यग्रंथ बृहद् वज्ञ-रंजन के अनुसार दिया है। इसके अलावा गुलिक साधन की निम्न विधि भी है जो पाराशरोक्त है।

दिन का जन्म हो तो रविवारादि क्रमश: ७, ६, ५, ४, ३, २, १ से दिनमान को गुणे, रात्रि का जन्म हो तो क्रमश: रविबारादि ३, २, १, ७, ६, ५, ४, से रात्रिमान को गुणा करे। गुणा द्वारा प्राप्त अंक में ८ का भाग देने पर लब्धि मांदि घटी होगी, दिन का जन्म हो तो इसी को मांदि घटी मानकर लग्न निकाले। और रात्रि का जन्म हो तो मांदि घटी में दिनमान जोड़कर जो आये उसे इष्टघटी मानकर लग्न निकाले।*

जैसे हमारे उदाहरण में रविबार दिन में जन्म है, अत: दिनमान ३२।४० × ७ = २२४।२८० या २२८/४०, इसमें ८ का भाग देने पर लब्धि २८।३५ यह मांदि घटी हुई।

---

* इसके अलावा और भी अनेक मत हैं। कुछ लोग मांदि और गुलिक को दो भिन्न छायाग्रह मानते हैं। जैसे (आ) रीति से साधित मांदि है और यह दूसरे रीति से साधिक गुलिक है। मांदि को अति मारक मानते हैं।

दोनों रीतियों से केवल थोड़ा सा अन्तर है।

गुलिक और प्राणपद को भी सूक्ष्म और युक्तिसंगत माना जा सकता है, जब कि हम उन्हें सही रूप में लें। 'प्राणपद लग्न से १, ५, ९, स्थानों में ही होता है, यह कथन सही नहीं है। ग्रंथों में गुलिक और प्राणपद के द्वादशभावों का फलादेश भी मिलता है (पाराशरी में, इससे सिद्ध है कि ये १, ५, ९ के अलावा अन्य स्थानों में भी हो सकते हैं। अन्य ग्रंथों में—

'केन्द्र त्रिकोणावृत्त याति प्राण (प्रारब्ध १।३) और 'तत्त्रिकोणमथापिवा, तत्सप्तमे त्रिकोणे वा (बृहद् वज्र रंजन)' अर्थात् लग्न से केन्द्र (१, ४, ७, १०), त्रिकोण (५, ९), और लग्न के सप्तम से त्रिकोण (३, ११) में प्राणपद या गुलिक होने पर इष्ट शुद्ध माना है। अतः यह सिद्ध हुआ कि गुलिक या प्राणपद या चन्द्र इन स्थानों में हो तो समय शुद्ध है। तीनों २, ६, ८, १२ में हो तो अशुद्ध जानना। उपर्युक्त गुलिक, प्राणपद और चन्द्र, इन तीनों का विचार संयुक्त रूप से है, पृथक-पृथक नहीं। क्योंकि तीनों से लग्न १, ५, ९ में होना असम्भव है। अतः यह तीनों सिद्धान्त परस्पर पूरक हैं, या गुलिक शुद्ध हो, या प्राणप्रद शुद्ध हो। तीनों में एक भी शुद्ध हो तो इष्ट सही जानना चाहिए, और तीनों में कोई भी शुद्ध न मिले तो अवश्य अशुद्धि जानना—

विना प्राणपदाच्छुद्धो गुलिकाद्वा निशाकरात्।
तदशुद्धं विजानीयात् स्थावराणां सदैवहि॥

मेरा अपना मन्तव्य

जहाँ तक मेरा विचार है मैं प्राणपद, गुलिक को महत्व नहीं देता, यह एक स्थूल सिद्धांत है, जिसकी उपपत्ति तर्क एवं विज्ञान से सिद्ध नहीं होती फिर भी कुछ लोग इस परम्परा को पाले हैं। प्राणपद सिद्धान्त के अनुसार जब जन्मलग्न से १, ५, ९ में प्राणपद हो तभी मनुष्य का जन्म होता है। वास्तव में प्राणपद इन स्थानों में क्रमशः एक के बाद दूसरे में १८ मिनट के बाद आता है। क्या इन १८ मिनटों में मनुष्य का जन्म ही नहीं होगा? इस प्रकार दिन के २४ घण्टों में केवल ६ घण्टे ही मनुष्यों के जन्मदाता हैं और गुलिक तो इसमें भी स्थूल है। अतः ये सिद्धान्त विश्वसनीय या मान्य नहीं हो सकते। हां पंचतत्व वाला सिद्धान्त वास्तव में सूक्ष्म है।

इसके अतिरिक्त एक और सिद्धान्त है। पुत्र का जन्म समराशि के सम नवांश में और कन्या का जन्म विषम राशि (लग्न) के विषम नवांश में नहीं होता। पुत्रों की जन्म लग्न की राशि या जन्मलग्न की नवांश राशि दोनों में एक विषम होगी, या दोनों विषम होगी। ऐसे ही कन्याओं की जन्मलग्न की राशि या नवांशराशि इन दोनों में एक सम होगी, या दोनों सम होंगी। यह शास्त्र सम्मत सिद्धान्त है। साथ ही उपयोगी भी है। जहां लग्न संधि में हो वहां यह बहुत अच्छा काम देता है, अभी कुछ दिन पूर्व एक बालक का जन्म हुआ, जिसका इष्ट समय शुद्ध था (पंचतत्व से), किन्तु लग्न तुला के अन्त और वृश्चिक के प्रारम्भ में संधिगत था, ऐसी जटिल समस्या का समाधान इसी सिद्धान्त से हो सका। क्योंकि जन्म पुत्र का था। वृश्चिक समराशि है, और वृश्चिक के आरम्भ में सवा तीन अंश तक कर्क का नवांश रहता है, कर्क सम है। अतः यह सिद्ध हुआ कि लग्न के सवा तीन अंश तक पुत्र नहीं हो सकता अतः तुला लग्न ही शुद्ध माना गया।

उपर्युक्त सभी संसोधन तब के हैं, जब इष्टकाल ज्ञात हो, ऐसे ही इष्टकाल निकालने में भी भारी अशुद्धियां होती हैं। अतः पहले शुद्ध इष्टकाल जन्म समय से बनाना चाहिए, और उसके बन जाने पर फिर उस इष्टकाल का इस प्रकार संशोधन करना चाहिए। तब जाकर कहीं शुद्ध जन्म पत्र बन सकेगी, और भविष्य फल सही होगा।

इष्ट शोधन के और भी अनेक सिद्धान्त हैं, किन्तु वे मान्य या विश्वसनीय नहीं हैं। अधिक जानकारी हेतु 'ज्योतिस्तत्व' देखें।

ज्योतिष का सम्पूर्ण रहस्य गणित पर है, जब तक प्रत्येक ग्रह और भाव का बल स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं होता तब तक वह ग्रह कैसा फल करेगा, यह कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। जिस प्रकार ग्रहों और भावों के बल साधन का प्रकार शास्त्रों में वर्णित है उसी प्रकार से यदि जन्मपत्र बनाया जाय तो निरन्तर अथक परिश्रम पूर्वक मेधावान् व्यक्ति कहीं २/३ महीने में एक जन्मपत्र बना सकता है, और तब कहीं सही भविष्यवाणी की जा सकती है। इस लम्बे नुस्खे पर सभी आश्चर्य करेंगे लेकिन जिन्होंने ज्योतिष के गम्भीर ग्रंथों का अध्ययन किया है वे भलीभांति यह जानते हैं कि ढाई तीन महीने एक प्रकाण्ड विद्वान का क्या पारिश्रमिक होगा? इससे आप अनुमान कर सकते हैं कि एक अच्छी सर्वांग जन्मपत्र वह भी केवल गणित भाग के निर्माण पर हजारों रुपये का व्यय है,

और फलित का अलग। यह धन देखने में तो अत्यधिक है, लेकिन यदि देखा जाय तो यह बहुत स्वल्प है। कोई भी दर्शक जिसे शंका हो स्वयं यह कार्य अपने सामने या अपने हाथों करके देख सकता है कि इसमें कितना गणित है और कितना दुस्तर कार्य है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जबकि बहुत ही सस्ता समय था मद्रास के एक ज्योतिषी श्री सूर्यनारायण राव एक प्रश्न या एक कुण्डली मिलाने का एक सौ रुपया लेते थे, और आज ?

आज एक कुण्डली दो रुपये में बनती है। २५-३० रुपया तो अत्यधिक हो गया। जनता ऐसा सोचती है कि लग्न देखकर एक जन्मकुण्डली का ढाँचा खींच दिया विंशोत्तरी दशा दे दी बस जन्म कुण्डली हो गई, और इससे भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालों की शत प्रतिशत सही भविष्यवाणी पलक मारते, उस पर दृष्टिपात करते ही जादू के छूमन्तर की तरह की जा सकती है। वास्तविकता यह है कि ऐसी जन्मकुण्डली कुछ भी बताने में सक्षम नहीं है। आजकल जितनी भी जन्मकुण्डलियां बनती हैं, वे सभी निरर्थक हैं, उन सब में वह मोटा गणित रहता है जिसका प्रयोजन सामान्य है, तो फलादेश कैसे सत्य हो अतः यह वास्तविक सत्य है कि इन कुण्डलियों से जो फल बतलाया जाता है वह गणित पर नहीं केवल काल्पनिक अटकलपच्चू ही होता है।

इस दिशा में, अपने पिछले ४० वर्षों में मैंने लाखों जन्म कुण्डलियों का अवलोकन किया होगा बड़ी लम्बी कुण्डलियां भी देखीं, लेकिन एक भी ऐसी कुण्डली अब तक देखने को नहीं मिली जो 'केशवीजातक' आदि के गम्भीर गणित से परिपूर्ण हो।

यह सम्भव भी कैसे है ? इस युग में हजारों रुपये जन्मपत्र में कौन व्यय करे ? राजा और महाराजाओं का युग था वह गया, तो कुण्डली कौन बनाये और आज पच्चीस रुपये बोझ ढोने वाले एक मजदूर की मजदूरी है तो पढ़ा लिखा जिसने १२ वर्षों तक की लम्बी तपस्या और स्वाध्याय से ज्योतिष में आचार्यत्व प्राप्त किया हो तीन महीने लगाकर पांच या दस रुपये में क्या कुण्डली बनाये। यद्यपि १२ वर्षों में वह इस शास्त्र को छोड़कर आधुनिक विद्याध्ययन में लगता तो आज डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासक आदि किसी प्रतिष्ठित पद पर होता। आज दो-तीन दिन ही गणित कर दस रुपये में तीन दिन भी गंवाये तो तीन रुपये रोज मजदूरी हुई जो उसके कागज कलम की घिसाई भी नहीं है। एक ज्योतिर्विज्ञान वेत्ता का स्थान आज जो एक मजदूर से

नीचा हो गया है ऐसी दशा में ज्योतिष क्या फलीभूत हो ? और कैसे हो ? एक अच्छा जूता इस समय रु ५००/- में आ रहा है, आश्चर्य है कि हम जन्मपत्र जैसे महत्वपूर्ण वस्तु को एक जूते के बराबर भी महत्व नहीं देते । लेकिन उससे सम्पूर्ण भविष्य जान लेना चाहते हैं ।

मेरा प्रयोजन

मेरे कथन का प्रयोजन यह है कि मैंने आरम्भ से ही ज्योतिष के उस गम्भीर गणित का क्रम जारी रखने का निश्चय किया था जो वास्तविक गणित है और इस अभ्यास में सम्भवतः बलसाधन आदि का गम्भीर गणित होता । भले ही गम्भीर गणित का प्रयोजन न हो, लेकिन उसका जानना आवश्यक है । लेकिन मेरे कुछ सहयोगियों की राय है कि फिलहाल आधुनिक प्रणाली का जो संक्षिप्त गणित प्रचलित है पहले उसे दे दिया जाय, क्योंकि सामान्यतः आजकल उसी का व्यवहार हो रहा है । ढाई तीन महीने लगाकर आज के युग में कौन गम्भीर गणित करेगा और कौन सामर्थ्यवान् ऐसी कुण्डली बनवायेगा ? हां, शास्त्र की पूर्ति के लिये यदि संभव हो तो यह विषय बाद में अवश्य दे दिया जाय । तदनुसार हम जिस प्रकार आजकल जन्मपत्र बनते हैं उसी का गणित दे रहे हैं ।

दशवर्ग आदि का विचार

दशवर्ग

षट्वर्ग दशवर्ग, द्वादशवर्ग हम पिछले अभ्यास में बता चुके हैं। जो ग्रह दसों वर्गों में अपने घर का या उच्चस्थ हो उसे 'श्रीधाम' स्थित कहा जाता है।

इसी तरह ९ वर्ग स्वक्षेत्र या उच्च के होने पर 'शक्रवाहन' स्थित।
,, ८ ,, ,, कुंकुमांश (ब्रह्मलोकांश)
,, ७ ,, ,, देवलोकांश
,, ६ ,, ,, पारावतांश
,, ५ ,, ,, सिंहाशनांश
,, ४ ,, ,, गोपुरांश
,, ३ ,, ,, उत्तमांश
,, २ ,, ,, पारिजातांश
कहलाता है।

षट्वर्ग एवं द्वादश वर्ग सम्बन्धी विस्तृत फलादेश के लिये वृहत्पाराशर प्रभृति ग्रंथों में देखना चाहिये। मुख्यत: इसका विचार ग्रह के बल जानने के उद्देश्य से ही है कि ग्रह में शुभ या अशुभ फल देने की कितनी सामर्थ्य है।

सप्तवर्ग में

वर्ग	१	२	३	४	५	६	७
नाम	×	किंशुक	व्यंजन	चामर	छत्र	कुण्डल	मुकुट

वृहत्पाराशरोक्त षोडशवर्ग में

वर्ग	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
नाम	भेदक	कुसुम	नागपुष्प	कंदुक	केरल	कल्प वृक्ष	चन्दनवन	पूर्णचन्द्र	उच्चैः श्रवा	धन्वन्तरि	सूर्यकान्त	विद्रुम	इन्द्रासन	गोलोक	श्रीवल्लभ

सप्तवर्ग का फल

(१) लग्न कुण्डली का मुख्य विचार शारीरिक सुख है। विभिन्न भावों से सम्बन्धित उसे क्या सुख प्राप्त होगा, यह विचार लग्न कुण्डली का मुख्य है। इसी से शील भी ज्ञात किया जा सकता है।

(२) होरा लग्न प्रकृति तथा आर्थिक सम्पदा का विचारक है। सूर्य की होरा में जन्म तथा उसके बली ग्रह युक्त होने से पुरुष में पौरुष व क्रूरता होगी इसके विपरीत चन्द्रमा के होरा में लग्न हो, उसमें बली ग्रह हों तो स्त्रियों के समान सौम्य व पौरुषहीन होगा। विशेष कर पुरुषों का सूर्य होरा में स्त्रियों का चन्द्र लग्न होरा होना प्रकृति की दृष्टि से अच्छा है। इसके विपरीत सूर्य की होरा में लग्न हो, बली हो तो ऐसे लग्न में उत्पन्न स्त्री भी पुरुषों के तुल्य स्वभाव की होगी—बलवान चन्द्र होरा में उत्पन्न पुरुष स्त्रैण होगा।

आर्थिक दृष्टिकोण से समलग्न में चन्द्रमा की होरा और विषमलग्न में भी चन्द्रमा की होरा होना शुभ है। तात्पर्य यह हुआ है कि चन्द्रमा के होरा में उत्पन्न जातक सम्पन्न और सूर्य की होरा में उत्पन्न निर्धन होगा। इसके यह अर्थ हुए कि समलग्न में १५ अंश के भीतर और विषमलग्न में १५ अंश के बाद जन्म शुभ हुआ।

चन्द्रमा सूर्य की होरा में कष्ट, दरिद्रता सूचक है। सूर्य, चन्द्रमा दोनों अपनी-अपनी होरा में हों तो शुभ है। सूर्य चन्द्रमा की होरा में भी शुभ है। सूर्य की होरा में पापग्रह भी समृद्धिसूचक शुभ हैं लेकिन चन्द्रमा की होरा में पापग्रह शुभ नहीं होते। चन्द्रमा की होरा में शुभ ग्रह सम्पन्नता व सुख सूचक होते हैं।

(३) देष्काण से उच्चपद का विचार अथवा कर्मफल का विचार होता है। जातक अपने कर्त्तव्य से कितने उच्चपद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा यह देष्काण से ज्ञात होगा। देष्काण की कुण्डली में जो ग्रह उच्च, स्वक्षेत्री, मित्र-क्षेत्री होकर केन्द्र में हो वह उन्नति और प्रतिष्ठा दायक (अपनी दशा में) होगा। तथा इस प्रकार के ग्रहों की स्थिति को देखकर पदवी का अनुमान किया जा सकता है।

जन्म-लग्न से राज्येश देष्काण में कैसे स्थान में स्थित है? यह विचार मुख्य है।

देष्काण कुण्डली में त्रिकोण या पणफरस्थ ग्रह भी शुभ है, लेकिन आपोक्लिम में शुभ नहीं होते। ऐसे निर्बल ग्रह अपनी दशा में अवनति देते हैं।

अपने सहयोगी कैसे होंगे, दूसरों का सहयोग कैसा मिलेगा ? यह विचार भी देष्काण लग्न में तृतीय भाव और जन्म लग्न से तृतीयेश की देष्काण में स्थिति से ज्ञात किया जाता है।

देष्काण से ही सहोदरों का भी विचार होता है। जन्मलग्न से तृतीयेश, देष्काण में तीसरी राशि, देष्काण लग्न का स्वामी जिस राशि में हो,—इनकी संख्या तथा बलाबल के विचार से भाई,बहिनों की संख्या भी कही जाती है और उनका सुख-दुख भी। यह अपनी कल्पना और निरन्तर अभ्यास से संभव है।

जिसका जन्म क्रूर देष्काण में हो वह दुष्ट प्रकृति होता है। देष्काण के आधार पर ही शरीर में रोग, घाव, तिल आदि चिन्ह, जेल आदि बन्धन के योग, तथा मृत्यु का कारण भी बतलाया जाता है—जो आग फलित ग्रंथों में वर्णित है।

(४) सप्तांश—कुछ आचार्य सहोदरों का विचार सप्तांश से करने को कहते हैं। इसके अलावा आर्थिक लाभ का विचार भी सप्तांश से होता है। आचार्य बुद्धि और वर्ण का विचार भी सप्तांश से करने को कहते हैं अन्य बन्धु, बांधवों, पौत्रादि का विचार भी सप्तांश ही से होता है।

जन्मलग्न से तृतीयेश की सप्तांश कुन्डली में स्थिति तथा सप्तांश कुंडली के तृतीयेश की स्थिति एवं उनके स्थित राशियों से सहोदर सख्या, उनका दुख-सुख तथा बान्धवादि सुखों की कल्पना करनी चाहिए एवं सप्तांश कुण्डली के अन्य बली ग्रहों से जो तीसरे भाव को देखें—भ्राताओं के बारे में कहना चाहिए।

सप्तांश कुण्डली में ग्रह उच्च, स्वगृही, मित्रक्षत्री होकर शुभ स्थानों में स्थित हों तो धनागम सूचित करते हैं। कुछ आचार्य सप्तांश से सन्तान का भी विचार करते हैं, जितने बली ग्रह सप्तांश लग्न को देखें, उतनी सन्तानें करते हैं। सप्तांशलग्न विषम होकर बली हो तो पुत्र तथा सम होकर बली हो तो कन्याओं की अधिकता अथवा प्रथम सन्तान पुत्र या कन्या कहनी चाहिए।

यवनाचार्य के मत से जातक के शरीर का आकार तथा बुद्धि का विचार भी सप्तांश लग्न से अथवा सप्तांश लग्न के स्वामी से करना चाहिए।

(५) नवमांश—नवमांश षट्वर्ग का सर्वस्व है। लग्न कुंडली यदि शरीर है तो नवांश कुंडली उसकी प्राण है। फलित ग्रथों को देखने पर विदित होगा कि कौन ग्रह किस नवांश में है फल कहने में इसकी सर्वत्र आवश्यकता पड़ती है अतः नवमांश से कोई भी विषय अछूता नहीं है। सर्वत्र यह आवश्यक है।

तथापि संतान, आजीविका, स्त्री या पति, शरीर का वर्ण और रूप, गुण, बुद्धि का विचार मुख्यतः होता है।

जन्मलग्न से पंचमेश, नवांशलग्न से पंचमेश, इन दोनों के स्थित भाव एवं राशि से लग्न से, नवांशलग्न से पंचम राशि से-और पंचम में बली ग्रहों की दृष्टि से संतान, उनकी सख्या, उनके सुख-दुख, की कल्पना की जाती है। जो अभ्यास से साध्य और बलाबल द्वारा विचारणीय है।

पूर्वोक्त सप्तमांश की भांति ही नवांशलग्न तथा उसके स्वामी के तुल्य शरीर का वर्ण, रूप, तथा गुणों को कहा जा सकता है।

जन्मलग्न से पंचमेश के नवांश, नवांश लग्न से पंचमभाव व पंचमेश की स्थिति के अनुसार बुद्धि तथा विद्या का विचार होता है।

जन्मलग्न से राज्येश जिस नवांश में हो-उनके अनुसार आजीविका बतलाई जाती है, जो वृहज्जातक के कर्मजीवाध्याय तथा जातक पारिजातादि अन्य फलित ग्रंथों में वर्णित है।

नवांशलग्न के सप्तमभाव की राशि, उसके स्वामी तथा जन्मलग्न से सप्तमेश की स्थिति से स्त्री (पति) कैसी मिलेगी, विवाह का समय तथा उसका सुख-दुःख कहा जाता है। जो फलित ग्रंथों में वर्णित है, स्त्री जातकाध्याय में इसका विशेष विचार है।

(६) द्वादशांश—इससे स्वास्थ्य तथा आयु का विचार होता है। कुछ आचार्य इससे पत्नी का विचार भी करते हैं। द्वादशांश लग्न से सप्तमेश और सप्तमभाव शुभ या पाप, बली या दुर्बल जैसा हो वैसा सुख-दुख की कल्पना करनी चाहिए।

इसी प्रकार द्वादशांश का लग्न और लग्नेश शुभ और बली हों तो शरीर सुख उत्तम दीर्घायु इसके बिपरीत निर्बल व क्रूर होने से रोगी तथा अल्पायु करते हैं।

(७) त्रिशांश—त्रिशांश का विचार मुख्यतः महिलाओं की जन्मकुण्डली में होता है। फलित ग्रंथों में स्त्रियों के आचरण तथा शील स्वभाव का विचार स्त्रीजातकाध्याय में लग्न और चन्द्रमा के त्रिशांश से ही किया जाता है।

मृत्यु का विचार ऊपर देष्काण से कह आये हैं, इस त्रिशांश से भी मृत्यु का विचार होता है। त्रिशांश लग्न से अष्टम में स्थित राशि, उसमें स्थित ग्रह तथा उसके स्वामी की स्थिति के आधार पर सुख पूर्वक मृत्यु या दुःख दुर्घटना से कुमृत्यु की कल्पना की जाती है। अष्टम राशि, अष्टमस्थ ग्रह, अष्टमेश में जो बलवान हो उसके तुल्य धातु, रोग से मृत्यु होगी। जो फलित ग्रंथों में संज्ञाध्याय में वर्णित है।

त्रिशांश के लग्न का भी विचार करना चाहिए।

अष्टम मंगल, सूर्य, राहु आदि पापग्रह दुर्घटना से मृत्यु करते हैं। बृहस्पति शुक्र की अष्टम में युति विष भय करते हैं।

यह सप्तवर्ग सम्बन्धी संक्षिप्त विवरण है। विशेष फलों को स्वानुभव एवं अभ्यास तथा फलित ग्रंथों के माध्यम से देखना तथा निश्चय करना चाहिए।

दशा-साधन

पिछले अभ्यासों में कौन ग्रह कैसा और क्या फल देगा यह जानने की विधि बतलाई जा चुकी है, यों तो जन्म कुण्डली में स्थित ग्रह अपने अच्छे या बुरे फल को पूरे जीवन में कुछ देंगे। लेकिन कौन सा जीवन का भाग उन फलों से विशेष प्रभावित होगा ? यह निर्णय दशा द्वारा होता है। महर्षि पराशर ने ४२ दशाओं का उल्लेख किया है।*

ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तकों ने अनेक प्रकार की सैकड़ों दशा कल्पित की हैं, मुख्यतः उन्हें चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) निसर्गायु—इसमें दशा के वर्ष और उसका क्रम प्रत्येक मनुष्य के लिये समान रूप से नियत है।

(१) पिण्डायु—इसका क्रम और दशावर्ष नियत नहीं हैं, ग्रहों की स्थिति के अनुसार बदलते हैं।

(३) अंशायु-इसमें ग्रहों के नवांश के आधार पर दशा बनती है जो नियत नहीं है।

(४) नक्षत्रायु—जन्मनक्षत्र के आधार पर इस दशा की गणना होती है।

निसर्गायु में कोई गणित नहीं है, जन्म से १ वर्ष तक चन्द्रमा, ३ तक मंगल, १२ तक बुध, ३२ तक शुक्र, ५० तक वृहस्पति, ६० तक सूर्य, ११० तक शनि और १२० तक लग्न की दशा रहती है। अपनी आयु में जो ग्रह जैसा होगा वैसा अच्छा या बुरा फल देगा। जैसे किसी की कुण्डली में वृहस्पति सर्वोत्तम शुभफल दायक हों तो ३३ से ५० तक का समय जीवन में सर्वश्रेष्ठ जायगा। कुल आयु १२० वर्ष मानी गयी है—

---

* अधिक जानकारी हेतु वृहत्पाराशर होरा तथा वृहज्जातक, जातक पारिजात देखें।

एकं द्वौ नव विंशतिर्धृतिकृती पंचाशदेषांक्रमात् ।
चन्द्रारेन्दुज शुक्र जीव दिनकृद्वैबाकरीणां समाः ।
अन्ते लग्नदशा ० ।

यह श्लोक कण्ठस्थ कर लेने से सुविधा होगी ।

पिण्डायु प्रसिद्ध दशा है और संभवत: फलादेश भी इसका प्रत्यक्ष घटित होगा, लेकिन जैसा कि मैंने पिछले अभ्यास में बतलाया था इसका गणित बहुत ही श्रमसाध्य है, इस जमाने में कोई एक दो हजार रुपये देकर कुण्डली बनवाये तभी यह दशा बन सकती है, यही कारण है कि आज इस दशा का नाम जानने वाले भी कम होंगे, इसका प्रयोग अब कुण्डलियों में एकदम बन्द हो गया है, इतना श्रम कौन करे और कौन करवाये ? मेरी अपनी धारणा तो यही है कि इसकी तुलना में और कोई दशा नहीं है । ज्योतिष समुद्र का मंथन करने वाले समुद्धारक आचार्य वराहमिहिर ने तो एकमात्र पिण्डायु दशा को ही आधार माना है । उन्होंने दूसरी दशाओं की चर्चा तक नहीं की । ग्रंथों के अवलोकन से विदित होता है कि पहले इसी दशा का प्रचलन था, क्योंकि प्राचीन आचार्य गार्गी, यम, यवनेश्वर, लघुजातक, स्वल्पजातक, सत्याचार्य, श्रुतकीर्ति प्रभृति आचार्यों ने इसी दशा को प्रधानता दी है ।

विशेष उल्लेखनीय यह है कि आयु का निर्णय यदि ठीक हो सकता है तो केवल पिण्डायु से ही संभव है । हम वृद्ध जनों से ठीक दिन समय आदि मृत्यु-काल बतलाने की भविष्यवाणियों की जो चर्चा सुनते हैं, लेकिन वैसी भविष्य-बाणी कर नहीं सकते—इसमें यही रहस्य है कि पुराने विद्वान इसी पिण्डायु द्वारा आयु का निर्धारण करते थे और आज के ज्योतिषी पिण्डायु को जानते तक नहीं । पिण्डायु का गणित आगे 'आयुसाधन' शीर्षक अध्याय में पढ़ेंगे ।

पिण्डायु की ही भांति लेकिन उससे कुछ सरल अंशायु है, इसका प्रचलन भी सम्प्रति नहीं है, अंशायु के आधार पर ही एक 'कालचक्री' दशा है । इस विषय में जानकारी के इच्छुक किसी अच्छी टीका के वृहज्जातक; जातक पारि-जात प्रभृति ग्रन्थों को देखें ।

सम्प्रति जो दशायें प्रचलित हैं उनमें नक्षत्रायु ही मुख्य हैं—विंशोत्तरी, परमायु, योगिनी, त्रिभागी, खंडदशा, अष्टोत्तरी, दशा आदि । इनमें भी

विंशोत्तरी का ही प्रचलन मुख्य है। देश भेद से कहीं अष्टोत्तरी, कहीं योगिनी का प्रचार है लेकिन इनका फल घटित नहीं होता, कुछ कहते हैं—सत्ययग में लग्नदशा, त्रेता में योगिनी द्वापर में परमायु और कलियुग में विंशोत्तरीदशा ही प्रत्यक्ष फलदायक हैं—

सत्ये लग्नदशा प्रोक्ता त्रेतायां योगिनी तथा।
द्वापरे परमायुः स्यात् कलौ पाराशरी दशा।

वास्तव में यह सही भी है कि नक्षत्रायु में और दशाओं की अपेक्षा विंशोत्तरी का ही फल ठीक मिलता है।

ऐसा भी मत है कि गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र, सिन्ध और पंजाब में अष्टोत्तरी प्रत्यक्ष फल देती है। इस कारण पश्चिम भारत में विंशोत्तरी के साथ अष्टोत्तरी का भी प्रचलन है। एक मत से कृष्णपक्ष में चन्द्रमा की होरा में, रात्री में जन्म होने पर अष्टोत्तरी का फल होगा।

गुर्जरे कच्छ सौराष्ट्रे पांचाले सिन्धुपर्वते।
देशेष्वष्टोत्तरी ज्ञेया प्रत्यक्ष फलदायिनी॥
कृष्णे चन्द्रस्थ होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता॥

जो भी हो सम्प्रति विंशोत्तरी दशा ही एक मुख्यदशा है, जिसका प्रचलन सर्वत्र और सर्वोपरि है अतः पहले इसी का उल्लेख करेंगे।

विंशोत्तरी दशा साधन

इस दशा में दशावर्ष नियत हैं, सूर्य ६ वर्ष, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, बृहस्पति १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष तथा दशाओं का क्रम भी इसी प्रकार (सू. चं. मं. रा. बृ. श. बु. के. शु.) है। सबसे पहले कौन दशा आरम्भ होगी, यह जन्म नक्षत्र पर निर्भर है, जन्म नक्षत्र में ७ जोड़कर ९ का भाग दें, शेष क्रम से दशा होगी, १ शेष में सूर्य, २ चन्द्रमा, ३ मंगल, ४ राहु इत्यादि। उदाहरण के लिये अश्लेषा जन्म नक्षत्र है, अश्लेषा नवां नक्षत्र है अतः ९ में ७ जोड़ा तो १६ हुए इसमें ९ का भाग दिया तो ७ बचे अर्थात् सातवीं (बुध की) दशा जन्म के समय आरम्भ होगी।

यदि जन्म अश्लेषा के आरम्भ में होता तो बुध दशा के पूरे १७ वर्ष होते, अश्लेषा जितना बीत चुका हो (जन्म के समय) उस अनुपात से दशा के वर्ष

घट जायेंगे। जितना भोग्य शेष हो उतनी दशा जन्म के समय शेष होगी। भुक्त-भोग्य दशा इस प्रकार निकालें—भयात के घटी-पलों के पल बनाकर उसे जो दशा आरम्भ में हो उनके दशा वर्षों से गुणा कर दें अब इसमें भभोग के पल बनाकर भाग दें लब्धि वर्ष होंगे। शेष को १२ से गुणाकर फिर भाग दें लब्धि मास होंगे, शेष को ३० से गुणाकर भाग दे लब्धि दिन होंगे। यह वर्ष, मास, दिन भुक्त होंगे। इन्हें कुल दशा वर्षों मे घटाने पर शेष भोग्य दशा होगी।

उदाहरण

मान लिया कि यहां पर अश्लेषा का भयात ५।१६ और भभोग ६२।१४ है, अश्लेषा की आरम्भ में बुध दशा हुई। अब भयात ५।१६ के पल बनाये ५ × ६० + १६ = ३१६ पल इन्हें बुध के दशा वर्ष १७ से गुणा किया ३१६ × १७ = ५३७२ हुआ, अब भभोग ६२।१४ के पल बनाये ६२ × ६० + १४ = ३७३४ हुए इनसे अब भाग दिया—

३७३४)५३७२(१ वर्ष
३७३४
————
१६३८
× १२
————
१९६५६(५ मास
१८६७०
————
९८६
× ३०
————
२९५८० (७ दिन
२६१३८
————
३४४२

अत: जन्म के समय १ व, ५—मा. ७ दि. व्यतीत हो चुके थे, इन्हें कुल बुध के दशा वर्ष १७ में घटाया—

१७—०—०
१—५—७
———

१५—६—२३ इतनी बुध की दशा शेष रही। तात्पर्य यह हुआ कि जन्म से १५ वर्ष ६ मास २३ दिन तक बुध की दशा रही। इसके बाद अगले ग्रहों के वर्ष जोड़ते जायं।

बुध—१५—६—२३ आयु तक,
+ ७—०—०
———
२२—६—२३ तक केतु
+२०—०—०
———
४२—३—२३ तक शुक्र,
+ ६—०—०
———
४८—६—२३ तक सूर्य
+१०—०—०
———
५८—६—२३ तक चन्द्रमा;
+ ७—०—०
———
६५—६—२३ तक मंगल,
+१८—०—०
———
८३—६—२३ तक राहु इत्यादि।

सुविधा के अनुसार इसे अंग्रेजी कलैण्डर या हिन्दी कलैण्डर (सम्वतों में) जोड़ लेते हैं।

उदाहरण के लिये मान लें कि जन्म सम्वत् २०२३ के स्पष्ट सूर्य ५।११ पर है अत :—

सम्वत्— स्पष्ट सूर्य
२०२३—५—११
+ १५—६—२३
———————————
२०३९—०—४ तक बुध दशा
+ ७—०—०
———————————
२०४६—०—४ तक केतु दशा, इत्यादि।
अथवा जन्म २८ सितम्बर, १९६६ है—
सन्—मास—दिनांक
१९६६—९—२८
+ १५—६—२३
———————————
१९८२—४—२१ तक बुध दशा
+ ७—०—०
———————————
१९८९—४—२१ तक केतु
+ २०—०—०
———————————
२००९—४—२१ तक शुक्र दशा इत्यादि।

सूर्यदशा मध्ये प्रत्यन्तर

सूर्यप्रत्यन्तर

	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु
मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि	५	९	६	१७	१४	१७	१५	६	१८
घ	२४	०	१८	६	२४	६	१८	१८	०

चन्द्रप्रत्यन्तर

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू.
०	०	०	०	०	०	०	१	०
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

विंशोत्तरी दशा मध्ये अन्तर्दशा

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
ग्र.	व.	मा.	दि	ग्र.	व.	मा	दि.	ग्र.	व.	मा	दि.	ग्र	व.	मा	दि.	ग्र.	व.	मा	दि	ग्र.	व.	मा.	दि	ग्र.	व	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	११	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

भौम व केतु प्रत्यन्तर

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	च
०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

राहुप्रत्यन्तर

रा	वृ	श	वु	के	शु	सू	चं	भौ
१	१	१	१	०	१	०	०	०
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

गुरुप्रत्यन्तर

वृ	श	वु	के	शु	सू	चं	मं	रा
१	१	१	०	१	०	०	०	१
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	१८	१२

शनिप्रत्यन्तर

श	वु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ
१	१	०	१	०	०	०	१	१
२४	१८	१९	२७	१६	२८	१९	२१	१५
९	२७	५७	०	१२	३०	५७	१८	३६

बुधप्रत्यन्तर

वु	के	शु	सू	च	म	रा	वृ	श
०	०	१	०	०	०	१	१	१
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

शुक्रप्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के
२	०	१	०	१	१	१	१	०
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रदशा मध्ये प्रत्यन्तर

चन्द्रप्रत्यन्तर

चं	मं	रा	वृ	श	वु	के	शु	सू
०	०	१	१	१	१	०	१	०
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

भौम व केतु-प्रत्यन्तर✪

मं	रा	वृ	श	वु	के	शु	सू	चं
०	१	०	१	०	०	१	०	०
१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	१७
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

राहुप्रत्यन्तर

रा	वृ	श	वृ	के	शु	सू	चं	मं
२	२	२	२	१	३	०	१	१
२१	१२	२५	१७	१	०	२७	१५	१
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

गुरोप्रत्यन्तरम्

वृ	श	वु	के	शु	सू	चं	मं	रा
२	२	२	०	२	०	१	०	२
४	१६	८	२८	२४	२४	१०	२८	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिप्रत्यन्तर

श	वु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ
३	२	१	३	०	१	१	२	२
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

✪ नोट—भौम व केतु के प्रत्यन्तर समान है, अन्तर इतना है कि केतु में पहले केतु के क्रम से चलेंगे।

बुधप्रत्यन्तर

वु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श
२	०	२	०	१	०	२	२	२
१२	२६	२५	२५	१२	२६	१६	८	२०
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५

शुक्रप्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	वु	के
३	१	१	१	३	२	३	२	१
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यप्रत्यन्तर

सू	चं	भौ	रा	वृ	श	वु	के	श
०	०	०	०	०	०	०	०	१
६	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौमदशा-केतुदशा मध्ये प्रत्यन्तर

केतु-भौमप्रत्यन्तर

भौ	रा	वृ	श	वु	के	शू	सू	च
०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२१	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
३१	५४	२८	७	४१	३१	२०	१८	१०

राहुप्रयन्तर

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
१	१	१	१	०	२	०	१	०
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

गुरुप्रत्यन्तर

वृ	श	वु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
१	१	१	०	१	०	०	०	१
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

शनिप्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
२	१	०	२	०	१	०	१	१
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
१	२३	१३	२०	५४	१०	१३	४२	४

बुधप्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
१	०	१	०	०	०	१	१	१
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
२६	४६	२०	४८	४०	४६	२४	२८	२२

शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
२	०	१	०	२	१	२	१	०
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

सूर्य प्रत्यन्तर

सू	चं	भौ	रा	बृ	श	बु	के	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

चन्द्र प्रत्यन्तर

चं	भौ	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
०	०	१	०	१	०	०	१	०
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहुदशा मध्ये प्रत्यन्तर

राहुप्रत्यन्तर

रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
४	४	५	४	१	५	१	२	१
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
४८	३६	२४	४२	४२	०	३६	०	४२

गुरुप्रत्यन्तर

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
३	४	४	१	४	१	२	१	४
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
१२	४८	२४	२४	०	०	०	२४	३६

शनिप्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ
५	४	१	५	१	२	१	५	४
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

बुधप्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श
४	१	५	१	२	१	४	४	४
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

केतु-भौम प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श	बु
०	२	०	१	०	१	१	१	१
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

शुक्रप्रत्यन्तर

शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श	बु	के
६	१	३	२	५	४	५	५	२
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यप्रत्यन्तर

सू	चं	भौ	रा	वृ	श	बु	के	शु
०	०	०	१	१	१	१	०	१
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

चन्द्रप्रत्यन्तर

चं	मं	रा	वृ	श	वु	के	शु	सू
१	१	२	२	२	२	१	३	०
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

गुरुदशा मध्य प्रत्यन्तर

गुरुप्रत्यन्तर

वृ	श	वु	के	शु	सू	च	मं	रा
३	४	३	१	४	१	२	१	३
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	५८	१२

शनिप्रत्यन्तर

श	वु	के	शु	सू	चं	भो	रा	वृ
४	४	१	५	१	२	१	४	४
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
२४	१२	१२	•	३६	०	१२	४८	३६

बुधप्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	वृ	श
३	१	४	१	२	१	४	३	४
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

केतु-भौमप्रत्यन्तर = देखें भौममध्ये गुरुप्रत्यन्तर

सूर्य प्रत्यन्तर = ,, सूर्यदशामध्ये ,,

चन्द्र ,, = ,, चन्द्रदशामध्ये ,,

राहु ,, = ,, राहुदशामध्ये ,,

नोट—प्रत्यन्तरदशा का मास, दिन, घट्यात्मक मान वही रहेगा। केवल इतना अन्तर है कि जैसे भौमप्रत्यन्तर (गुरुदशामध्ये) में प्रत्यन्तर भौम से प्रारम्भ होंगे, जब कि भौममध्ये गुरु में गुरु से प्रत्यन्तर प्रारम्भ होते हैं।

जैसे—गुरुमध्ये भौम में

मं	राहु	बु	श	इत्यादि
०	१	१	१	,,
१९	२०	१४	२३	,,
३६	२४	४८	१२	,,

भौममध्ये गुरु में

बृ	श	बु	इत्यादि
१	१	१	,,
१४	२३	१७	,,
४८	१२	३६	,,

इसी प्रकार अन्य प्रत्यन्तर भी समझें।

आगे और ग्रहों की महादशाओं में इसी प्रकार जानें, केवल जिस ग्रह का प्रत्यन्तर है वह प्रथम रहेगा और मास, दिन, घटयादि वही रहेंगे।

शुक्रप्रत्यन्तर

शु	सू	चं	भौ	रा	बृ	श	बु	के
५	१	२	१	४	४	५	४	१
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशा मध्ये प्रत्यन्तर

शनिप्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	बृ
५	५	२	६	१	३	२	५	४
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
१९	१७	७	२०	०	१०	७	१८	१६

बुधप्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	बृ	श
४	१	५	१	२	१	४	४	५
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
८	२८	२०	२४	४०	२८	१२	४	१६

शुक्रप्रत्यन्तर

शु	सू	चं	भौ	रा	बृ	श	बु	के
६	१	३	२	५	५	६	५	२
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनिमध्ये केतु—भौमप्रत्यन्र = भौममध्ये शनिप्रत्यन्तर

,,	सूर्य प्रत्यन्तर	= सूर्यमध्ये	,,
,,	चन्द्र ,,	= चन्द्रमध्ये	,,
,,	राहु ,,	= राहुमध्ये	,,
,,	गुरु ,,	= गुरुमध्ये	,,

बुधदशा मध्ये प्रत्यन्तर

बुध प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श
४	१	४	१	२	१	४	३	४
२	२०	२४	१३	१२	२०	९	२५	१७
४१	३१	२०	१८	१०	३१	५४	२८	७

शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श	बु	के
५	१	२	१	५	४	५	४	१
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शेष प्रत्यन्तर देखें

केतु—भौम प्रत्यन्तर	= भौम मध्ये बुध प्रत्यन्तर
सूर्य ,,	= सूर्य ,, ,, ,,
चन्द्र ,,	= चन्द्र ,, ,, ,,
राहु ,,	= राहु ,, ,, ,,
गुरु ,,	= गुरु ,, ,, ,,
शनि ,,	= शनि ,, ,, ,,

केतुदशामध्ये प्रत्यन्तर

केतु महादशामध्ये प्रत्यन्तर वही होंगे, जो भौम दशामध्ये प्रत्यन्तर हैं।

शुक्रदशामध्ये प्रत्यन्तर

शुक्र प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	भौ	रा	वृ	श	बु	के
६	२	३	२	६	५	६	५	२
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शेष प्रत्यन्तर देखें

सूर्य प्रत्यन्तर	=सूर्यदशा	मध्ये	शुक्रप्रत्यन्तर
चन्द्र ,,	=चन्द्र	,,	,,
भौम-केतु ,,	=भौम	,,	,,
राहु ,,	=राहु	,,	,,
गुरु ,,	=गुरु	,,	,,
शनि ,,	=शनि	,,	,,
बुध ,,	=बुध	,,	,,

पिछले अभ्यास में विंशोत्तरीदशा का क्रम और साधन बतलाया था। महादशा का समय लम्बा होता है और किसी के भी जीवन में इतना लम्बा समय एक सा नहीं जाता। उदाहरण के लिये शुक्र के २० वर्ष हैं जीवन में २० वर्ष का समय सदैव एक समान नहीं जायगा। अतः मुख्यदशा या महादशा एक लम्बे समय को बतलाती है, इस महादशा में भी कौन से वर्ष बहुत अच्छे; साधारण, या बुरे रहेंगे इनकी जानकारी हेतु अन्तर्दशा आवश्यक है।

अन्तर्दशा में प्रत्येक महादशा के समय को नवों दशाओं में विभाजित (दशावर्षों के ही अनुपात से) कर देते हैं जिसका समय ज्योतिष के ही ग्रंथों एवं प्रत्येक पंचांग में दिया रहता है। आरम्भ में जो महादशा होती है, उसी की अन्तर्दशा होती है, उसके आगे क्रमशः अन्तर्दशायें चलती हैं। जैसे सूर्य की महादशा

६ वर्ष है, इसमें सबसे पहले सूर्य की अन्तर्दशा होगी, फिर क्रम से चलेंगे जो इस प्रकार है—

सू. ० । ३ । १८

(३ मास १८ दिन)

चं. ० । ६ । ०

मं. ० । ४ । ६

इत्यादि ।

इस प्रकार ६ वर्ष में सूर्य से शुक्र तक सभी की अन्तर्दशा आ जायगी ।

पिछले अभ्यास में देखें—

४२ व. ६ मा. २३ दिन से ४८ व. ६ मा. २३ दि. तक सूर्य की महादशा निकली है, इसकी अन्तर्दशा इस प्रकार होगी ।

४२ । ६ । २३ से आरम्भ में सूर्य महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा ० । ३ । १८ रही, अर्थात्—

४२। ६।२३
+ ०। ३।१८
―――――
४२।१०।११ तक सूर्य में सूर्य
+ ०। ६। ०
―――――
४३। ४।११ तक सूर्य में चन्द्र
+ ०। ४। ६
―――――
४३। ८।१७ सूर्य में मंगल
+ ०।१०।२४
―――――
४४। ७।११ सूर्य में राहु
+ ०। ९।१८
―――――
४५। ४।२९ सूर्य में ब्रहस्पति
+ ०।११।१२
―――――

४६। ४।११ सूर्य में शनि
+ ०।१०। ६
———
४७। २।१७ सूर्य में बुध
+ ०। ४। ६
———
४७। ६।२३ सूर्य में केतु
+ १। ०। ०
———
४८। ६।२३ सूर्य में शुक्र।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी अन्तर्दशा लगानी चाहिए।

योगिनी दशा

जन्मनक्षत्र की संख्या में ३ जोड़कर ८ का भाग देने पर जो शेष बचे, उसके अनुसार जन्म के समय आरम्भ में योगिनी दशा होती है—

१ मंगला, २ पिंगला, ३ धान्या, ४ भ्रामरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का, ७ सिद्धा, और ८ शेष पर संकटा। इनका क्रम भी क्रमशः इसी प्रकार है, और यह दशायें अपने नाम के अनुसार ही मंगला, धान्या, भद्रिका, सिद्धा शुभ और पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा, अशुभ मानी जाती हैं। इसके दशा वर्ष भी अपनी संख्यानुसार अर्थात् मंगला १ वर्ष, पिंगला २ वर्ष, धान्या ३, भ्रामरी ४, भद्रिका ५, उल्का ६, सिद्धा ७ और संकटा के ८ वर्ष हैं।

जन्म के समय भुक्त भोग्य निकालने का क्रम भी विशोत्तरी के ही समान है। जिसकी दशा आरम्भ में हो उसके दशावर्षों से भयात के पलों को गुणना होगा, जैसे पिछले अभ्यास में विशोत्तरी के लिये बुध के दशा वर्ष १७ से गुणा किया था, यहां (जन्मनक्षत्र अश्लेषा ९+३÷८=४ शेष में भ्रामरीदशा में जन्म हुआ) भ्रामरी के वर्ष ४ से गुणा करेंगे।

भयात के पल थे ३१६×४=१२६४

इनमें भभोग के पलों का भाग लिया—

———

३७३४)१२६४(० वर्ष

×१२

———

१५१६८(४ मास
१४९३६
———
२३२
× ३०
———
६९६० (१ दिन
३७३४
———
३२२६

अर्थात् ० वर्ष ४ मा १ दिन जन्म के समय भ्रामरी भुक्त हो चुकी थी, इसको उसके कुल दशा वर्ष में घटाया—

४–०–०
०–४–१
———
३—७—२९ भ्रामरी शेष
\+ ५—०—०
———
८—७—२९ तक भद्रिका
\+ ६
———
१४...७—२९ तक उल्का इत्यादि ।

विशोत्तरी की भांति योगिनी की भी अन्तर्दशायें चलती हैं, उसका विवरण अगले पृष्ठ पर देखें ।

अष्टोत्तरी-दशा

इसका दशा साधन भिन्न है ।

दशेश	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	वृ.	रा.	शु.
ध्रुवा	२४०	१८०	२४०	१८०	२४०	१८०	२४०	१८०
दशावर्ष	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
	आ०	म०	ह०	अनु	पूषा	ध०	उभा	कृ०
जन्म	पु०	पूफा	चि०	ज्ये०	उषा०	श०	रे०	रो०
नक्षत्र	पुष्य	उफा	स्वा०	मू	अभि०	पूभा०	अ०	मृ०
	अश्ले०	०	वि०	०	श्र०	०	भ०	०

योगिनी दशा मध्ये अन्तर्दशा

(मास और दिन)

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
मं. ०।१०	पि. १।१०	धा. ३।०	भ्रा. ५।१०	भ. ८।१०	उ. १२।०	सि. १६।१०	सं. २१।१०
पि. ०।२०	धा. २। ०	भ्रा ४।०	भ ६।२०	उ. १०। ०	सि. १४।०	सं. १८।२०	मं. २।२०
धा. १। ०	भ्रा २।२०	भ. ५।०	उ. ८। ०	सि. ११।२०	सं. १६।०	मं. २।१०	पि. ५।१०
भ्रा १।१०	भ. ३।१०	उ. ६।०	सि. ९।१०	सं. १३।१०	मं २।०	पि. ४।२०	धा. ८। ०
भ. १।२०	उ. ४। ०	सि. ७।०	सं. १०।२०	मं. १।२०	पि. ४।०	धा. ७। ०	भ्रा १०।२०
उ. २। ०	सि. ४।२०	सं ८।०	मं. १।१०	पि ३।१०	धा. ६।०	भ्रा ९।१०	भ. १३।१०
सि. २।१०	सं. ५।१०	मं. १।०	पि. २।२०	धा. ५। ०	भ्रा ८।०	भ. ११।२०	उ. १६। ०
सं. २।२०	मं. ०।२०	पि. २।०	धा. ४। ०	भ्रा ६।२०	भ. १०।०	उ. १४। ०	सि. १८।२०
श्र. आर्द्रा.	ध. पुनर्वसु.	श. पुष्प.	अश्वि. ऽश्ले	भर. मघा.	कृ. पू. फा.	रो. उ. फा.	मृग. हस्त
चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु. पू. भा.	ज्ये. उ. भा.	मू. रे.	पू. षा.	उ. षा.

चक्र से स्पष्ट होगा, जैसे आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य या अश्लेषा जन्म नक्षत्र हो तो आरम्भ में सूर्य दशा होगी। मघा, पूफा, उफा में चन्द्रमा इत्यादि। दशाओं का क्रम उपर्युक्त है, यहां केतु की दशा नहीं होती। चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की दशा 'शुभ' और सू० मं० शनि, राहु की दशायें पाप कही जाती हैं।

स्पष्ट दशा साधन के लिये पहले पिछले अभ्यासों में बताई गई रीति से 'स्पष्ट भुक्त घटी' निकाल लें।

अब आरम्भ में 'शुभदशा' हो तो—

(अ) जन्मनक्षत्र मघा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृतिका में इसे इतना ही रहने दें।

(आ) पूफा, ज्येष्ठा, शतभिषा, रोहिणी हो तो इसमें ६० और जोड़ दें।

(इ) उफा, मूल, पूभा, मृगशिरा हो तो इसमें १२० जोड़ें। यह 'नक्षत्र भोग्य घटीगण' कहलायगा।

इसको ध्रुवांक (१८०) में घटाकर शेष को दशेश के दशावर्षों से गुणा करे, उसमें १८० का भाग दे, लब्धि दशा शेष होगी।

पापदशा में

(अ) जन्मनक्षत्र—आर्द्रा, हस्त, पुषा, उभा, हो तो स्पष्टभुक्तघटी को २४० में घटा दें।

(आ) पुनः, चित्रा, उ० षा०, रेवती हो तो स्पष्ट भुक्त घटी को १८० में घटा दें।

(इ) पुष्य, स्वाती, अभिजित् अश्विनी हो तो १२० में घटायें।

(ई) अश्लेषा, विशाखा, श्रवण तथा भरणी हो तो ६० में घटायें। यह 'नक्षत्र योग्य घटीगण' होंगे।

शेष को दशेश के दशावर्षों से गुणाकर २४० से भाग देने पर लब्धि भोग्य दशा वर्ष होंगे।

इसके आगे की दशायें जोड़ते जायं।

विंशोत्तरी योगिनी दशा की भांति अष्टोत्तरी की भी अन्तर्दशायें होती हैं, जो ग्रंथों में मिलेंगी। इस दशा का प्रचलन नहीं है।

उदाहरण

अश्लेषा जन्मनक्षत्र है, भयात ५/१६ भभोग ६२/१४ की स्पष्ट भुक्तघटी मोटे गणित से ५/६ हुई। पूर्वोक्त चक्रानुसार आरम्भ में सूर्य की पाप दशा में जन्म हुआ। नियम (ई) के अनुसार अश्लेषा में जन्म होने से ६०/० में घटाया—

६०।०
५।६
————
५४।५४
× ६ सूर्य के दशावर्ष
————
३२९।२४
————
२४०) ३२९ (१ वर्ष
२४०
————
८९
× १२
————
१०६८
+ २४
————
१०९२ (४ मास
९६०
————
१३२
× ३०
————
३९६० (१६ दिन
३८४०
————
१२०

अर्थात् जन्म के समय १ वर्ष ४ मा. १६ दिन सूर्य की दशा शेष हुई।

सूर्य १।४।१६
+ १५।०।०
————
१६।४।१६ तक चन्द्रमा
+ ८।०।०
————
२४।४।१६ तक मंगल, इत्यादि।

अष्टोत्तरी दशा में यदि जन्म नक्षत्र उत्तराषाढ़ा या श्रवण हो तो इसके लिये विशेष संस्कार है ।

(अ) यदि जन्म नक्षत्र उत्तराषाढ़ा हो तो—

उत्तराषाढ़ा की स्पष्ट भुक्तघटी ४५।० से कम हो तो इसे ४ से गुणाकर ३ का भाग लें लब्धि उ०षा० की स्पष्ट भुक्तघटी होगी । यदि स्पष्ट भुक्तघटी ४५।० से ऊपर हो उसमें ४५ घटाकर शेष को ६० से गुणाकर १९ का भाग दें लब्धि अभिजित् की भुक्तघटी होगी ।

(आ) श्रवण नक्षत्र हो तो—

स्पष्ट भुक्तघटी ४ तक हो तो उसमें १५ जोड़कर ६० से गुणे और १९ का भाग दे, लब्धि अभिजित् की स्पष्ट भुक्तघटी होगी । यदि श्रवण की स्पष्ट भुक्तघटी ४ से ऊपर हो तो उसमें ४ घटाकर ६० से गुणे और ५६ का भाग दें लब्धि श्रवण की स्पष्ट भुक्तघटी होगी ।

क्योंकि उत्तराषाढ़ा की अन्तिम १५ घटी और श्रवण के आदि की ४ घटी अभिजित है, अतः अभिजित् नक्षत्र का मान जानने को यह संस्कार आवश्यक है। इस प्रकार उत्तराषाढ़ा, अभिजित् अथवा श्रवण का संशोधित स्पष्ट भुक्तघटी प्राप्त होने पर इन स्पष्ट भुक्तघटी से पूर्वोक्त प्रकार दशा साधन करे ।

इस प्रकार हमने वर्तमान में प्रचलित कुछ मुख्य-दशाओं का वर्णन किया; जिज्ञासु छात्र एवं पाठक अन्य दशाओं के लिये बृहत्पाराशर होराशास्त्र आदि ग्रंथ देखें । पहले कह चुके हैं कि इसमें ४२ दशायें हैं ।

दशाओं का फल*

अब प्रश्न उठता है कि दशाओं का फल कैसे कहें ? इसके लिये त्रिधाफलों की कल्पना करनी चाहिए ।

(अ) ग्रहों को स्थिति के अनुसार-जैसा कि पांच प्रकार से ग्रहों का भावफल कहने की विधि पहले बतला चुके हैं ।

(आ) नैसर्गिक विशेषफल-इसकी आगे व्याख्या करेंगे ।

(इ) पंचधामैत्री के अनुसार—इसकी व्याख्या भी आगे करेंगे ।

इस प्रकार तीनों विधियों से दशा के शुभाशुभ फलों की तुलनाकर धैर्य पूर्वक फल कहने चाहिए ।

नैसर्गिक रूप से दशाफल

इसके अन्तर्गत भी कई प्रकार से विचार हैं—

(१) चं० बु० शु० वृ०—सौम्य ग्रहों की दशा सदैव शुभ और पापग्रहों की दशा सू० मं० श० रा० के० अशुभ होती है। शुभ ग्रह की दशा अन्य प्रकार से अशुभ भी होगी तो भी अधिक अनिष्ट न करेगी लेकिन पाप ग्रह की दशा अन्य प्रकार से शुभ हो तो भी शुभ फल के साथ-साथ कुछ कुप्रभाव भी करेगी ।

(२) पापग्रह अपनी दशा में आरम्भ में उच्चादि राशिजन्य फल, मध्य में भावजन्य फल और अन्त में दृष्टि जन्य फल देता है ।

शुभ ग्रह आरम्भ में भावजन्य, मध्य में राशिजन्य अन्त में दृष्टिजन्य फल देता है ।

---

* अधिक जानकारी हेतु देखें-वृहत्पाराशर होराशास्त्र, भार्गव नाड़िका ।

(३) शीर्षोदय राशि का ग्रह दशा के आरम्भ में पृष्ठोदयी राशि का अन्त में, उभयोदयी राशि का ग्रह निरन्तर फल देता है।

(४) जो ग्रह अपनी उच्चराशि से आगे नीच राशि में जा रहा हो उसकी दशा 'अवरोहिणी' नाम शुभ नहीं होती और नीच राशि से आगे उच्च राशि को जा रहा हो तो वह 'अवरोहिणी' नामक शुभ होती है।

(५) देष्काण-कुण्डली में अष्टमभाव में जो राशि हो उसका स्वामी 'खर' कहलाता है। और चन्द्रमा के नवांश से (नवमांश कुण्डली में) अष्टम नवमांश का स्वामी भी 'खर' कहलाता है। यह दशा कष्टकर एवं घातक होती है।

(६) जो ग्रह अष्टमेश के साथ हो, अष्टम हो, अष्टमेश का अधिमित्र हो, या पूर्वोक्त 'खर' हो, जिसकी अष्टम में पूर्ण दृष्टि हो—यह पांच प्रकार के ग्रह 'छिद्र' कहलाते हैं, जो कष्टदायक व अशुभ हैं।

(७) तीसरे वृहस्पति, सप्तममंगल, द्वादशसूर्य, अष्टमचन्द्र, लग्न का शनि सप्तमबुध, षष्ठशुक्र, नवमराहु, 'मृत्युगत' कहलाते हैं। इनकी दशा शुभ नहीं होती, कष्टकारक होती है।

(८) लग्नेश, चतुर्थेश, पंचमेश, नवमेश, दशमेश, और एकादशेश की दशा स्वभावतः शुभ और शेष भावेशों की दशा अशुभ होती है।

(९) उच्च, स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोणांश, वर्गोत्तम, मित्रक्षेत्री ग्रह की दशा शुभ तथा नीच, शत्रुग्रही अस्तंगत राहुयुक्त ग्रह की दशा अशुभ होती है।

(१०) लग्नेश यदि अष्टम हो तो लग्नेश होते भी वह दशा शुभ नहीं होती।

(११) पाप ग्रह की दशा में शुभ ग्रह का अन्तर हो तो आरम्भ में वह अशुभ बाद में शुभ होता है और शुभ ग्रह की दशा में पाप ग्रह का अन्तर हो तो आदि में शुभ अन्त में अशुभ होता है।

(१२) महादशा के स्वामी से अन्तर्दशा का स्वामी ६, ८, १२वें होना शुभ नहीं है। लेकिन तुला-मेष, वृश्चिक-मेष, तुला-वृष इनका षष्टाष्टम दोष नहीं है।

(१३) बृहस्पति तथा शुक्र केन्द्र में होते तो शुभ हैं, किन्तु यह केन्द्र के स्वामी हों तो इनकी दशा शुभ नहीं होती।

पंचधा मैत्री से

पंचधा मैत्री द्वारा जिसकी महादशा हो तथा जिसकी अन्तर्दशा हो—इन दोनों के परस्पर सम्बन्ध देखने चाहिए। यदि वे परस्पर अधिमित्र या मित्र हैं तो शुभ, सम हो तो मध्यम, शत्रु या अतिशत्रु हों तो अशुभ फल होगा।

इसके अलावा दशा-अन्तर्दशाओं का जो फल शास्त्रों में पूर्वाचार्यों ने कहा है, उसका भी सार लेना चाहिए। लेकिन दशाफल कहने का असली तत्व यही है, इस तत्व की उपेक्षाकार केवल ज्योतिषग्रंथों में लिखित फलों से दशाफल कहना यथार्थ एवं संतोषप्रद न होगा। क्योंकि इसी तत्व के आधार पर स्थूल रूप से वे फल कहे गये हैं।

(दशा-अन्तर्दशा का प्रभावशाली फल कथन को मद्रास सरकार का प्रकाशन 'भार्गव-नाडिका' अच्छा ग्रंथ है।)

फल कथन का उदाहरण

पिछले अभ्यास में हमने दशाओं के फल कहने के लिये सिद्धान्त बतलाये थे। अब छात्रों एवं पाठकों की सुविधा के लिए उदाहरण रूप में एक कुण्डली उपस्थित करते हैं—वृश्चिक लग्न, दूसरे शनि, पंचम राहु, सप्तम शुक्र, अष्टम सूर्य बुध, नवम बृहस्पति, दशम मंगल, एकादश चन्द्रमा और द्वादश केतु।

इस व्यक्ति की इस समय विंशोत्तरी महादशा में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है, इस अन्तर्दशा का क्या फल होगा?

यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि दशा भले ही हम पिण्डायु, अंशायु, परमायु, विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, नैसर्गिक आदि किसी भी विधि से निकालें, इन सिद्धान्तों से दशा का समय तो अवश्य भिन्न-भिन्न आयगा। किन्तु फल कथन की रीति सभी दशाओं में एक ही है। क्योंकि फल दशा से सम्बन्धित ग्रह का होगा, और उसका फल जानने की विधि समान हैं। केवल योगिनी दशा का फल अपने नामानुसार ही होता है।

अस्तु इस कुण्डली में वृहस्पति मध्ये मंगल अन्तर्दशा का फल इस प्रकार कहा जायगा।

सर्वप्रथम महादशा का विचार करना आवश्यक होता है। क्योंकि महादशा के १६ वर्ष हैं, यदि महादशा का फल शुभ हो तो उसके अन्तर्गत आने वाली अन्तर्दशा भी शुभ हो तो अतिश्रेष्ठ होगी और अन्तर्दशा अशुभ हुई हो तो भी महादशा के शुभ प्रभाव से अशुभ फल कम होगा। अथवा महादशा अशुभ हो और अन्तर्दशा शुभ फल सूचक हो तो अशुभ समय के बीच भी शुभ की आशा बंधेगी, और दोनों अशुभ हों तो अनिष्ट है। इत्यादि,

वृहस्पति का फल इस प्रकार है—

(१) अपनी स्थिति के अनुसार भावफल—

(दृष्टि)—लग्न तथा पंचम पर वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि, एकादश और षष्ट में ३-४, तृतीय में १-२ और व्यय तथा चौथे में १-४ दृष्टि है। क्योंकि वृहस्पति शुभ ग्रह है, अतः जिस-जिस भाव में वृहस्पित की दृष्टि है उस-उस भाव सम्बन्धी वृद्धि करता है। प्रत्येक भाव से किस-किस बात का सम्बन्ध है यह पिछले अभ्यासों में बतलाया जा चुका है। तदनुसार संक्षेप में स्वास्थ्य, विद्या, संतान, विषय में वृहस्पतिपूर्ण शुभफल दायक है। एकादश में ३/४ दृष्टि होने से लाभकर है, षष्ट में दृष्टि होने से शत्रु व रोगकारक भी है। तृतीय में १/२ दृष्टि उत्साह वृद्धिकारक व्यय में १/४ दृष्टि व्यय सूचक है और चतुर्थ १/४ दृष्टि सुख सम्पत्ति को शुभ है। निष्कर्ष यह रहा कि लग्न में पूर्ण दृष्टि से स्वास्थ्य को जहाँ शुभ है रोग में ३/४ दृष्टि होने से वहाँ रोग वृद्धिकारक भी हुआ अतः स्वास्थ्य को मध्यम ही हुआ। विद्या, संतान को सर्वांग से शुभ है। उत्साह वर्धक है, बाह्य सहायता प्रदायक है। लाभ में ३/४ और व्यय में १/४ दृष्टि है अतः व्यय होते भी लाभ को अधिक अच्छा है। पारिवारिक सुख, सम्पत्ति, वृद्धिकारक भी है।

(आ) युति—नवम भाव में शुभ ग्रह है, अतः नवम भाव सम्बन्धी फल वृद्धिकारक, धर्मकृत्य, सामाजिक यशदायक हुआ।

(इ) भावेश—वृहस्पति धनेश और पंचमेश होकर परमोच्च राशिगत नवम है। अतः विद्या, संतान, यश में वृद्धिकारक है।

(ई) राशिफल—भाव विचार में होता है, दशा विचार में नहीं बृहस्पति शुभ राशि का है अतः उसका शुभ फल और बढ़ गया।

(उ) वृहस्पति का ९ स्थान शुभ है, अतः वृहस्पति अधिक शुभफल देने में समर्थ हुआ।

(२) नैसर्गिक फल

(अ) वृहस्पति की दशा स्वभावतः शुभ है।

(आ) यह शुभ ग्रह होने से आरम्भ में भावजन्य, मध्य में राशि जन्य, अन्त में दृष्टि जन्य फल देगा।

(इ) वह परमोच्च में है अतः इसकी दशा शुभ है।

(ई) पंचमेश और परमोच्च होने से दशा शुभ है।

अतः हम कह सकते हैं कि उक्त कुण्डली वाले को वृहस्पति की दशा—

"वृहस्पति की १६ वर्ष की दशा जीवन में महत्वपूर्ण व्यतीत होगी। यह सम्पत्ति वृद्धि, पारिवारिक सुख, उन्नति, सामाजिक यश-प्रतिष्ठा, संतति सुख-दायक रहेगा। व्यय में १/४ दृष्टि और लाभ में ३/४ दृष्टि तथा यह धनेश भी होने से भावेशफलानुसार आर्थिक मामलों में भी उत्कर्ष सूचक है। स्वास्थ्य के पक्ष में पूर्ण, तथा विपक्ष में भी ३/४ (रोग) दृष्टि होने से स्वास्थ्य हेतु मध्यम तथा शत्रुवृद्धि सूचक भी जायगा। लेकिन कुल मिलाकर वृहस्पति की दशा जीवन में शुभ एवं श्रेष्ठ है।"

मंगल की अन्तर्दशा का फल—

दृष्टिजन्यफल—(पापग्रह होने से यह प्रधानतः अन्तर्दशा के अन्त में होगा)—मंगल की चतुर्थ में १ एकपाद, व्यय व सप्तम में १/२, द्वितीय और षष्ठ में ३/४ तथा लग्न और पंचम पर पूर्ण दृष्टि है। यह पापदृष्टि होने से इस अन्तर्दशा में इन भावों से सम्बन्धित विषयों की क्षति पूर्ण, त्रिपाद, अर्ध या एकपाद दृष्टि के अनुपात से क्षति होगी। लेकिन लग्न और षष्ठ मंगल की अपनी राशियाँ हैं अतः इन भावों से सम्बन्धित विषयों पर मिश्रित फल होगा।

भावजन्यफल—(मध्यमकाल) में दशभ में पापग्रह शुभ नहीं (युतिफल) लेकिन दशमस्थान मंगल का शुभ है (भावफल) अतः राज्यभाव को समफल हुआ। यह षष्ठेश और लग्नेश होकर दशम है अतः (भावेशफल) षष्ठ व लग्न भाव सम्बन्धी विषयों में वृद्धि कारक हुआ।

राशिजन्य—(दशा के अन्त में) मित्रराशि का दशम है अतः दशम भाव सम्बन्धी विषयों में शुभ हुआ ।

नैसर्गिकजन्य—पापग्रह की अन्तर्दशा (अशुभ), नीच-राशि से आगे होने से (शुभ), आरोहणी लग्नेश व षष्ठेश (लग्नेश शुभ षष्ठेश अशुभ अर्थात् मध्यम) मंगल की दशा मध्यम हुई। शुभ में पापान्तर होने से आदि में शुभ अन्त में अशुभ रहेगी। मंगल से गुरु बारहवें होने से मध्यम ।

मैत्रीजन्य—पंचधा मैत्री में बृहस्पति मंगल परम मित्र हैं अतः बृहस्पति में मंगल का अन्तर शुभ रहेगा ।

अर्थात्

निष्कर्ष यही रहा कि आरोहणी, लग्नेश, बृहस्पति का परममित्र होने से, मित्र क्षेत्री, दशमस्थित होने से, बृहस्पति की महादशा अच्छी होने से मंगल की अन्तर्दशा सामान्यतः शुभ जायगी ।

लग्नभाव सम्बन्धी मामलों में लग्न पर पूर्ण दृष्टि लेकिन पाप दृष्टि व स्वगृह होने से आरम्भ में सामान्यतः शुभ, लग्नेश होने से मध्य में शुभ रहेगा। राशिजन्य फल लग्नभाव पर नहीं है ।

धनभाव—३/४ पापदृष्टि होने से भावहानिकर ।

तृतीयभाव—इसमें दृष्टि आदि मंगल का किसी प्रकार सम्बन्ध नहीं है अतः इस भाव सम्बन्धी मामलों में कोई विशेष बात न होगी ।

चतुर्थभाव में ६/४ दृष्टि होने सामान्यतः कुफल सूचक ।

पंचमभाव—पूर्ण पाप दृष्टि-भाव सम्बन्धी कुफल (हानि) सूचक ।

षष्ठभाव—१/४ दृष्टि, भाव सम्बन्धी हानि सूचक लेकिन स्वराशि होने से भाववृद्धि सूचक भी अतः सम ।

सप्तमभाव—१/२ पापदृष्टि भाव सम्बन्धी क्षति सूचक ।

अष्टम—कोई विशेष फल नहीं, तटस्थ ।

नवम—तटस्थ ।

दशम—मित्र क्षेत्री, आरोहिणी, राशिजन्य व स्थान जन्य शुभ होने से भाव सम्बन्धी वृद्धि कारक ।

एकादश—तटस्थ ।

द्वादश—१/२ पापदृष्टि, भाव सम्बन्धी हानिकारक हुआ ।

आयु विचार*

ज्योतिष शास्त्र के होरा विभाग में सर्वाधिक महत्व का विचार आयु का है। प्रत्येक बालक के जन्म होते ही यह प्रश्न उठता है कि यह बालक दीर्घायु है अथवा अल्पायु। क्योंकि यदि जातक अल्पायु है तो भले ही उसके लक्षण, भाग्य योग कितने ही अच्छे क्यों न हों उनका कोई प्रयोजन नहीं। एतदर्थं आचार्यों ने कहा है—

पूर्वमायु: परीक्षेत पश्चाल्लक्षणमादिशेत्।
निरायुष: कुमारस्य लक्षणै: किं प्रयोजनम्।

प्राय: मारकेश की दशा में मृत्यु होती है। किन्तु कौन सा मारकेश किस समय में मरण कर देगा? बिना आयु की सीमा ज्ञात किये यह जानना असम्भव है। क्योंकि मारकेश कोई एक ही बलिष्ठ ग्रह नहीं होता, अपितु

(अ) द्वितीयेश।

(आ) सप्तमेश।

(इ) सहजेश।

(ई) अष्टमेश।

(उ) षष्ठेश।

(ऊ) व्ययेश।

(ए) तथा मारक स्थानों में स्थित पापग्रह।

क्रमश: यह सात मारकेश हैं, और प्रत्येक दशा में अन्तर्दशा के क्रम से इनकी दशा अवश्य आयेगी। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कम से कम पन्द्रह बीस १५/२० बार अवश्य मारकेश की दशा आयेगी, इन मारकेशों में कौन मारकेश कब प्राण लेवा हो जायेगा? यह जनाने को आयु का ज्ञान अत्यावश्यक है।

यदि आयु गणना पर यह ज्ञात हो जाय कि लगभग इतने वर्ष की आयु है, तो उस समय के निकट जो दशा मारकेश की आयेगी वही मारक होगी।

---

* इस अध्याय की मूल सामग्री बृहज्जातक में देखें।

किसी की कुण्डली में आयु गणना करने पर यह मालूम हो कि आयु लगभग ६० वर्ष की है, और उसके लगभग ६० वर्ष ६ मास पर षष्ठेश की दशा चलने वाली है, क्योंकि षष्ठेश भी मारकेश होता है, अतः निःसन्देह हम यह सकेंगे कि यह दशा मृत्युकारक है।

यदि आयु समाप्त हो रही है, तो उस समय में कोई साधारण मारकेश की दशा भी चले तो उसी में मृत्यु हो जायेगी और यदि आयु अभी शेष है तो भले ही बलिष्ठ मारकेश क्यों न आ जाय मृत्यु नहीं होगी, केवट कष्ट होगा, जीवन रह जायगा।

मारकाः बहवः खेटा यदि वीर्य समन्विताः।
तत्तद्दशान्तरे विप्र रोग कष्टादि सम्भवः॥

इसी हेतु ज्योतिर्विद लोग जहाँ पर आयु शेष होती है और मारकेश चलता है 'अल्पमारकेश' कहते हैं और जहां आयु समाप्त हो चुकी हो वहां 'महामृत्यु' कही जायगी।

आयु निर्णय के सम्बन्ध में सभी आचार्य एक मत नहीं हैं। शास्त्र प्रणेता मुन्यियों ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार आयु निर्णय करने के सिद्धांत स्थापित किये हैं, परस्पर उन सिद्धांतो में मतभेद भी हैं। यहां पर हम आयु निर्णय के कुछ प्रमुख सिद्धांतों का उल्लेख करेंगे। इन विभिन्न सिद्धांतों के द्वारा आयु निर्धारण कर तुलनात्मक अध्ययन से कोई एक निष्कर्ष निकालना चाहिए।

आधुनिक युग में सत्याचार्य का मत अधिक ग्राह्य है, और वह प्रमाणिक भी माना जाता है, आचार्य वराहमिहिर ने भी सत्याचार्य के सिद्धांत को ही सर्वश्रेष्ठ माना है, एतदर्थ हम सर्व प्रथम इसी का उल्लेख करते हैं।

—एक कुण्डली—

स्पष्टग्रह

सू.—२।८।५५।५५

च.—५।२७।२०।५७

मं.—४।१३।५५।५०

बु.—२।६।५४।३२ अस्त

बृ.—३।२।२७।१९

शु.—१।१९।३७।४१

श.—८।२६।१९।३० वक्री

लग्न—७।६।०।०

राहु—११।१८।१५।२३

केतु—५।१८।१५।२३

कलात्मक ग्रह बनाकर उसमें दो सौ का भाग देने से जो लब्धि आये वह यदि बारह से अधिक हो तो बारह से भाग देना जो शेष बचे वह वर्ष होंगे। २०० का भाग देने से जो शेष बचे वह कला और विकला को बारह से गुणा कर पुन: २०० का भाग देना, लब्धि मास होंगे, शेष को ३० से गुणा कर २०० का भाग देना लब्धि दिन होंगे, शेष को ६० से गुणाकर पुन: २०० का भाग देना लब्धि घटी होंगी। शेष को पुन: ६० से गुणाकर २०० का भागदें, लब्धि पला होंगे। इनका सबका जो योग होगा वही उस ग्रह की मध्यम आयु होगी।

उदाहरण—

जैसे सूर्य की आयु साधन करना है, स्पष्ट सूर्य (२।८।५५।५५) की कला बनाई तो २ राशि के ६० अंश इसमें ८ अंश जोड़े तो ६८ अंश इसे ६० से गुणा किया ४०८० हुआ इसमें ५५ कला जोड़े तो सूर्य ४१३५ कला ५५ विकला हुआ कला में २०० का भाग देने पर लब्धि २० मिले यह १२ से अधिक हैं, अत: १२ से भाग देने पर शेष बचा ८ (यह वर्ष हैं) कला में २०० का भाग देने पर शेष १३५ बचा था अत: १३५ कला ५५ विकला को १२ से गुणा करने पर १३५।५५ × १२ = १६२०। ६६० हुआ। विकला ६० से अधिक हैं अत: इनमें ६० का भाग देकर कला में जोड़ा तो सर्वणित १६३१ कला हो गये इनमें २०० का पुन: भाग दिया लब्धि ८ (यह मास हैं)। शेष ३१ बचे इन्हें ३० से गुणा किया ३१ × ३० = ९३० इसमें पुन: दो सौ का भाग देने पर लब्धि ४ (यह दिन हैं) शेष १३० को गुणा ६० से किया १३० × ६० = ७८०० इसमें २०० का भाग दिया यह लब्धि ३९ (घटी हैं) शेष कुछ नहीं बचा।

इस सब का योग—

	वर्ष मास, दिन, घटी
वर्ष	८—०—०—०
मास	०—८—०—०
दिन	०—०—४—०
घटी	०—०—०—३९

योग ८—८—४—३९ यह सूर्य की मध्यमायु है।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह की मध्यमायु ज्ञात करनी चाहिये अथवा सारिणी से आयु निकाले। उदाहरणार्थ जिस प्रकार इस कुण्डली में सूर्य की आयु निकली उसी प्रकार अन्य ग्रहों की आयु निकालने पर निम्न आयु निकलती है—

	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
सूर्य की आयु	८	८	४	३९	०
चन्द्रमा	५	२	१३	४२	३६
मंगल	४	२	४	३०	०
बुध	८	०	२६	९	३६
बृहस्पति	३	८	२४	५२	१२
शुक्र	२	१०	१९	४९	४८
शनि	७	१०	५	६	०
लग्न	४	९	१८	०	०
महायोग :	४५	४	२६	४९	१२

(ग्रहों के समान ही लग्न की आयु भी निकालनी चाहिये। राहु-केतु की आयु नहीं ली जाती है)

मध्यमायु में संस्कार

उपर्युक्त प्रकार से जो आयु निकली है, उसमें निम्नांकित संस्कार करना चाहिए, तब शुद्ध आयु निकलती है—

(१) जो ग्रह अपने उच्च का हो, अथवा वक्री हो उसकी प्राप्त मध्यमायु को तिगुना करें।

(२) जो ग्रह वर्गोत्तम नवांश में हो, अथवा अपने नवांश में हो अथवा अपने द्रेष्काण में हो उसकी मध्यमायु दो गुणा करनी चाहिये।

(३) जो ग्रह नीच राशि में हो उसकी आयु का आधा करें।

(४) शुक्र और शनि को छोड़कर कोई ग्रह अस्तगत हो तो प्राप्त आयु का आधा करें (शुक्र या शनि अस्त के होने पर भी वही आयु रहती है)।

(५) जो ग्रह अपने शत्रु के घर में हो, यदि वह वक्री नहीं है तो अपनी प्राप्त आयु का एक तिहाई कम हो जायगा। वक्री होने पर कम नहीं होगी। (इसके सम्बन्ध में कुछ आचार्यों का मत है कि मंगल को छोड़कर अन्य ग्रह शत्रु क्षेत्री हों तो आयु कम होगी।)

(६) पापग्रह यदि लग्न से द्वादश है तो उसकी सम्पूर्ण आयु कम हो जायेगी।

(७) ग्यारहवें पापग्रह प्राप्त आयु का आधा।

(८) दशम में एक तिहाई कम।

(९) नवम में एक चौथाई कम।

(१०) अष्टम में पांचवां भाग कम।

(११) सप्तम में पापग्रह षष्ठ भाग आयु कम करेगा।

(१२) द्वादश में शुभ ग्रह हो तो प्राप्त आयु का आधा ही रहेगा।

(१३) ग्यारहवें शुभ ग्रह चौथाई आयु कम होगी।

(१४) दशम शुभ ग्रह छठा हिस्सा आयु कम होगी।

(१५) नवें शुभ ग्रह आठवां हिस्सा कम होगी।

(१६) आठवें शुभ ग्रह दसवां हिस्सा कम होगी।

(१७) सातवें शुभ ग्रह बारहवां हिस्सा कम होगी।

(१८) यदि लग्न बलवान हो (स्वस्वामी युत उच्चग्रहयुक्त वर्गोत्तम आदि) तो लग्न स्पष्ट के समान आयु देती है इसे पूर्वोक्त प्रकार से साधित आयु में जोड़कर लग्न की आयु होगी। अर्थात लग्न स्पष्ट में जो राशि हो उतने वर्ष, शेष एक अंश में १२ दिन के हिसाब से और १ कला में १२ कला के हिसाब से जोड़ना चाहिये। जैसे लग्न स्पष्ट ३।५।७६ है, राशि ३ है अत: ३ वर्ष हो गये। ५ अंश = १ अंश में १२ दिन ५ × १२ = ६० दिन या दो मास। ७ कला है १ कला में १२ कला ७ × १२ = ८४ अर्थात् १ दिन २४ घटी हो गये। इनका योग।

३	०	०	०
०	२	०	०
०	०	१	२४
३	२	१	२४

यह वर्षादि लग्नायु हो गई। इसे मध्यम आयु में जोड़ना होगा।

विशेष नियम

मध्यमायु संस्कार करने में पूर्वोक्त जिन नियमों का उल्लेख किया गया है, उसमें यह ध्यान देने योग्य है कि—

(१) नियम संख्या २ या ३ में जहां ग्रह की आयु केवल एक बार द्विगुण या त्रिगुण होगी, अनेक बार नहीं—जैसे कोई ग्रह उच्च का हो, वक्री भी हो, वर्गोत्तम भी हो और अपने देष्काण में भी हो केवल सर्वप्रथम नियम से उच्च का होने से त्रिगुण किया जायगा, बार-बार त्रिगुण या द्विगुण नहीं।

(२) इसी प्रकार जो ग्रह एक बार आयु कम कर लेगा, पुनः उसकी आयु कम नहीं होगी (नियमों को क्रमशः देखना चाहिये।)

(३) नियम संख्या ६ से १७ तक में यह विचारणीय है कि यदि एक ही स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो जो ग्रह अधिक बलवान होगा, उसी की आयु कम करें। और ग्रहों की कम नहीं होगी।

उदाहरण आयु का संस्कार

सूर्य—इस पर नियम १० लागू होता है, अतः प्राप्त मध्यमायु का पांचवां भाग कम हो गया। शेष—

(८ । ८ । ४ । ३६
१ । ८ । २४ । ५६ पंचमांश घटाया।)
———————————
६ । ११ । ३९ । ४३ सूर्य की स्पष्ट आयु।

चन्द्रमा—यह वर्गोत्तम नवांश में है अतः इसकी आयु (नि० २) द्विगुण हो गई। ५।२।१३।४२।३६ × २
= १०।४।२७।२५।१२

चन्द्रमा शुभ ग्रह लग्न से ग्यारहवां है, (नि० १३) अतः एक चौथाई आयु कम होगी।

१० । ४ । २७ । २५ । १२
२ । ७ । ६ । ५१ । १८ ऋण
———————————
७ । ९ । २० । ३३ । ५४ स्पष्ट आयु।

मंगल—वर्गोत्तम नवांश में हैं, अतः नियम २ के अनुसार प्राप्तायु दो गुणा होगी।

४ । २ । ४ । ३०×२ = ८ । ४ । ९ । ०

तथा नियम ८ के अनुसार इस आयु का तृतीयांश कम होगा।

८ । ४ । ९ । ०
२ । ९ । १३ । ० ऋण
———————————
= ५ । ६ । २६ । ० मंगल की स्पष्ट आयु

बुध—इसमें अपने देष्काण का होने से आयु दो गुणा होगी और नियम ४ के अनुसार अस्तगत होने से आयु आधी होगी। अतः मध्यमायु को दूना किया फिर उसका आधा किया अतः वही आयु रही है, जो आई है। क्योंकि बुध की आयु अस्तगत होने से एक बार आयु घटा दी है, अतः नियम १६ के अनुसार दुबारा आयु नहीं घटेगी। एतदर्थ बुध की स्पष्ट आयु ८।०।२६।९।३६।

वृहस्पति—यह उच्च का है, अतः प्राप्त आयु तिगुनी हो जायेगी। यह वर्गोत्तम नवमांश में भी है किन्तु विशेष नियम १ के अनुसार आयु वृद्धि कर देने से दुबारा आयु वृद्धि नहीं होगी। तथा नियम १५ के अनुसार प्राप्तायु का अष्टमांश कम होगा।

मध्यमायु ३।८।२४।५२।१२ × ३
= ११।२।१४।३६।३६
ऋण १।४।२४।१९।३४ अष्टमांश

———————

९।९ २०।१७।२ स्पष्ट आयु

शुक्र—पर केवल नियम संख्या १७ लागू होता है। अतः प्राप्तायु में बारहवां हिस्सा कम होगा।

प्राप्तायु २।१०।१९।४९।४८
द्वादशांश ऋण ०। २।२६।३९। ९

———————

स्पष्ट आयु २। ७।२३।१०

शनि—वक्री है अतः निगम १ के अनुसार प्राप्त आयु त्रिगुण होगी।
प्राप्तायु ७।१०।५।६ × ३
= २३।६।१५।१८ यह शनि की स्पष्ट आयु।

लग्न—में विशेष बली नहीं है, अतः कोई संस्कार नहीं होगा। इस प्रकार शुद्ध आयु—

सूर्य—६ । ११ । ३९ । ४३
चन्द्र—७ । ९ । २० । ३३
मंगल—५ । ६ । २६ । ०
बुध—८ । ० । २६ । ९
वृह—९ । ९ । २० । १७
शुक्र—२ । ७ । २३ । १०
शनि—२३ । ६ । १५ । १८
लग्न—४ । ९ । १८ । ०

———————

महायोग—६९ । २ । ९ । १०

सत्याचार्य मत से आयु सारिणी

(राशि अंश)

अंशाः		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	मान
	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	वर्ष
राशयः	४	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	मास
	८	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
	५	९	९	९	९	१०	११	१०	११	११	११	०	०	०	०	१	वर्ष
राशयः	१	०	३	७	१०	९	६	२	१	४	८	०	३	७	१०	२	मास
	९	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२६	१२	दिन
	२	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	वर्ष
राशयः	६	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	मास
	१०	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
	३	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	वर्ष
राशयः	७	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	मास
	११	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन

सत्याचार्य मत आयु सारिणी

राशि-अंश

अंशाः		१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मानः
	०	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	वर्ष
राशयः	४	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	८	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
	५	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	वर्ष
राशयः	१	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	९	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
	२	१०	१०	११	११	११	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	वर्ष
राशयः	६	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	१०	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
	३	७	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	वर्ष
राशयः	७	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	११	०	१८	३	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन

(कला)

क० को०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
दिन	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	०	२	४
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

क० को०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
मास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
दिन	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	१	३	४	६	८	१०
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

क० को०	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मास	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिन	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

(विकला)

वि० को०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घटी	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१३	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३४
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

वि० को०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घटी	३६	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	५०	५२	५४	५५	५७	५९	१	३	४	६	८	१०
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

वि० को०	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
दिन	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घटी	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४०	४२	४४	४६
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

अतः ६९ वर्ष २ मास ९ दिन १० घटी की अनुमानित आयु सिद्ध हुई।

जिस कुण्डली का यह उदाहरण हमने दिया है उसमें सम्मवतः २०१० से सम्बत २०२६ तक वृहस्पति की महादशा चली है। इसमें सम्वत २०१८ से २०२१ तक शुक्र की अन्तर्दशा (पाराशरी दशानुसार) चलती है।

सामान्यतः वृहस्पति (द्वितीयेश) और शुक्र (सप्तमेश) दोनों मारकेश हैं, अतः वृहस्पति मध्ये शुक्रांतर में भी मृत्यु हो सकती थी। किन्तु आयु साधन करने पर यह पता चला कि आयु ६९ व. २ मा. १० दिन की है, तब जातक की आयु ३५ वर्ष की होगी। अतः मृत्यु नहीं होगी।

मय, यवनाचार्य, मणित्थ और पराशर मते आयु का विचार

सत्याचार्य के मतानुसार आयु साधन के बाद मय, यवन, मणित्थ और पराशर के मतानुसार आयु साधन लिखते हैं। इनके मतानुसार सूर्यादि ग्रहों की आयु नियत है—

ग्रह	उच्चस्थान राश्यादि	आयु व. मा.	राश्यादि नीचस्थान	आयु व. मा.
सूर्य	० । १०	१९ । ०	६ । १०	९ । ६
चन्द्र	१ । ३	२५ । ०	७ । १०	१२ । ६
मंगल	९ । २८	१५ । ०	३ । २८	७ । ६
बुध	५ । १५	१२ । ०	११ । १५	६ । ०
गुरु	३ । ५	१५ । ०	९ । ५	७ । ६
शुक्र	११ । २७	२१ । ०	५ । २७	१० । ६
शनि	६ । २०	२० । ०	० । २०	१० । ०

उपर्युक्त कोष्ठक में ग्रहों के उच्चस्थान और नीच-स्थान दिये हैं। जब ग्रह स्पष्ट इतना होता है तब वह उच्च या नीच का होता है, और उतनी उसकी आयु होती है, जैसे सूर्य स्पष्ट ०। १० होने पर सूर्य उच्च का होगा, और उसकी आयु १९ वर्ष होगी तथा स्पष्ट ६। १० होने पर नीच का होगा उसकी आयु ९ वर्ष ६ मास होगी, इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी है।

उच्चराशि या नीच राशि से ग्रह जितनी दूरी पर होते हैं, गणित करके कुण्डली के ग्रहस्पष्ट समान आयु निकालनी चाहिए।

उदाहरण के लिए पिछली कुन्डली में सूर्य स्पष्ट २ । ८ । ५५ । ५५ है। यह सूर्य की उच्चराशि से आगे है और नीचराशि की ओर जा रहा है, इसलिए उच्चराशि ०।१० और स्पष्ट सूर्य २ । ८ । ५५ ५५ का अन्तर किया तो—

२— ८—५५—५५
०—१०— ०—०
————————
१—२८—५५—५५

एक राशि, अट्ठाइस अंश, ५५ कला और ५५ विकला यह अन्तर रहा। क्योंकि उच्चराशि से नीच राशि का अन्तर ६ राशि होता है, और उसमें उच्च की आयु ९ व ६ मा. का अन्तर आता है, तो एक राशि में कितना अन्तर होगा ?

६ राशि में = ९ । ९ भागा ६ = १ व. ७ मास (१९ मास) पुन: एक अंश में = १ व. ७ मास भागा ३० = १९ दिन ।

पुन: एक कला में १९ दिन भागा ६० = १९ घटी । पुन: एक विकला में = १९ घटी भागा ६० = १९ पला ।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी ज्ञान करना चाहिए । इसके अन्तर को गुणा करके वर्षादि उच्च आयु में कम कर दें (क्योंकि यहां सूर्य उच्च से नीच को जा रहा है) वह सूर्य की मध्यमायु होगी :

यहां पर सूर्य का अन्तर राश्यादि १ । २८ । ५५ । ५५ है ।

१ राशि में अन्तर = १९ मास ।

२८ अंश में अन्तर = १९ दिन × २८ = ५३२ दिन ।

५५ कला में = १९ × ५५ = १०४५ घटी ।

५५ विकला में = १९ पला × ५५ = १०४५ पला । इन सब का योग—

मास	दिन	घटी	पल
१९	०	०	०
०	५३२	०	०
०	०	१०४५	०
०	०	०	१०४५
१९	५३२	१०४५	१०४५

अथबा—३ वर्ष १ मास, ९ दिन, ४२ घटी और २५ पला। इसको सूर्य की उच्च आयु में घटाया—

१९— ०— ०— ०— ०
३— १— ९— ४२—२५
१५—१०—२०—१७—३५

यह सूर्य की मध्यमायु हुई। इसी प्रकार औरों की भी।

दूसरी सरल विधि:—

यदि ग्रह उच्च से आगे नीच के अन्दर हो उच्चराश्यादि और ग्रहस्पष्ट का अन्तर करें। शेष अन्तर को जिस ग्रह की आयु निकालनी हो उसके उच्चराशि के आयु वर्षो से गुणा कर दें। यह क्रमश: मास, दिन, घटी, और पला होंगे। इसे उच्च आयु में घटा दें मध्यमायु हो जायगी।

और यदि ग्रह नीच राशि से आगे एवं उच्च के पहले है तो नीचराश्यादि और स्पष्ट ग्रह का अन्तर कर शेष को उच्च दशा वर्षों से गुणा करें। यह क्रमश: मास, दिन, घटी, पला होंगे। इसे नीचायु में जोड़ दें, मध्यमायु होगी।

उदाहरण के लिए चन्द्रमा स्पष्ट ५। २७। २०। ५७ है, यह उच्च से आगे नीच के अन्दर है अत: उच्च १।३ से इसका अन्तर-४। २४। २०। ५७ हुआ। इसे उच्चायुवर्ष २५ से गुणा किया-तो १००। ६००। ५००। १४२५ हुआ, अर्थात १०० मास, ६०० दिन, ५०० घटी और १४२५ पला, अथवा= १० वर्ष, ० मास, ८ दिन, ४३ घटी, और ४५ पला। इसे चन्द्र की उच्चायु में घटा दिया।

२५—०—०— ०— ०
१०—०—८—४३—४५
१४-११—३-१६—१५

यह चन्द्रमा की मध्यमायु हुई।

मंगल= मंगल स्पष्ट ४। १३। ५५। ५० यह नीच से आगे उच्च से पहले है अत: इसका नीच-राश्यादि से अन्तर किया।

४। १३। ५५। ५०
३। २८। ०। ०
०। १५। ५५। ५० × १५ (उच्चायुवर्ष)
= ०। २२५। ८२५। ७५०

अथवा—० वर्ष, ७ मास, २८ दिन, ५९ घटी, ३० पल।

इसे नीचायु में जोड़ा—

७	६	०	०	०
०	७	२८	५९	३०
= ८	१	२८	५९	३०

यह मंगल की मध्यमायु हुई।

इस प्रकार सभी ग्रहों की मध्यमायु निकालनी चाहिए। जिस कुण्डली के ग्रहों का हम यहां उदाहरण दे रहे हैं। उनके अनुसार सभी ग्रहों की मध्यमायु निम्न है—

सूर्य	१५	१०	२०	१७	३५
चन्द्रमा	१४	११	३	१६	१५
मंगल	८	१	२८	५९	३०
बुध	८	८	२२	५१	२४
बृहस्पति	१४	१०	२१	४७	५
शुक्र	१७	११	४	५८	३९
शनि	१६	३	२६	५०	०

लग्न की आयु–इस मत से लग्न की आयु साधन का यह प्रकार है कि लग्न के जितने नवांश-खण्ड बीत चुके हैं उतने वर्ष तथा जितनी कला (अंशों की, जो शेष हैं कला कर लें) हों, प्रतिकला पर एक दिन तथा ४८ घटी, तथा प्रति विकला पर एक घटी ४८ पला आयु होगी।

उदाहरणार्थं लग्नस्पष्ट ७। ६। ०। ० अर्थात वृश्चिक के ६ अंश। ३ अश तथा २० कला का एक खण्ड होता है, ६ अंश में एक खण्ड बीत चुका है, अत: १ वर्ष यह हुआ। शेष ३। २० से ६। ० तक का अन्तर २। ४० अर्थात दो अंश चालीस कला, अथवा १६० कला, इसे १ दिन ४८ घटी से गुणा किया—

१—४८ × १६०

= १६०—७६८०

अर्थात ९ मास १८ दिन।

इस प्रकार लग्न की आयु १ वर्ष; ९ मास १८ दिन सिद्ध हुई।

मध्यमायु में संस्कार

यहाँ भी मध्यमायु में संस्कार करने पर स्पष्ट आयु होगी। पिछले लेख में आयु संस्कार के जो नियम कहे हैं, वही नियम यहां भी काम देंगे। विशेषता यह है कि नियम संख्या १, २, ३, और १८ यहां नहीं लिये जायेंगे। केवल नियम ४ से १७ तक से संस्कारित करें।

(१) सूर्य पर नियम १० लागू होता है अतः प्राप्त मध्यमायु में पंचमांश कम किया—

१५—१०—२०—१७—३५
३— २— ४— ३—३१
———————————
१२— ८—१६—१४— ४ स्पष्ट आयु

(२) चन्द्रमा पर नियम १३ के अनुसार चतुर्थांश कम होगी -

१४—११— ३—१६—१५
३— ८—२४—१९— ४
———————————
११— २— ८—५७— ४ स्पष्ट आयु

(३) मंगल की आयु में नियम ८ के अनुसार ततीयांश कम होगा—

८—१—२८—५९—३०
२—८—१९—३९—५०
———————————
५—५— ९—१९—४० स्पष्ट आयु।

(४) बुध अस्त है, अतः नियम ४ के अनुसार आयु आधी होगी—

८—८—२२—५१—२४
४—४—११—२५—४२
———————————
४—४—११—२५—४२ स्पष्ट हुआ।

नोट—एक बार आयु घटा देने पर नियम १६ से दुबारा आयु नहीं घटायी जायगी।

(५)–बृहस्पति–नियम १५ के अनुसार अष्टमांश कम होगा।

१४—१०—२१—४७—१५

१—१०—१०—१३—२४

१३—०—११—३३—५१ स्पष्ट आयु।

(६) शुक्र-नियम १२ के अनुसार द्वादशांश कम होगा—

१७—११—४—५८—३९

१— ५—२७—५४—५१

१६— ५— ७— ३—४८ स्पष्ट आयु।

(७) शनि की आयु पूर्वोक्त ही रहेगी, उस पर कोई नियम लागू नहीं होता।

(८) लग्नायु में यहां इस मत से कोई संस्कार नहीं है अतः स्पष्ट आयु—

	वर्ष	मास	दिन	घटी	पला
सूर्य	१२	८	१६	१४	४
चंद्र	११	२	८	५७	११
मंगल	५	५	९	१९	४०
बुध	४	४	११	२५	४२
गुरु	१३	०	११	३३	५१
शुक्र	१६	५	७	३	४८
शनि	१६	३	२६	५०	०
लग्न	१	६	१८	०	०
महायोग—	७१	३	१९	२४	१६

इस प्रकार ७१ व. ३ मा. १९ दिन २४ घटी १६ पला की आयु सिद्ध हुई।

विशेष संस्कार

इस मतानुसार आयु साधन में एक और विशेष संस्कार है। यदि लग्न में पापग्रह बैठा हो (सू० मं० श० तथा क्षीण चन्द्रमा में कोई एक) तो संस्कारित आयु के महायोग को लग्न में जितनी संख्या का नवांश चल रहा हो, उससे गुणा करें, उसमें १०८ का भाग देकर लब्धि को उस महायोग में घटा दें, किन्तु यदि लग्नस्थ पापग्रह पर किसी शुभग्रह की दृष्टि हो तो लब्धि का आधा घटायें वह स्पष्ट आयु होगी।

कल्पना कीजिये कि लग्नस्पष्ट ५ । २४ । ८ । ३३ है, लग्न में पापग्रह शनि बैठा है, पूर्वोक्त प्रकार से संस्कारित आयु का महायोग ८० वर्ष है । यहाँ पर ३ । २० प्रतिखंड के हिसाब से कन्यालग्न में सात खण्ड भुक्त होकर आठवां चल रहा है, अतः आयु का महायोग ८० × ८ = ६४० इसमें १०८ का भाग देने पर लब्धि ५ वर्ष ११ मास, ३ दिन, २० घटी आता है । यदि लग्नस्थ शनि पर किसी शुभग्रह की दृष्टि होती तो इस लब्धि का आधा घटाया जाता, क्योंकि इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है, अतः—

८०—०— ०— ०
५—११—३—२०
७४— ०-२६—४०

यह स्पष्ट आयु हुई ।

जीवशर्मा और जैमिनीमते आयु का विचार

वराहमिहिर ने जीवशर्मा नामक ज्योतिर्विद के मत का भी उल्लेख किया है । इस मतानुसार जहां मणित्थ, यवन, मय आदि ने ग्रहों की उच्चायु भिन्न-भिन्न मानी है—वह ठीक नहीं है, और प्रत्येक ग्रह की उच्चायु वर्षादि १७ । १ । २२ । ८ । ३४ तथा नीचायुर्वर्षादि ८ । ६ । २६ । ४ १७ होनी चाहिए । इस उच्चायु और नीचायु को लेकर आयु निकालनी चाहिये— क्रिया वही है जो मय, यवनोक्त आयु साधन की है । प्रायः जीवशर्मा का मत अन्य आचार्यों को ग्राह्य नहीं है, अतः यह विधि उपेक्षित ही है ।

जैमिनी मत

अल्पायु योग	मध्यायु योग	दीर्घायु
लग्नेश, अष्टमेश,	लग्नेश, अष्टमेश,	लग्नेश, अष्टमेश,
चरराशि में, द्विस्वभाव,	चरराशि में, स्थिर,	चरराशि में, चर में
स्थिर में, स्थिर में,	स्थिर में, चर में,	स्थिर में, द्विस्वभाव में,
द्विस्वभाव, चर	द्विस्वभाव, द्विस्वभाव,	द्विस्वभाव, स्थिर

इस मतानुसार तीन प्रकार से आयु साधन इस चक्र से किया जाता है—

(१) लग्नेश + अष्टमेश से ।

(२) यदि चन्द्रमा लग्न या सप्तम में हो तो लग्न राशि + चन्द्र राशि से अन्यथा शनि राशि + चन्द्र राशि से ।

(३) लग्न राशि + होरालग्न राशि से ।

होरालग्न क्या है ?

इष्टकाल की घटी में ढाई का भाग देना, लब्धि राशि होगी, शेष के पल बनाकर और पल जोड़कर ५ का भाग देना यह अंश होंगे। इस राशि अंश को सूर्यस्पष्ट में जोड़ दें—जो राश्यादि होगी वही होरालग्न होगा। यहां पर कुछ आचार्यों का मत है कि पूर्वोक्त लब्धि राश्यादि को विषमलग्न (जन्मलग्न) हो तो सूर्य में जोड़ें, और सम हो तो लग्न में (जन्मलग्न) जोड़ें—वह होरालग्न होगा, किन्तु सम्प्रति यह मत मान्य नहीं है।

उदाहरण के लिये इष्टकाल २७। ४० है, इसमें ढाई का भाग दिया तो २७। ३० पर ११ लब्धि हुआ, शेष १० पला में ५ का भाग देने पर लब्धि २ हुआ अतः राश्यादि ११। २ को स्पष्ट सूर्य २। ८। ५५। ५५ में जोड़ा—

२। ८। ५५। ५५
११। २। ०। ०
१। १०। ५५। ५५ होरालग्न

यहां जोड़ राश्यादि १३ में १२ से भाग देने पर १। १० अर्थात् वृष होरालग्न सिद्ध हुआ।

इस कुण्डली के अनुसार (पिछले पृष्ठ देखे) आयुसाधन इस प्रकार होगा।

(१) नियम १ के अनुसार जन्मलग्नेश मंगल तथा अष्टमेश बुध क्रमशः स्थिर व द्विस्वभाव में हैं, अतः चक्रानुसार दीर्घायु सिद्ध हुई।

(२) नियम २ के अनुसार शनिराशि + चन्द्रराशि दोनों द्विस्वभाव हैं; अतः चक्रानुसार मध्यायु सिद्ध हुई।

(३) जन्मलग्न व होरालग्न दोनों की स्थिर राशि हैं, अतः चक्रानुसार अल्पायु सिद्ध हुई।

विशेष-क्रिया

यदि तीनों से एक ही आयु निकले तो ठीक है, नहीं तो जिसमें दो मत हों, उसे ग्रहण करें। तीनों का भिन्न मत होने से जन्मलग्न + होरालग्न का मत लेना चाहिए।

इस प्रकार दीर्घ, मध्य, अल्पायु स्थिर करनी चाहिए।

इसके बाद नियम १, २, ३, में जो जो राशियों और ग्रहों से आयु का विचार किया है उन सबके अंशों को जोड़कर ६ का भाग दें लब्धि जो प्राप्त हो उससे आयु निकलेगी।

जैमिनी मते आयु सारणी

अंशफल सारिणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

कलाफल सारिणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकलाफल सारिणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दिव	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६
पल	२४	४३	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनी मते आयु सारिणी

अंशफल सारिणी

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

कलाफल सारिणी

कला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकलाफल सारिणी

विकला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

१ अंश में आयु = १ वर्ष ० मास २४ दिन।
१ कला में आयु = ६ दिन २४ घटी।
१ विकला में = ६ घटी २४ पल।

इस उदाहरण में दी गई कुण्डली में—

(१) जन्मलग्नेश मंगल	—१३	५५	५० अंशादि है।
(२) अष्टमेश बुध	— ६	५४	३२
(३) शनि	—२६	६	३०
(४) चन्द्र	—२७	२०	५७
(५) लग्न	— ६	०	०
(६) होरालग्न	—१०	५५	५५
योग	—९१	१६	४४
इसका षष्टांश	—१५	१२	४७ हुआ।

क्योंकि एक अंश में आयु वर्षादि १ । ० । २४ होती है, अत: १५ में क्या होगी ? = १ । ० । २४ × १५ = १५ । ३६० या १६ । ० हुई।
इसी प्रकार १२ कला में । २४ × १२ = २ मास १६ दिन ४८ घटी। तथा ४७ विकला में ६ । २४ × = ५ दिन ० घटी ४८ पल।

कुल योग = १६ । ० । ० । ० । ०
० । २ । १६ । ४८ । ०
० । ० । ५ । ० । ४८

योग वर्षादि १६ । २ । २१ । ४८ । ४८ यह भुक्त आयु है। इस प्रकार वर्षादि जो आयु मिले, उसे पूर्वोक्त रीति से दीर्घ, मध्य, या अल्प जो आयु सिद्ध हो, उसके दशा वर्षों में घटा दें, स्पष्टायु होगी।

हमारे इस उदाहरण में तीनों विधियों से भिन्न भिन्न आयु निकली थी; तीनों के भिन्न होने पर होरालग्न के मत से अल्पायु मानें तो अल्पायु वर्ष

३२ । ० । ० । ०
ऋण १६ । २ । २१ । ४८

१५ । ९ । ८ । १२

यह स्पष्टायु सिद्ध होती है।

कुछ संशोधन

(१) कुछ लोगों का मत है कि पूर्वोक्त ६ आयुदाता ग्रहों एवं राशियों के अंशों का योग कर षडंश नहीं लेना चाहिए। अर्थात् यदि तीनों विधियों से एक ही आयु मिले तो तब यह क्रिया ठीक है। अन्यथा दो विधियों से एक तथा एक से पृथक आयु निकलने पर जिन दो बिधियों से एक आयु निकलती है, उन चार आयुदाता के अंशों का योग कर चतुर्थांश से आयु निकालें। और तीनों से पृथक आयु निकलने पर जिसमे आयु ग्रहण करें केवल उन दोनों के अंशों का योग कर उसके आधे से आयु निकालें। और भी छोटे-मोटे अनेक भेद हैं।

(२) लग्न चन्द्र लें या शनि चन्द्र ?

इस मत में भी विवाद है। कोई इस सूत्र का अर्थ चन्द्रमा कहीं भी क्यों न हो, लग्न व चन्द्रमा से मानते हैं, और कुछ लोग प्रत्येक स्थिति में चन्द्रमा और शनि से मानते हैं।

(३) दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु के भी तीन भेद हैं—

दीर्घायु = तीनों एक हों।	१२० वर्ष
दो मतों से दीर्घायु हो	१०८ वर्ष
एक ही मत से हो	९६ वर्ष
मध्यायु = तीनों एकमत हों	८० वर्ष
दो एकमत हों	७२ वर्ष
अकेला मत हो	६४ वर्ष
अल्पायु = तीनों एकमत हों	४० वर्ष
दो ही मत हों	३६ वर्ष
एक ही मत हो	३२ वर्ष

(४) अभी गत वर्ष मुझे ४००। ५०० वर्ष प्राचीन पाण्डुलिपियों में जो तैलगू भाषा में मद्रास प्रांत में उपलब्ध है, इस विषय में नये प्रमाण मिले हैं; यहां पर केवल उसका सार दे रहा हूं, प्रमुख संशोधन यह हैं—

(अ) चन्द्रमा भले ही कहीं हो, नियम २ में आयु साधन लग्न + चन्द्रमा से ही होगा, शनि + चन्द्र से नहीं।

(आ) होरालग्न साधन इस प्रकार है—दिन में जन्म हो तो दिनमान के, रात्रि में जन्म हो तो रात्रिमान के द्वादश भाग करें, एक भाग का एक खण्ड होगा। जन्मलग्न विषम हो तो इष्टकाल पर्यन्त जितने भाग हों उसे लग्न में जोड़ दें, और समलग्न हो तो उतने भाग घटा दें, यह होरालग्न होगा।

(इ) यदि जन्मलग्न स्थिर है तो नियम १ में आयु साधन लग्नेश + अष्टमेश न होकर लग्नेश + धनेश से होगा।

(ई) कारक जानने के लिये भाव का स्वामी जिस राशि में बैठा हो, उसका स्वामी उस भाव का कारकेश होगा। अष्टमेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी आयु कारक माना जायगा इत्यादि।

(उ) आयु प्रमाण यह है, ३३ तक अल्प, ६६ तक मध्य, और १०० तक पूर्ण।

(ऊ) यहां पर स्पष्टायु साधन आयु दाताग्रहों के अंशों से नहीं है। अपितु होरालग्न यदि प्रवेश हो रहा है तो निर्दिष्ट आयु पूर्ण होगी। नहीं तो अनुपात से। होरालग्न के खण्ड का ३३ भाग करें, एक भाग एक वर्ष का प्रमाण हो, जितने भाग बीते हों, उतने वर्ष घटा दें।

उदाहरण

उपरोक्त कुण्डली में जिसकी विधि से स्पष्टायु १५। ६। ८। १२ निकाली है, उसकी आयु इस नई विधि से देते हैं—

नियम 'इ' के अनुसार लग्नेश + धनेश से आयु = मध्य। नियम 'अ' से लग्न + चन्द्रमा से आयु = दीर्घ।

अब होरालग्न साधन करते हैं। दिनमान ३४। ४८ है, इसके बारह भाग करने पर २। ५४ का एक भाग हुआ इष्टकाल (२७।४०) में २६। ६ तक तो भाग व्यतीत हो चुके हैं, क्योंकि लग्न सम है, और नौ भाग पूर्ण होकर दशवां चला है, अतः लग्न को एक मानकर उलटे दस तक गिनने पर कुम्भ राशि होरालग्न सिद्ध हुई। अब लग्न + होरालग्न से आयु = अल्पायु सिद्ध हुई। यहां भी तीनों मतों से भिन्न भिन्न सिद्ध हुई हैं, ऐसी स्थिति में यहां भी वही नियम है। अतः लग्न + होरालग्न से अल्पायु हुई। अब नियम 'इ' के अनुसार होरालग्न का प्रवेश २६। ६ से है, इष्ट २७। ४० इनका अन्तर १। ३४ है, होरा खण्ड २। ५४ का है, इसके ३३ भाग करने पर लगभग ५ पला २२ विपल का एक भाग होता है, अतः अन्तर १। ३४ तक १७ भाग व्यतीत हुये हैं। एतदर्थ

अल्पायु के मान ३३। ०। ०।

ऋण १७। ०।

———————

स्पष्टायु = १६। ०।

पहले मत में = १५। ६। ८

सिद्ध होती है, दोनों में लगभग समानता है।

किन्तु यहां सत्याचार्य मते ६९। २। ९ वर्ष।

तथा मय, यवन, पराशरादिमते ७१। ३। १९ वर्ष।

इन दोनों में समानता है। एक रहस्य का उद्‌घाटन यहां पर अवश्य कर देना चाहता हूं कि जैमिनीय मत जो आज कल ठीक नहीं मिलता—इसका कारण ठीक से आयु साधन न कर पाना और इष्टकाल की अशुद्धियां हैं, मय, यवनादि से सत्याचार्य का मत अच्छा अवश्य है, जैसा कि वराह मिहिर ने भी सत्याचार्य का मत सर्वश्रेष्ठ कहा है। यह विस्तृत अन्वेषण का विषय है, इसमें अनेक तर्क वितर्क हैं, वास्तव में आयु साधन गर्भाधान काल से होना चाहिए। जिस व्यक्ति का यह जन्मांग है वह इस समय ३२ वर्ष में जीवित है।

ताजिक–ज्योतिष*

ज्योतिष शास्त्र के अनेक भेद हैं, इसके अन्तर्गत फलित में भी अनेकों भेद हैं, इन सबमें जो मुख्यत: इस युग की प्रचलित पद्धतियां हैं उनमें जातक व ताजिक मुख्य हैं। इनमें से जातक पूर्णत: प्राच्य पद्धति है और ताजिक भारतीय विद्वानों ने पाश्चात्य (यूनानी) पद्धति से लिया है जिसका प्रचलन हमारे यहां लगभग पिछले दो या डेढ़ सहस्र वर्षों से हो रहा है। जब हमारे यहां पाश्चात्यों ने पदार्पण किया, तभी परस्पर विद्या का आदान-प्रदान हुआ, भारतीयों ने पाश्चात्य जगत को अपना ज्ञान दिया जिसके लिये समस्त विश्व ऋणी है।

भारतीय नीति हमेशा उदार रही है, उन्होंने उदारता से अपना बहुमूल्य ज्ञान लुटाया और दूसरों से जो कुछ नया ज्ञान मिला, उसे ग्रहण करने में भी संकोच नहीं किया, इसका महान प्रमाण यही है कि भारतीयों ने यूनानियों से ज्ञान सीखकर उसे भारतीय लिपि संस्कृत में श्लोकबद्ध एवं लिपिबद्ध किया लेकिन यूनानी एवं अरबी शब्दों को उन्होंने ज्यों का त्यों प्रयोग किया है। वे चाहते तो इन अरबी शब्दों के स्थान पर संस्कृत के नये शब्द रख सकते थे।

ताजिक शब्द 'ताजा' से बना है, अर्थात् ज्योतिष की जो पद्धति ताजी भविष्यवाणी करे वह ताजिक है। जातक पद्धति में लम्बी दशायें ६ वर्ष से २० वर्ष तक चलती हैं, इतने लम्बे समय में जीवन एक-सा नहीं बीतता, काफी परिवर्तन हो जाता है। यद्यपि जातक में इस लम्बी अवधि को कम करने के लिये अन्तर्दशा, सूक्ष्मान्तर्दशा आदि का विधान है, लेकिन दशा-दशान्तर्दशा तक तो ठीक हैं (जो कि ३ मास से लेकर सवा तीन वर्ष तक चलती है) इसके बाद प्रत्यंतर्दशा का सूक्ष्म विभाजन करने पर फलादेश करना बहुत कठिन हो जाता है, क्योंकि उक्त स्थिति में वर्तमान दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मान्तर्दशा में किसका फल मुख्यत: होगा और इनके परस्पर विरोधी जो फल निकलेंगे उनमें सामञ्जस्य बिठाना बड़ा कठिन है। इसलिए विद्वानों ने वार्षिक फल जानने के

---

* 'ताजिक ज्योतिष' के लिये मूलरूप में "ताजिक नीलकण्ठी" देखें।

लिए ताजिक को महत्व दिया है, इसके द्वारा मास कुण्डली से मासिक व दैनिक फल भी कहा जा सकता है।

यह तो निर्विवाद सत्य है कि जातक ही ज्योतिष की मूल पद्धति है, और उसके द्वारा जो फल प्राप्त होगा वह अटल है, लेकिन ताजिक की सहायता से उसकी और पुष्टि हो जाती है। जहां तक मेरा अपना अनुभव है मैंने ताजिक और जातक के सामञ्जस्य से अद्भुत भविष्यवाणियां की हैं, जो सही भी सिद्ध हुई हैं।

उ० प्र० की भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीमती सुचेता जी का जन्म (जातक) दशा से राजयोग भंग था, और राजनैतिक क्षेत्रों में भो प्रबल धारणा थी कि उनका राज्य नहीं चल पायगा, लेकिन ताजिक पद्धति के सहयोग से मैंने भविष्यवाणी की थी कि आगामी निर्वाचन तक वे जरूर राज्य चलायेंगी। इसी प्रकार भू०पू० मुख्यमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी के जातकानुसार राजयोग भंग था, लेकिन यहां पर मैंने ताजिक की अपेक्षा जातक का सहारा लिया, और छः मास पूर्व ही उनके मन्त्रिमण्डल के पतन की भविष्यवाणी प्रकाशित कर दी जो कालान्तर में सत्य ही हुई। इस प्रकार मेरा स्वानुभव यही है कि फलादेश में जातक ताजक दोनों से जो बात प्रमाणित हो वह निःसन्देह सत्य होगी, और जिसमें परस्पर विरोध हो वहां पर सफलता संदिग्ध है। ऐसी स्थिति में ज्योतिर्विद का ज्ञान एवं उसका अनुभव ही यह निर्णय कर सकता है कि जातक का फल घटेगा या ताजिक का, इनमें कौन बली है ? यहीं पर ज्योतिषी की सफलता या असफलता प्रकट होती है।

ताजिक का आधार

पहले यह बता दें कि ताजिक का आधार क्या है ? जैसे जातक में जन्म के समय पर सम्पूर्ण गणना चलती है उसी प्रकार ताजिक में प्रतिवर्ष नये वर्ष के प्रवेश समय से गणना चलती है। जन्म के समय सूर्य की जो स्थिति होती है वही स्थिति प्रतिवर्ष जब-जब आती है, उसी समय को आधार मान कर वर्ष फल की गणना होती है।

सूर्य को एक परिक्रमा करने में ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल और ३० विफल का समय लगता है। अर्थात् प्रतिवर्ष इतने समय के अन्तर से सूर्य व पृथ्वी हमेशा एक-सी स्थिति में आ जाते हैं। लेकिन आधुनिक कुछ लोग उपरोक्त ३६५।१५।३१।३० के स्थान पर नये मान ग्रहण कर रहे हैं। इन नये मानों में भी एकरूपता नहीं है, कोई—३६५।१५।२२।५६।५२।१३ मानता है कोई—३६५। १५।२३ इनके विपरीत कुछ का कहना है कि ग्रहों की परस्पर आकर्षण शक्ति

से यह समय निश्चित नहीं है, इसमें कमी या वृद्धि सम्भव है अतः प्रतिवर्ष गणित द्वारा प्रत्यक्ष जो अन्तर निकले उसे ग्रहण करना चाहिए।

इन मतमतान्तरों से जहाँ नवीन छात्रों एवं जिज्ञासुओं में बड़ी असमन्जस है वहाँ पश्चिम का अन्धानुकरण करने वाले मति विभ्रमित कुछ धुरन्धरों का भी यही हाल है जो उपपत्ति को समझे बिना इस उहापोह में हैं कि प्राचीन मत लें या आधुनिक ? मेरी अपनी मान्यता अभी तक प्राचीन मत को लेने की है, क्योंकि मैंने नवीन मत और प्राचीन मत दोनों से कई वर्ष निकालकर परीक्षण किया है, नवीनमान से वर्ष निकाल कर फल सत्य घटित नहीं हुआ।

इसके अलावा सिद्धांत दृष्टि से भी नवीन मत का कोई औचित्य नहीं सिद्ध होता उदाहरण के लिये—

मान लिया अ-आ रेखा पृथ्वी (या पृथ्वी से देखने पर सूर्य) का परिभ्रमण पथ है। इस पथ पर किसी के जन्म समय सूर्य 'घ' बिन्दु पर था और उस समय बसन्त सम्पात (जिस बिन्दु पर सूर्य के आने से दिन रात बराबर होते हैं) 'ख' बिन्दु पर था (अर्थात् बसन्त सम्पात से सूर्य की दूरी १५ अंश थी)। अब एक वर्ष बाद क्योंकि सम्पात लगभग ५४ पला पीछे हटता है, अतः सम्पात (जो कि चल है) 'ग' बिन्दु पर चला जायगा, इस दृष्टि से नवीन मतावलम्बियों का यह कहना कि क्योंकि जन्म के समय सूर्य बसन्त सम्पात से १५ अंश पर था अतः इस वर्ष बसन्त सम्पात से १५ अंश 'क' बिन्दु पर होंगे अतः जब सूर्य 'क' बिन्दु पर आयगा तब नया वर्ष प्रवेश होगा (याद रहे कि 'घ' से 'क' तक आने में ३६५।१५।२२।५६।५२।१२ समय लगेगा) लेकिन शास्त्र सिद्धांत यह नहीं कहता कि बसन्त सम्पात से जब सूर्य की दूरी समान हो तब वर्ष प्रवेश होगा, बसन्त सम्पात से दूरी घटे या बढ़े, इससे प्रयोजन नहीं है (क्योंकि बसन्त सम्पात एक अस्थिर बिन्दु है) प्रयोजन तो यह है कि जन्म के समय सूर्य आकाश के जिस स्थान पर था, उस नियत स्थान पर सूर्य जब आयगा (चाहे बसन्त सम्पात से वह दूरी घटे या बढ़े) तभी वर्ष प्रवेश होगा—

''तत्कालार्को जन्म काल रविणस्यायदातत: ।
तत्रैवाब्दप्रवेशश्चेत् तिथ्यादेनियमोनतु ।।''

तात्पर्य यह हुआ कि सूर्य जन्म के समय 'घ' बिन्दु पर था अत: जब सूर्य 'घ' बिन्दु पर आयगा तभी वर्ष प्रवेश होगा, भले ही बसन्त सम्पात से यह दूरी १५ अंश के बजाय १५।०।५४ हो जायगी। क्योंकि 'घ' से 'घ' तक सूर्य की एक परिक्रमा ३६५।१५।३१।३० में पूर्ण होगी इसलिये यही मान मेरे मत से ठीक है।

सायन और निरयन गणना

सायन और निरयन गणना पद्धतियों का उदय तो ज्योतिष शास्त्र के आरम्भ से ही प्रचलित है, क्योंकि अयनांश की स्थिति सर्वकालीन है केवल सम्पात चलन के कारण ह्रास और वृद्धि होती रहती है किन्तु जब से देश में पाश्चात्य शिक्षा का प्रवेश हुआ तब से बिना भारतीय ज्योतिष के आधारभूत सिद्धांतों पर ध्यान दिये ही पाश्चात्यों के अन्धानुकरण में गौरव अनुभव करने वाले तथाकथित विद्वानों द्वारा जन-साधारण में भ्रम उत्पन्न किया जा रहा है। हमें पाश्चात्यों से या उनकी विद्या से घृणा अथवा द्वेष नहीं है, अपितु हम उनके नवीन ज्ञान को सादर ग्रहण करने के पक्षपाती हैं, किन्तु इसके यह माने नहीं हैं कि हम उनकी असंगत बातों का भी अन्धानुकरण करें।

सबसे पहले सायन और निरयन की परिभाषा कर देना देना आवश्यक है। यह बतलाया जा चुका है कि सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करने में हमारे पृथ्वी का पथ समतल नहीं है, अपितु २३ अंश झुकाव है जब पृथ्वी और सूर्य एक समतल पर आते हैं तब दिन-रात बराबर होते हैं। ऐसी स्थिति वर्ष में दो बार आती है, एक बसन्त सम्पात को (लगभग २१ मार्च) और दूसरी शरद सम्पात को (२३ सितम्बर के पास) बसन्त के समय आकाश में पृथ्वी से देखने से सूर्य जिस बिन्दु पर हो (पृथ्वी जिस बिन्दु पर होती है, पृथ्वी से सूर्य उससे १८० अंश दूरी पर दिखलाई देता है अत: बसन्त सम्पात के समय सूर्य हमें जिस स्थान पर दिखलाई देता है उसे ''बसन्त सम्पात बिन्दु'' कहते हैं, उस समय पृथ्वी उस बिन्दु से १८० अंश दूरी पर अर्थात् शरद सम्पात पर होगी) उसी स्थान को 'बसन्त सम्पात' कहते हैं इस स्थान को आकाश का आरम्भ मानकर जो आकाशीय गणना करते हैं, उसे 'सायन गणना' कहते हैं। इसके विपरीत सृष्टि के आरम्भकाल में जहां बसन्त-सम्पात हुआ था, उसी बिन्दु से

आकाश का आरम्भ मानकर गणना को 'निरयन-गणना' कहते हैं। बसन्त-सम्पात एक स्थान पर स्थिर नहीं है, यह आकाश में प्रति वर्ष पीछे की ओर हटता है, फिर आगे को चलता है, फिर उलटा चलता है। भारतीय मान्यतानुसार बसन्त सम्पात दीवाल घड़ी के पेण्डुलम की तरह है, जिसका केन्द्र स्थान सृष्टि के आरम्भ पर जहां बसन्त-सम्पात था वह है और यह कभी उसके आगे कभी पीछे निश्चित गति से घूमता है, क्योंकि सृष्टि के आरम्भ पर जहां बसन्त-सम्पात था वह उसका केन्द्र एक स्थिर है, एतदर्थ उसी को आकाशीय गणना का आरम्भ बिन्दु माना है। पुराने पाश्चात्य विद्वान भी ऐसा ही मानते थे, अरब तथा ग्रीक ज्योतिषी भारतीय मान्यता से सहमत थे (भारतीय ज्योतिष: शंकर बालकृष्ण दीक्षित, देखें) किन्तु सम्पात की परिधि में भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों में मतभेद है। पाश्चात्यों के मतानुसार अधिक से अधिक बसन्त सम्पात अपने केन्द्र से २२ अश आगे या पीछे तक जा सकता है, इसके बाद उसे वापस लौट आना चाहिये। किन्तु आजकल बसन्त सम्पात की दूरी २३ अंश से कुछ ऊपर पीछे है, जिसके कारण (यह दूरी २२ अश से अधिक हो जाने पर) पाश्चात्य अपने प्राचीन साहित्य पर विश्वस्त नहीं हैं, अब उनकी ऐसी धारणा है कि बसन्त-सम्पात २२ अश जाकर पेंण्डुलम की तरह वापस नहीं लौटता होगा बल्कि पूरे आकाश चक्र में घूमकर (उलटे) ही दुबारा केन्द्र स्थान पर आयेगा। इसके विपरीत भारतीय ज्योतिर्विज्ञान में बसन्त-सम्पात की अपने केन्द्र से २७ अंश तक पीछे और आगे गति मानी गयी है। इस प्रकार भारतीय ज्योतिष अब भी कसौटी पर खरा है। सम्पात की गति इतनी धीमी है कि इससे पहली बार सम्पात वापस लौटा था या नहीं—इतने पुराने कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, इस कारण सम्पात अपने केन्द्र से २७ अंश आगे पीछे घड़ी के पेंण्डुलम की तरह चलता है, या पूरे ३६० अंशों में घूमता है, यह अनिर्णीत ही है। इसकी सत्यता उस समय सिद्ध होगी जब लगभग ३०० वर्षों बाद सम्पात केन्द्र से २७ अंश पीछे जाकर और पीछे चला जायगा, या वापस लौटने लगेगा। ऐसी पर्याप्त सम्भावना है कि पाश्चात्यों ने जो अधिक से अधिक २२ अंश की दूरी स्वीकार की है वह अशुद्ध होगी, तथा भारतीय विद्वानों द्वारा निर्धारित २७ अश की सीमा सत्य सिद्ध होकर रहेगी।

अस्तु, सम्पात पूरे राशि चक्र का भ्रमण करे, या २७।२७ अश आगे पीछे घूमे, दोनों स्थितियों से गणना या सिद्धान्तों में कोई अन्तर नहीं आता। बसन्त सम्पात के केन्द्र स्थान (जहां सृष्ट्यारम्भ पर सम्पात था) से तत्कालीन बसन्त-सम्पात की जो दूरी होती है, इस दूरी का नाम 'अयनांश' है।

पाश्चात्य ज्योतिष का प्रयोजन केवल आकाशीय गणना तक सीमित है और यह सत्य है कि आकाशीय गणना या चमत्कार के लिये सायन गणना ही सही है, क्योंकि दिन-रात की क्षय एवं वृद्धि, ग्रहों का उदयास्त, सूर्य और पृथ्वी के पथ का वृत्त आदि सायन बिन्दु (सायन गणना) से ही सही होगी। इस बात से हमारे प्राचीन शास्त्रकार भी सहमत हैं, तथा भारतीय ज्योतिष में भी सम्पूर्ण आकाशीय गणना सायनमान से ही है। अतः इस बात पर दो मत नहीं हो सकते।

किन्तु भारतीय ज्योतिष का दूसरा भी प्रयोजन है—फलित का। फलित ज्योतिष में सायन गणना कथमपि स्वीकार नहीं हो सकती है, क्योंकि फलित ज्योतिष के जो सिद्धान्त बने हैं, वे स्वयं भी स्थिर हैं, और एक स्थिर बिन्दु को आधार मानकर बनाये गये हैं। सम्पात बिन्दु के चलायमान होने से प्रति वर्ष जो अन्तर आता है—सायनमान मानने से फलित के प्रतिवर्ष नये सिद्धान्त बनाने पड़ेंगे। भारतीय वैज्ञानिकों ने ग्रह नक्षत्रों के जो शुभाशुभ फल निर्धारित किये हैं, वे ग्रह नक्षत्रों के वर्ण (रंग) आदि को आधार मानकर सतत परीक्षण एवं अनुसन्धान के उपरान्त रासायनिक स्थिति पर स्थिर किये हैं। उदाहरण के लिए निरयन मान से ० से ३० रेखांश के मध्य के स्थान को 'मेष राशि' माना गया है, इस स्थान पर जो तारे हैं उनसे मेष (भेड) की आकृति बनती है और इस स्थान में अश्विनी, भरणी, कृतिका के जो तारे हैं वे सूर्य तथा मंगल के समान गुण धर्मी (समान रासायनिक स्थिति वाले) हैं। अतः इस (मेष राशि) को मंगल ग्रह का घर और सूर्य का उच्च स्थान (बली स्थान) माना गया है, अर्थात् सूर्य और मंगल जब मेष राशि के नक्षत्रों के समसूत्र में आयेंगे, तब समान गुणधर्मी नक्षत्रों के समक्ष आने पर उनकी शक्ति बढ़ जायगी, जो समान रासायनिक स्थिति पर सिद्ध है। इसी प्रकार और भी फलित ज्योतिष के सभी सिद्धान्त भौतिकी एवं रासायनिक स्थितियों पर निर्धारित किये गये हैं।

इसके विपरीत फलित ज्योतिष में तात्कालिक सम्पात (सायन) से आकाशीय गणना करने पर अर्थ का अनर्थ हो जायगा। जैसे आजकल सम्पात २३ अंश पीछे है अतः इस स्थान को आकाशीय गणना का आरम्भ मानने पर ० से ३० अंश तक उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी के तारे रहेंगे। इन तारों को मेष राशि में मानने पर न तो इनकी आकृति मेष की बनेगी, और न ये तारे मंगल या सूर्य के गुणधर्मी हैं। (ये तारे सौम्य—बृहस्पति तथा शुक्र के

गुणधर्मी हैं) अतः मेष राशि में सूर्य और मंगल का बली होना इससे सिद्ध न होने से फलित के सिद्धांत निष्फल हो जायेंगे। और यदि आकाशीय गणना इस स्थान से मानकर राशियों के नाम ज्यों के त्यों रहने दें। (राशियों का स्थान) तो हमको यह मानना होगा कि "मेषराशि ० से ३० अंश के स्थान का नाम नहीं अपितु २३ से ५३ अंश के स्थान का नाम है।" एक दो वर्षों में सम्पात चलायमान होने से यह स्थान भी हट जायगा, इस प्रकार प्रतिवर्ष परिभाषा बदलनी होगी, यह कार्य और भी दुष्कर होगा। प्रतिवर्ष नयी परिभाषा बनाइये, और उसे याद रखिये यह सर्वथा असंगत है।

इस प्रकार आकाशीय गणना के लिये सायन तथा फलित के लिये निरयन गणना जो हमारे शास्त्रकारों ने स्वीकार की है, यह यथार्थ में सही है।

फलित में सायन गणना सर्वथा असंगत है। पाश्चात्य ज्योतिषी जो सायन मान से ही जन्म कुण्डली आदि बनाते हैं वह उनकी फलित पद्धति के अनुसार ठीक है, क्योंकि उनके फलित ज्योतिष के सिद्धान्त उसी के अनुसार (हमारी प्रणाली से भिन्न) बने हैं। इसलिये पाश्चात्य प्रणाली का अनुकरण भारतीय ज्योतिष में कथमपि ग्राह्य नहीं होगा।

सम्पात चलन (Precession of equinoxes) के बारे में भारतीय नक्षत्रविद् सूर्य सिद्धान्तादि पांचों सिद्धांत कार (वर्तमान सूर्य सिद्धांत, सोम सि०, वशिष्ठ सि०, रोमक सि० और शाकल्योक्त ब्रह्म सिद्धांत) सम्पात का पूर्ण भ्रमण नहीं मानते—जिनका मत वास्तविक मान्य है। किन्तु मुँजाल (८५४ शक) और विष्णु-चन्द्र सम्पात का पूर्ण भ्रमण मानते थे। मुंजाल और विष्णु-चन्द्र को छोड़कर भारतीय सिद्धांतकारों के मतानुसार सम्पात का केवल ५४ अंशों में भ्रमण होता है। उनके मतानुसार निरयन गणना का प्रथम बिन्दु (जहां सृष्ट्यारम्भ पर सम्पात था) सम्पात बिन्दु का केन्द्र है। केन्द्र पर आकर २७ अंश आगे जाता है, फिर वापस आता है। इस प्रकार १०८ अंशों की एक परिक्रमा होती है। किन्तु अपने केन्द्र से २७ अंश से अधिक नहीं हटता। इस प्रकार सम्पात की गति घड़ी के पेण्डुलम से की गयी है। आर्य भट (द्वितीय) भी अयनांश को (सम्पात) को इसी प्रकार मानते हैं, किन्तु वे २७ के स्थान पर सम्पात की गति २४ अंश तक ही मानकर ९६ अंशों की एक परिक्रमा मानते हैं।

यूरोपीय विद्वानों ने भी सम्पात के बारे में अनुसन्धान किया है, १२५ ई० पू० में हिपार्कस ने, और इसके ३०० वर्षों बाद टालमी ने अयनगति ३६ विकला वार्षिक नियत की जो अशुद्ध है। १६वीं और १८वीं शताब्दि के मध्य इंगलिश, फ्रेंच तथा जर्मन विद्वानों ने अनुसंधान द्वारा ५०.२ विकला लगभग अयनगति सिद्ध की—जो आजकल मान्य है। कोलब्रुक महोदय के एक निबन्धानुसार पाश्चात्य ज्योतिषी भी सम्पात का पूर्ण भ्रमण न मानकर उपर्युक्त भारतीय मत के अनुरूप ही (घड़ी के पैण्डुलम की तरह) सम्पात का आन्दोलन मानते थे। अर्जा एल (११वीं शताब्दि ई०) १० अंश, थिबिथ बिन खोरा (१३वीं श०) २२ अंश, सम्पात का आन्दोलन मानते थे। किन्तु अब सम्पात २३ अंश पर होने पर यह मिथ्या ही सिद्ध हुआ। अरब के प्रसिद्ध विद्वान अलबटानी ने हमारे सूर्य सिद्धान्त के समान ही सम्पात गति मानी है। कुछ आधुनिक पाश्चात्य विद्वान् सम्पात का पूर्ण भ्रमण मानते हैं। सूर्य सिद्धान्तानुसार ७२०० वर्षों में सम्पात का एक परिभ्रमण पूर्ण होता है। कलियुगारम्भ के समय भी सम्पात वही था—जहां सृष्ट्यारम्भ पर था। दो तरफा घूमने के कारण वह इस केन्द्र पर प्रत्येक ३६०० वर्षों में आता है, तदनुसार ४२१ शाके में भी वह उस विन्दु पर था। अब आगे २२२१ शाके में जाकर पता चलेगा कि सम्पात २७ अंश तक जाकर वापस लौटता है या नहीं। इसी से सिद्ध होगा कि सम्पात का पूर्ण भ्रमण होता या नहीं।

अब आप अपने सामने दीवाल घड़ी कल्पना कर लें। घड़ी बन्द रहने पर जहां उसका पैण्डुलम स्थिर रहता है वह सम्पात का केन्द्र विन्दु (अथवा भार-तीय मत से आकाशीय गणना का आरम्भ बिन्दु) है यहाँ पर ० रेखांश विन्दु से राशियों की गणना करने पर 'मेष' 'वृष' की आकृति सिद्ध होती है। मान लीजिये यह बिन्दु आसाम है।

आजकल सम्पात २३ अंश पीछे हटा है, मान लीजिये वह स्थान कलकत्ता है पश्चिमी लोग वर्तमान सम्पात से ही ३०–३० अंशों की राशियाँ गिनते हैं, भले ही उस खगोलीय स्थान में वह राशियों की आकृति मिले या न मिले।

जैसे आसाम को सम्पात विन्दु मानने पर रंगून मेष राशि में पढ़ेगा और कलकत्ता मीन में। लेकिन कलकत्ता से गिनेंगे तो मेष बंगलादेश पड़ेगा, और मीन पश्चिम बंगाल, बिहार में।

भारतीय मत से मेष, वृष की आकृति ठीक उसी राशि में रहती है, लेकिन पश्चिमी लोग जिसे मेष कहते हैं उसमें मछली के जोड़े (मीन), मेष में बैल(वृष)

की आकृति हुई। भारतीय कहते हैं सम्पात कहीं हो आकाश में नक्षत्रों का स्थान नियत है, लेकिन पश्चिमी लोगों का कहना है कि सम्पात के हिसाब से नक्षत्रों का नाम भी बदल दो जैसे :—

सम्पात (आसाम) से आगे रंगून था। अब कहना होगा सम्पात (कलकत्ता) से आगे बंगलादेश है, अर्थात् अब जबरदस्ती बंगलादेश को "पश्चिमी बगाल" और रंगून को बंगलादेश कहना होगा।

इसी पश्चिमी मूर्खता की नकल हमारे भारतीयों ने भी की है, जिसके फल स्वरूप दासत्व का प्रतीक राष्ट्रीय शक—सम्वत् राष्ट्र पर लादा गया है।

भारतीय विधि वैज्ञानिक है, अत: राशि का आधार चन्द्रमा से ही तथा निरयन गणना से ही करना चाहिए।

वर्षमान के बारे में मतभेद प्राचीनकाल से भी हैं, जो निम्न तालिका—नुसार स्पष्ट है—

	वेदांग ज्योतिष में दिनादि	३६६।०।०।०
अति प्राचीन	वैतामहसिद्धान्त	३६५।२१।२५।०।०
	पुलिश सिद्धान्त	३६५।१५।३०।०।०
	प्राचीन सूर्य सिद्धान्त	३६५।१५।३१।३०।०
	रोमक सिद्धान्त	३६५।१४।४८।०।०
आधुनिक पंच सिद्धांत	सूर्य सिद्धान्त	३६५।१५।३१।२४
	वशिष्ठ सिद्धांत	,,
	शाकल्य	,,
	रोमक सिद्धान्त	,,
	सोम सिद्धान्त	,,
	नवीन केतकी मते	३६५।१५।२२।५३

इस तालिका से स्पष्ट है कि केतकी (जो अभी इसी शताब्दि की रचना है) छोड़कर शेष सभी सिद्धांत ३६५।१५।३१।३० के ही निकट हैं। इनमें परस्पर २।३ पला से अधिक अन्तर नहीं है। ज्योतिष के आदि इतिहास से लेकर ग्रहलाघव तक ज्योतिर्विदों ने वेध से देखकर इसी वर्ष मान को सही पाया, तो क्या केवल ४००-५०० वर्षों में ही इतना अन्तर आ गया ? फिर भी हमारा कोई दुराग्रह नहीं है जिसकी जिस शास्त्र पर, सिद्धान्त पर, श्रद्धा हो और जिस

सिद्धांतानुसार वर्षफल का फल सही घटित हो उसी सिद्धान्त को ग्रहण करना चाहिए, ज्योतिष अपने आप में स्वयं प्रमाण है। अस्तु, सौर वर्षमान के अर्थ यह हुए कि सूर्य आज जिस स्थिति में है, उसी स्थिति में पुनः आज से ३६५ दिन १५ घटी ३१ पल और ३० विपल में आयगा। यह ३६५ दिनों में सात का भाग दिया तो लब्धि ५२ सप्ताह निकल गये, शेष बचा एक। अर्थात् ३६५ दिनों के अन्तर से जो अगला दिन आयगा वह आज के दिन से एक दिन आगे– अर्थात् आज रविवार है तो रविवार = १ + १ = २ सोमवार का दिन होगा। अतः वर्तमान समय दिनादि में १ वार, १५ घटी ३१ पला ३० विपला जोड़ने से जो समय आयगा, उस समय में अगले वर्ष सूर्य उसी स्थिति पर होगा, जिस स्थिति में इस समय है।

अतः ३६५।१५।३१।३०

अथवा १।१५।३१।३० इसे वर्ष ध्रुवक कहते हैं।

उदाहरण के लिये इस वर्ष मेष संक्रान्ति बुधवार को १४ घटी १३ पल पर है तो अगले वर्ष कब किस समय होगी ?

इस वर्ष = वार–घटी–पल

(बुध चौथावार है) ४–१४–१३

\+ ध्रुवक १– ५–३१–३०

= ५–२९–४४–३०

अर्थात् अगले वर्ष वृहस्पतिवार को २९ घटी ४४ पला ३० विपला पर मेष सक्रान्ति होगी।

ध्रुवक सारिणी

अगले पृष्ठों पर 'वर्ष ध्रुवक सारिणी' दी है, उससे यह पता चल जाता है कि एक वर्ष में वारादि १।१५।३१।३० का अन्तर पड़ता है तो २, ३, ४, ५ आदि वर्षों में क्या अन्तर पड़ेगा ? यह अन्तर स्वयं भी निकाल सकते हैं, जैसे एक वर्ष में इतना है तो सात वर्ष में क्या होगा ?

= १।१५।३१।३० × ७

= १।४८।४०।३०

वार की संख्या सात से ऊपर होने पर सात से भाग देकर लब्धि छोड़ दें, शेष ग्रहण करें। लेकिन सारिणी से सुविधा होती है समय बचता है।

वर्ष-ध्रुवक सारिणी

गत वर्ष	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वा.	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घ.	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३
प.	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गत वर्ष	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वा.	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घ.	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
प.	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	.०	०

गत वर्ष	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
वा.	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
घ.	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्ष-ध्रुवक सारिणी

गत वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
वा.	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६
घ.	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गत वर्ष	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वा.	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घ.	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६
प.	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गत वर्ष	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
वा.	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४
घ.	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५
प.	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२
बि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

इसी आधार पर वर्ष निकाला जाता है। 'वर्षलग्न' निकालने के लिये जन्मपत्र की प्रतिलिपि आवश्यक है, जिसमें से सर्वप्रथम यह जानना होगा—

(१) जन्म का वर्ष।

(२) जन्म के समय सूर्य किस राशि में और कितने अंश पर था या अंग्रेजी जन्मतिथि क्या थी।

(३) जन्म का समय 'इष्टकाल'।

(४) और जन्म का दिन।

सर्वप्रथम वर्तमान वर्ष में जन्म के वर्ष को घटा दें, यह उसके गतवर्ष होंगे, अर्थात् उसकी आयु के इतने वर्ष पूरे हो गये, अगला वर्ष प्रारम्भ होगा। तदुपरान्त जन्मकालीन वार, घटी, पल, विपल में जितने 'गतवर्ष' हों उसका वारादि ध्रुवक जोड़ दें। जो योगफल आयगा, उसी वार व समय पर उसका अगला वर्ष प्रवेश होगा।

उदाहरण के लिए एक सज्जन का जन्म सम्वत् १९८८ शाके १८५३ सन् १९३१ (२४ जून) में मिथुन के सूर्य ९ अंश पर बुधवार को २५।४० घटी पल पर है, इनका वर्तमान वर्षलग्न देखना है।

वर्तमान वर्ष सम्वत् २०२५
१९८८ घटाया
―――――
३७ गतवर्ष

अर्थात् इस वर्ष ३७ वर्ष पूरे होकर ३८वां वर्ष प्रवेश हुआ (शाके या सन् में घटाने से भी यही होगा) तदुपरान्त-जन्मवार बुध है जो चौथा वार है अतः जन्म के वार, घटी, पल में ३७ गतवर्ष का ध्रुवक जोड़ा (देखें: सारिणी)

	वार	घटी	पल	विपल	
जन्मवारादि	४	२५	४०	०	
ध्रुवक	४	३४	२५	३०	जोड़ा
=	२	०	५	३०	

अर्थात् सोमवार को ० घटी ५ पला ३० विपला पर ३८वां वर्ष प्रवेश होगा। अब प्रश्न उठता है सोमवार कौन सा ? यहां वह सोमवार लिया जायगा जिस सोमवार को मिथुन का सूर्य ९ अंश पर होगा।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वर्ष उसी समय प्रवेश होता है, जिस स्थिति पर जन्मकलीन सूर्य हो। चान्द्रतिथि से यहाँ कोई प्रयोजन नहीं है, चान्द्रमान

से वर्ष ३५४ दिन का है इस प्रकार सौरमान व चान्द्रमान में प्रतिवर्ष लगभग ११ दिन का अन्तर आ जाता है, १ × ३ = ३३ इस तरह लगभग तीन वर्ष में अधिमास बढ़ाकर मेल बैठाया जाता है । इसलिये यह आवश्यक नहीं है कि जिस चान्द्रतिथि को जन्म हुआ हो उसी के आस पास वर्षप्रवेश होगा । यदि जन्म चैत्र शुक्ला ५ का है तो वष प्रवेश वैशाख कृष्ण में, चैत्रकृष्ण में भी किसी दिन हो सकता है । चान्द्रतिथि धार्मिक दृष्टि से मा.य है, चान्द्रमान से जो जन्मतिथि हो उसी दिन जन्मोच्छब मनाया जाता है, लेकिन ज्योतिष गणित में सौरतिथि ली जायगी ।

तत्कालार्को जन्मकाल रबिण स्याद्यत: सम: ।
तेदैवाब्द प्रवेश: स्यात्तिथ्यादेर्नियमो नतु ।।

कुछ स्थानों में, और कुछ सम्प्रदायों में तो जन्मोच्छव भी सौरतिथि को मनाया जाता है । एक बात स्पष्ट कर दूं कि सौर कलैण्ड़र में तथा अंग्रेजी ग्रेग्रोरियन कलैण्डर में सामञ्जस्य है, इसका भी वषमान ३६५ दिन का है (सौर ३६५ दिन ६ घण्टे लगभग) अत: ६ × ४ = २४ प्रत्येक चौथे वर्ष लीप इयर में (२४ धण्टे) एक दिन बढ़ा कर इस ६घण्टे के अन्तर को पूरा करते हैं । इसलिये जन्म की जो अंग्रेजी तिथि होगी उसी के लगभग वर्ष प्रवेश होता है, लीप इयर के कारण भी एक दिन इधर–उधर हो सकता है ।

वर्ष प्रवेश के लिये बार ही मुख्य है, चान्द्रतिथि में इधर–उधर होता ही है, सौरतिथि या अंग्रेजी तिथि में भी एक–दिन आगे पीछे हो सकता है किन्तु वार अचल है, पूर्वोक्त प्रकार से जो वार आया है, उसी वार को वर्ष प्रवेश होगा । जन्मवारादि में ध्रुवक जोड़ने से जो वारादि समय मिला है, उससे जन्मकुण्डली की तरह वर्षलग्न, ग्रह स्पष्ट, भाव व चलित चक्र बना लें, जैसा कि पिछले पाठों में जन्म पत्र के लिए लग्न, ग्रहस्पष्ट, भाव व चलित की विधि दी जा चुकी हैं ।

उदाहरण के लिए पूर्वोक्त सोमवार को ० घटी ५ पला ३० विपला पर वर्ष प्रवेश का समय निकला है अत: इस ०।५।३० को इष्टकाल मान कर लग्न सारिणी से लग्न निकालेंगे–

इष्टघटी ०।५।३०
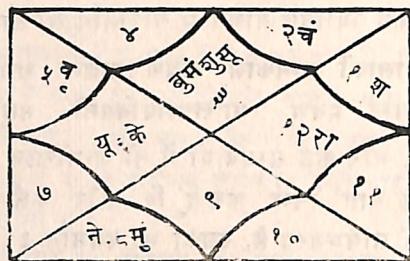
लग्नसारिणी में मिथुन के सूर्य ९ अंश पर घट्यादि १३।२६ मिला, अत:

०। ५।३०
१३।२६। ० जोड़ा
१३।३१।३०

यह लग्न सारिणी में मिथुन के ९ अंश के ही तुल्य है अतः ९ अंश मिथुन ही लग्न हुआ अब सम्वत् २०२५ में मिथुन के सूर्य ९ अंश पर सोमवार को (२४ जून ६८) मिथुन लग्न में ०।५।३० इष्टकाल पर यह ३८ वें वर्ष की वर्ष कुण्डली बनी। जिस अक्षांश का जन्म हो उसी अक्षांश की सारिणी से वर्षलग्न निकालें।

मुंथा—इन ग्रहों के अलावा वर्ष में 'मुन्था' नामक ग्रह भी दिया जाता है, जन्म लग्न की संख्या में गतवर्षों की संख्या जोड़ कर बारह का भाग देने से जो अंक बचे उसी अंक में मुन्था होगी। जिसका यह वर्ष लग्न है उनका जन्म लग्न तुला है जिसकी संख्या ७ + ३७ गतवर्ष = ४४ ÷ १२ = शेष ८ अतः ८ में मुन्था हुई।

वर्षलग्न निकल आने पर जातक की भांति फलादेश कहना चाहिए। भाव विचार एवं ग्रहों का फल जातक व ताजक में समान ही है, फिर भी जातक के अलावा इस पद्धति की जो विशेषतायें हैं, उनका संक्षिप्त विवरण दिया जायगा। विस्तृत जानकारी हेतु ताजिक शास्त्र के ग्रंथो को देखना चाहिए जिनमें 'ताजिक नीलकण्ठी' सर्वोत्तम है।

ग्रहों का बलाबल

ग्रहों का बलावल जानने के हेतु ताजिक में भी सप्तवर्ग (सप्तपदार्थ) या दसवर्ग हैं। इसके अलावा 'हद्दा' नामक एक विचार पद्धति स्वतंत्र है, जो ग्रह अपनी या मित्र की हद्दा में हो उसे बलवान मानते हैं। हद्दा जानने का क्रम यह है—

मेष	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
वृ	शु	बु	मं	वृ	बु	श	मं	वृ	बु	बु	शु
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२
शु	बु	शु	शु	शु	शु	बु	शु	शु	वृ	शु	वृ

६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४
बु	बृ	बृ	बु	श	वृ	वृ	बु	बु	शु	वृ	बु
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३
मं	श	मं	वृ	बु	मं	शु	वृ	मं	श	मं	मं
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९
श	मं	श	श	मं	श	मं	श	श	मं	श	श
५	३	६	८	६	२	२	६	४	४	५	२

अर्थात् मेष में लग्न या जो ग्रह होगा वह ६ अंश के भीतर हो वृहस्पति की हद्दा में, ६ से १२ तक शुक्र की, १२ से २० तक बुध की २० से २५ तक मंगल की, और २५ से ३० तक शनि की हद्दा में होगा। इस प्रकार कौन ग्रह किसकी हद्दा में है ज्ञात करना चाहिए।

ग्रहों के बलाबल ज्ञात करने हेतु सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट आदि पर्य्याप्त गणित करना होता है, आजकल इतनी मेहनत का फल मिलना मुश्किल है, अत: वर्तमान समय में कुछेक लोग ही ऐसा वर्षफल बना सकते हैं। साधारणतया जो वर्षफल बनते हैं उनमें इतना गणित नहीं रहता। सप्तपदार्थ एवं दशवर्ग साधन जातक में पहले बतला चुके हैं। यद्यपि इस युग में ऐसा वर्षफल न बने, फिर भी शास्त्र का ज्ञान होना चाहिए, जहाँ आवश्यकता पड़े उसी प्रकार सप्तवर्ग व दशवर्ग निकालने चाहिए। इस प्रकार वर्ष कुण्डलियों का दर्शन तो इस युग में अलभ्य-प्राय है। आजकल अच्छे से अच्छे जो बर्षफल बनते हैं उनमें भी दशवर्ग के स्थान पर प्राय: ज्योतिर्विद लोग "पंचवर्गी" बल ही देते हैं।

पंचवर्ग

यह पंचवर्ग है, गृह, उच्च, हद्दा, देष्काण, और नवाँश। इनमें गृह, उच्च देष्काण, नवाँश इन चारों का साधन सप्तवर्ग में जातक में दिया जा चुका है और हद्दा जानने की विधि भी ऊपर दी जा चुकी है। ताजिक में इनका बल इस प्रकार माना गया है—

	गृह	उच्च	हद्दा	देष्काण	नवाँश
स्व गृही	३०	२०	१५	१०	५
मित्र गृही	२२।।	÷	११।	७।।	३।।।
सम गृही	१५	+	७।।	५	२।।
शत्रु गृही	७।।	+	३।	२।।	१।

अर्थात् जो ग्रह गृहकुण्डली में (वर्षकुण्डली में) स्वगृही हो उसे ३० विश्वा, मित्र गृही २२।। विश्वा, समगृही को १५ और शत्रुगृही ७।। विश्वा बल पाता है। इसी प्रकार वर्ष कुण्डली से हद्दा, देष्काण कुण्डली, नवांश कुण्डली भी बनाकर उससे भी बल देखें, इन पाँचों का योग करें वह ग्रह का विश्वात्मक बल होगा।

उच्चबल जानने का क्रम यह है कि जो ग्रह उच्च में हो वह २० विश्वा बल पाता है, नीच में शून्य इसी अनुपात से बल निकालना चाहिए। सरल तरीका यह है कि नौ अंश में एक विश्वा बल चलता है, उच्च से जितने अंश ग्रह आगे हो उतने कम अथवा नीच से जितने अंश आगे हो उतने विश्वा बल (उच्चबल) होगा।

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
उच्च	मे	वृष	म	कन्या	कर्क	मीन	तुला
	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	तु	वृश्चि	कर्क	मी	म	कन्या	मे
	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

अर्थात् सूर्य मेष के १० अंश पर उच्च और तुला के १० अंश पर नीच होता है इसी प्रकार अन्य ग्रहों को भी जानना चाहिए, स्वगृह एवं स्वराशि आदि जातक प्रकरण में बतलाया जा चुका है।

मित्रादि की पद्धति

मित्र व शत्रु जानने की पद्धति यहां पृथक है। जातक के नैसर्गिक मैत्री से यहां भिन्न है इसका ध्यान रक्खें–

अपने से जो ग्रह—	३,	५,	९,	११,	में हो वह मित्र।
,, ,,	२,	६,	८,	१२,	,, वह सम।
,, ,,	१,	४,	७,	१०,	,, ,, शत्रु।

पिछले पृष्ठों में दी गई वर्ष कुण्डली देखो; उसमें सूर्य के कौन मित्र, शत्रु व सम है?

सूर्य स्थित स्थान से–	३,	११	में बृ. शनि मित्र हुए।
,,	६,	१२	में ने. चन्द्र सम है।
,,	१,	४,	१० में मं. बु. शु. के. यू. रा. शत्रु हुए।

बलसाधन का उदाहरण

पिछले अभ्यास में वर्ष कुण्डली देखो, उसमें मिथुन का सूर्य ९ अंश पर है इसका बल जानना है।

(१) गृहबल–सूर्य मिथुन में है मिथुन बुध की राशि है, वर्ष कुण्डली में बुध सूर्य का शत्रु है। अत: सूर्य वर्ष कुण्डली में शत्रु के घर का हुआ, एतदर्थ ७।। विश्वा बल मिला।

(२) उच्चबल–सूर्य मेष के १० अंश पर उच्च का होता है, इस स्थान पर उसे २० विश्वा बल मिलता लेकिन इस समय मिथुन के ९ अंश पर है, मेष के १० से मिथुन के ९ तक ५९ अंश आगे हुआ क्योंकि प्रत्येक ९ अंश पर एक विश्वा बल घटता है अत: ५९ ÷ ९ = लब्धि ६ अर्थात् २० में ६।। विश्वा बल घट गया अत: २०–६।। = १३।। विश्वा बल मिला।

(३) हद्दा–जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है मिथुन में ६ से १२ तक शुक्र की हद्दा है। क्योंकि वर्ष कुण्डली में सूर्य का शुक्र शत्रु है अत: शत्रु की हद्दा में ३।।। विश्वा बल मिला।

(४) देष्काण-मिथुन के ९ अंश में मिथुन का ही देष्काण हुआ, जो बुध की राशि है, बुध सूर्य का शत्रु है अत: शत्रु के देष्काण में २।। विश्वा बल मिला।

(५) नवमांश–मिथुन के ९ अंश पर धन का नवांश हुआ, धनराशि का स्वामी वृहस्पति सूर्य का मित्र है। अत: मित्र के नवाँश में ३।।। विश्वा बल मिला।

योग : =	गृहबल	७।।
	उच्चबल	१३।। लगभग
	हद्दाबल	३।।।
	देष्काणबल	२।।
	नवांशबल	३।।।
		३१ विश्वा
	अथवा	७।।। विंशोपका

विश्वात्मक बल में ४ का भाग देने से विंशोपका बल होता है, दस विंशोपका से अधिक जिस ग्रह में बल हो वह शुभ अर्थात् कार्य करने की क्षमता रखने वाला, बली समझा जाता है, इससे कम बल हो तो निर्बल माना जायगा। इस दृष्टि से यहां सूर्य निर्बल ही है।

दीप्तांशक

दीप्तांशकों का प्रयोजन आगे कई स्थानों पर आयेगा, यदि निर्बल ग्रह

अशुभ स्थान में हो और दीप्तांशकों के भीतर हो तो कुफल देता है। दीप्तांशकों से आगे हो तो कुफल कम होगा–

सूर्य के १५, चं १२, मं. ८, बु ७, बृ ९, शु ७, और शनि के ९ यह दीप्तांशक हैं। अर्थात् यह इतने अंश के भीतर हों तो दीप्तांशक में कहे जाते हैं, शुभ ग्रह एवं बली ग्रह शुभ स्थान में दीप्तांशकों में हों तो अवश्य फल देंगे।

लघुपंचवर्गी और वर्षेश

वर्ष फल के फलादेश कहने के प्रति ताजिक ज्योतिष में नव ग्रहों में से पाँचों या कम की एक मंत्रि परिषद की कल्पना की गई है। मंत्रि परिषद के इन सदस्यों की जैसी स्थिति होगी उसी के आधार पर वर्ष का शुभाशुभ फल देखा जायगा। यह पांच सदस्यों का चुनाव इस प्रकार होता है––

(१) जन्मलग्न का स्वामी (स्वायत्तशासनाधिकारी)
(२) वर्षलग्न का स्वामी (प्रशासक)
(३) मुंथा की राशि का स्वामी (मंत्री)
(४) त्रिराशिपति (अर्थाधिकारी)
(५) दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य स्थित राशि का स्वामी और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रस्थित राशि का स्वामी (रक्षाधिकारी) इन पांचों में से एक प्रधान चुना जाता है जो 'वर्षेश' कहा जाता है।

त्रिराशिपति जानने की विधि यह है––

वर्षलग्न	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिन में	सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं
रात्रि में	वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं

अब हमें पूर्वोक्त वर्ष कुण्डली के पचों का चुनाव करना है जो इस प्रकार सम्पन्न होगा।

(१) जन्मलग्न स्वामी––जन्मलग्न तुला का स्वामी शुक्र
(२) वर्षलग्नस्वामी––मिथुन लग्नपति–बुध,
(३) मुंथा राशि स्वामी–वृश्चिक का पति–मगल,
(४) त्रिराशिपति–दिन में मिथुन लग्न–शनि,
(५) दिन में सूर्य राशि स्वामी–बुध,

यह ध्यान रक्खें कि एक ही ग्रह एक से अधिक बार भी चुना जा सकता है।

ग्रहमैत्री : एक अन्य मत

पिछले अभ्यास में ग्रहों के परस्पर शत्रु, मित्र व सम सम्बन्ध बतलाये थे, इसके प्रति कुछ आचार्यों का मत है कि यह मैत्री तात्कालिक है। उन्होने नैसर्गिक मैत्री इस प्रकार मानी है–

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा.
मित्र	चं मं वृ	सू मं वृ	सू चं वृ	शु श	श चं मं	बु श	शु बु	बु शु श
शत्रु	बु शु श	बु शु श	बु शु श	सू चं मं वृ	बु शु श	सू चं मं वृ	सू चं मं वृ	सू चं मं वृ

इस प्रकार नैसर्गिक व तात्कालिक दोनों मैत्रियों को देखकर जातक की भांति पंचधा मैत्री देखना चाहिए।

दोनों में मित्र = परममित्र।

मित्र + सम = मित्र।

मित्र + शत्रु = सम।

शत्रु + सम = शत्रु।

शत्रु + शत्रु = परमशत्रु। इत्यादि।

ग्रहों की दृष्टि

ताजिक में ग्रहों की दृष्टि भी जातक से भिन्न है। कोई भी ग्रह अपने स्थित स्थान से ६,८,१२,२ स्थानों को नहीं देखता है शेष स्थानों में दृष्टि इस प्रकार है —

स्थान	दृष्टि का नाम	शक्ति
१।७	प्रत्यक्ष शत्रु	पूर्ण या ६० कला
९।५	प्रत्यक्ष मित्र	४५ कला
३।११	गुप्त मित्र	४०-१/६ कला
४।१०	गुप्त शत्रु	१५ कला

इस प्रकार १।७ में दृष्टि सबसे अधिक बली होती है।

विशेष विचार यह है कि जो ग्रह देखता है, और जिस ग्रह को देखता है, उनके परस्पर अंशों में १२ से कम अन्तर हो तो दृष्टि का फल पूर्ण होगा और

१२ से अधिक हो तो कम होगा। जैसे पूर्वोक्त २४ जून ६८ के बने वर्षलग्न में सूर्य ९ अंश तथा मंगल भी ९ अंश है अत: एक ही स्थान में १२ अंश के भीतर होने से प्रत्यक्ष शत्रु नामक दृष्टि का पूर्ण फल होगा।

विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि ग्रह कितने स्थान में है इसका महत्व नहीं है, महत्व इसका है कि कितने राशि या अंश की दूरी पर है। उदाहरणार्थ–इसी कुण्डली में चन्द्रमा व्यय भाव में १७ अंश पर है, लग्न में सूर्य ९ अंश पर। सामान्य दृष्टि से चन्द्रमा से सूर्य दूसरे घर में हुआ अत: इस प्रकार देखने से दूसरे घर में दृष्टि नहीं होती, लेकिन रहस्य यह है कि चन्द्रमा वृष के १७ अंश से सूर्य मिथुन के ९ अंश तक २२ अंश ही दूरी है, ३० अंश की दूरी तक एक ही भाव माना जायगा, अत: १ स्थान पर ६० कलात्मक प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि हुई। लेकिन परस्पर अंशात्मक दूरी १२ अंश से ऊपर २२ होने से दृष्टि का फल कम होगा। इसी प्रकार सर्वत्र–

३० अंशात्मक दूरी = १ भाव।

३० से ६० अंशात्मक दूरी = २ भाव।

६० से ९० अंशात्मक दूरी = ३ भाव, इस प्रकार दृष्टि देखनी चाहिये (देखें नीलकण्ठी, अध्याय २ श्लोक ११, १२)। तात्कालिक ग्रह मैत्री भी इसी प्रकार देखनी चाहिये।

हर्ष बल

प्रत्येक ग्रह अपनी विशिष्ट स्थितियों में हर्ष बल प्राप्त करते हैं। जैसे मनुष्य का कार्य इच्छानुसार हो जाने पर या कोई विशेष लाभ होने पर प्रसन्नता से स्वयं शरीर में बल आ जाता है। ऐसे ही जब ग्रह अपने विशेष स्थानों में होते हैं तो उन्हें भी हर्षबली कहा जाता है। हर्षबली ग्रह अपनी दशा में हर्ष व सुख देता है। हर्षबल भी चार प्रकार का होता है। जो ग्रह चारों प्रकार से हर्षबली हो वह २० विश्वा पूर्ण हर्षबली कहा जाता है, ऐसे ही एक प्रकार से ५ विश्वा, २ से १०, ३ से १५ विश्वा हर्ष बल पाता है—

(१) सूर्यलग्न से ९ स्थान में, चन्द्र ३, मंगल ६, बुध १, बृहस्पति ११, शुक्र ५, और शनि १२ वें स्थान में हर्ष बली होता है।

(२) जो ग्रह अपनी राशि का हो या उच्च का हो वह भी हर्षबल प्राप्त करता है।

(३) लग्न से १, २, ३, ७, ८, ९ वें स्थान में स्त्रीग्रह (बु० चं० शु० श०) तथा ४, ५, ६, १०, ११, १२ वें में पुरुषग्रह (सू. मं. वृ. रा. के.) हर्षबली होते हैं।

(४) स्त्रीग्रह रात्रि में वर्ष प्रवेश होने पर और पुरुष ग्रह दिन में वर्ष प्रवेश होने पर हर्षबली होते हैं।

दृष्टियों का फल

मित्र दृष्टि शुभ तथा शत्रुदष्टि अशुभ मानी है। प्रत्यक्ष मित्र या गुप्त मित्र दृष्टि-कार्य सिद्धि, मित्र सुख, पारिवारिक सुख, व लाभदायक कही है। तथा प्रत्यक्ष शत्रु या गुप्त शत्रु दृष्टि कार्यहानि, विवाद, कष्ट सूचक है। यद्यपि ताजिक शास्त्रकारों ने विशद विवेचन न कर सभी स्थितियों में दृष्टियों का फल समान माना है, तथापि मेरे मत से ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध भी देखना आवश्यक है जैसे दो मित्र ग्रहों में परस्पर शत्रु दृष्टि ही क्यों न हो उसका फल अशुभ नहीं होगा, ऐसे ही परस्पर दो शत्रु ग्रहों में दृष्टि होने पर भले ही वह मित्र दृष्टि हो शुभ फल कम होगा। इसी प्रकार परस्पर दृष्ट व द्रष्टा ग्रहों के भाव पर भी ध्यान देना आवश्यक है वे किस भाव में हैं और किस भाव के स्वामी हैं? जैसे भाग्येश और राज्येश की परस्पर दृष्टि हो, या राज्येश + लग्नेश, लग्नेश + सुखेश, लग्नेश + भाग्येश इत्यादि यह दृष्टि प्रत्यक्ष शत्रु ही क्यों न हो इसका शुभ फल भी होगा और इसके विपरीत लग्नेश + अष्टमेश, लग्नेश + षष्ठेश का दृष्टि सम्बन्ध मैत्री ही क्यों न हो शुभ नहीं कहा जायगा—इस सिद्धान्त को ताजिकशास्त्रकारों ने भी माना है, ताजिक पद्धति के षोडश योग इसी सिद्धान्त पर आधारित हैं। इस प्रकार विवेचन कर दृष्टि का वास्तविक फल कहना चाहिए।

वर्षेश-निर्णय

हम वर्ष के पंचों का चुनाव करने की विधि बतला चुके हैं, इसके बाद यह देखना है कि पंचवर्गी बल साधन प्रकार से इन पांचों में कौन कितना बली है, किसकी लग्न पर कितनी कलात्मक दृष्टि है, सबसे अधिक बलवान इस पाँचों में कौन है? इस आधार पर वर्षेश अथवा 'सरपंच' चुनने के नियम निम्न है —

(१) पांचों में जो सर्वाधिक बली हो वह वर्षेश होता है लेकिन प्रतिबन्ध यह है कि उसकी लग्न पर दृष्टि होनी चाहिये चाहे वह दृष्टि कितनी ही

कलात्मक हो, शत्रु या मित्र जो भी हो। यदि उसकी लग्न पर दृष्टि नहीं है तो सर्वाधिक बली होने पर भी वह वर्षेश नही होगा।

(२) ऐसी स्थिति में जब दो ग्रह या अधिक ऐसे हो जायें, जिन दोनों का बल एकदम बराबर हो ? तब इन दोनों में से जिस ग्रह की लग्न पर अधिक दृष्टि हो (अधिक कलात्मक) वह वर्षेश होगा।

(३) तीसरी स्थिति वह है जब कि एक से अधिक ग्रहों का बल भी बराबर हो, और कलात्मक दृष्टि बल भी बराबर हो ? तव ऐसी स्थिति में 'मुन्थाराशिपति' वर्षेश होता है। यहां भी नियम वही है कि मुन्थेश की लग्न पर दृष्टि भी हो।

(४) यदि कदाचित इन पाँचों में से लग्न पर एक की भी दृष्टि न हो तो ऐसी स्थिति में सबसे बलवान जो ग्रह हो वह वर्षेश होता है।

(५) चन्द्रमा वर्षेश नहीं होता है, अत: यदि पंचों में चन्द्रमा भी हो, और पूर्वोक्त नियमों के अनुसार चन्द्रमा ही वर्षेश सिद्ध होता हो तो भी ऐसी स्थिति में शेष चार पंचों में से जिसके साथ चन्द्रमा का 'इत्थशाल' (इत्थशाल योग आगे बतलायेंगें) योग हो वह वर्षेश होगा। कदाचित् चन्द्रमा का चारों में किसी के साथ इत्थशाल भी न हो तो चन्द्रमा जिस राशि में है उस राशि का जो स्वामी हो वह वर्षेश होगा। (वह पंचाधिकारियों में होना चाहिए।) और यदि वह पंचाधिकारियो में न हो, या चन्द्रमा स्वयं अपनी ही राशि कर्क का ही हो तव ऐसी स्थिति में आपत्काल में चन्द्रमा को ही वर्षेश बनाना पड़ेगा।

मतान्तर—नियम तीन के बारे में कुछ का मत यह भी है कि ऐसी स्थिति में सूर्य राशिपति (दिन में व र्ष प्रवेश) या चन्द्रमा राशिपति (रात्रि में वर्ष प्रवेश) वर्षेश बनाना चाहिए लेकिन यह मत एकाकी एवं अग्राह्य है।

वर्षेश व पंचों का महत्व

वर्षेश तथा पंचों का वर्ष के फलाफल में पर्य्याप्त महत्व है, यदि यह बलवान हों और केन्द्र त्रिकोणादि शुभ स्थानों में हो तो वर्ष उत्तम जायगा। इसके विपरीत कमजोर तथा ६, ८, १२, स्थानों में हो तो वर्ष अच्छा नहीं जायगा।

जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है कि वर्षेश वर्ष का प्रधान है, फिर भी प्रत्येक पदाधिकारी के पास भिन्न-भिन्न विभाग हैं, जिस विभाग का

अधिपति बलवान व शुभ स्थान में हो, उस विषय में वर्ष अच्छा जायगा, और जिस विभाग का अधिपति कमजोर हो, ६, ८, १२वें भाव में हो उस विभाग का फल भी मध्यम होगा। वर्षेश अपने विभाग के अलावा मंत्रिमंडल का प्रधान होने से सभी पर प्रभाव करता है। लेकिन केवल पंचाधिकारियों के आधार पर ही वर्ष का फल नहीं कहना चाहिए। जन्मदशा, वर्ष कुन्डली के द्वादशभावों का विवेचन, मुंथा, सहम, इत्थशालादि योग आदि सर्वांगीण विचार कर तुलनात्मक फल कहना चाहिए।

जन्मलग्नपति घरेलू मामलों में (स्वायत्तशासन), वर्षलग्नपति सामाजिक व राजद्वारीय मामलों में (प्रशासनाधिकारी), मुंथापति (मंत्री) बौद्धिक मामलों में, त्रिराशिपति आर्थिक मामलों में (अर्थाधिकारी) और सूर्य या चन्द्र राशिपति रक्षात्मक मामलों में प्रभाव दिखाते हैं।

वर्षेश के विस्तृत फल जानने को वैसे जिज्ञासु 'ताजिक नीलकण्ठी' प्रभृति ग्रंथ देख सकते हैं, लेकिन मूल सारांश यही है कि वर्षेश अच्छे स्थान में हो, बली हो तो वर्ष शुभ, निर्बल होकर ६, ८, १२ में हो तो वर्ष अच्छा नहीं जायगा। मध्य बली हो तो वष मध्यम जायगा। पांच से कम विंशोपका बली (पंचवर्गी) हीन बल, दस तक मध्य बली, दस से ऊपर २० तक बली कहा जाता है।

मुँथा-विचार

पिछले अभ्यासों में मुंथा का स्थान जानने की विधि बतलाई जा चुकी है। अब संक्षेप में उसका फल बतलाया जायगा। विस्तार से जानने हेतु नीलकंठी प्रभृति देखने चाहिये।

सामान्यत: मुंथा का फल कई प्रकार से है—

(१) मुंथा अपने स्वामी या शुभग्रह की दृष्टि से पूर्ण हो तो शुभ फल देती है और पापग्रहों की दृष्टि होने से (यदि वह स्वामी है, ध्यान रहे कि मुंथा का राशिपति स्वयं पापग्रह हो तो स्वस्वामी की दृष्टि होने से अशुभ नहीं मानी जायगी) अशुभ फल देती है—

स्वामिसौम्येक्षणात्सौख्यं—

क्रूरदृष्टया भयं रुज:। इत्यादि

(२) प्राय: वर्षलग्न से ४, ७, ८, ६, १२ स्थानों में मुंथा कुफल देती है, ९, १०, ११वें स्थानों में उत्तम तथा शेष १, २, ३, ५ में मध्यम अर्थात् सम है, न अच्छी न अशुभ।

(३) जन्मलग्न से मुंथा किस भाव में है ? अर्थात् वर्षलग्न (कुण्डली) में मुंथा जिस राशि में है वह राशि जन्मलग्न से किस भाव में है ? और जन्म में उस भाव की स्थिति क्या है ? यह देखना परमावश्यक है। यदि मुंथा की राशि जन्मलग्न से ७, १२, ६, ८, ४ में पड़ी हो तो शुभ नहीं है।

इस प्रकार तीनों प्रकार से फल देखकर तारताम्य से मुंथा का फल निर्धारित करना चाहिए।

(अ) यदि वर्षलग्न में मुंथा की स्थिति अच्छे स्थान में है, जन्म से भी अच्छी है तो निश्चय ही शुभ फल देगी। जन्मलग्न व वर्षलग्न से जिस भाव में हो। उक्तभाव सम्बन्धी शुभ फल वर्ष में होगा।

(आ) वर्षलग्न से शुभ स्थान में और जन्मलग्न से अशुभ स्थान में हो अथवा जन्मलग्न से शुभ वर्ष से अशुभ हो तो—जन्म या वर्ष से जिस भाव में हो उस भाव सम्बन्धी शुभ व अशुभ दोनों फल करेगी। उदाहरण के लिए जन्म से अष्टम वर्ष से दशम भाव में हो तो—रोग, कष्ट, विबादादि अष्टम भाव सम्बन्धी कुफल भी होगा और दशम भाव राज्य सम्बन्धी शुभ फल भी देगी—

यदोभयत्रापि हता भावो नश्येत्स सर्वथा।
उभयत्र शुभत्वेतु भावोऽसौ वर्द्धतेतराम्॥

(इ) दोनों लग्नों से अशुभ हो तो अवश्य ही मुंथा कुफल देगी।

(ई) जन्मलग्न से मुंथा राशि शुभ हो तो वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक अच्छा जायगा। और वर्ष में मुंथा मुन्थेश शुभ हो तो उत्तरार्द्ध अधिक अच्छा जायगा।

उदाहरण

पूर्वोक्त कुण्डली में यहां मुंथा वर्ष-लग्न से षष्ठ भाव में है, मुन्थेश लग्न में है एवं मुन्थेश की मुंथा पर दृष्टि नहीं है। तथा पूर्वोक्त व्यक्ति का जन्मलग्न तुला है। अत: जन्मलग्न से धन-स्थान में हुई। जन्म कुण्डली में धनभाव की स्थिति जन्म में अच्छी है। यहाँ पर—"जन्म में मुंथा मुन्थेश शुभ होने से वर्ष

का पूर्वार्ध उत्तम जायगा और उत्तरार्ध साधारण तथा जन्मलग्न से मुंथा धन स्थान में होने से एवं धन-भाव जन्म में अच्छा होने से आर्थिक मामलों में यह वर्ष अच्छा जायगा, लेकिन वर्षलग्न से षष्ठभाव में होने से रोग व विवाद-भय की भी आशंका है, स्वास्थ्य गिरेगा, शत्रुवृद्धि, होगी।''

सामान्यफल

प्रत्येक भाव में मुंथा का जो सामान्य फल होता है वह निम्न प्रकार है लेकिन केवल मुंथा का स्थान देखकर यह फल कह नहीं देना चाहिए अपितु पूर्वोक्त तारतम्यानुसार कौन फल कितना होगा इस बात का विश्लेषण अपनी बुद्धि से कर लेना चाहिए।

(१) लग्न में—नीरोगता, उत्साह, सेवा व्यवसायादि जीविका के पक्ष में संतोष, आत्मजय, शत्रु पराजय।

(२) उत्साह, लाभ, पारिवारिक सुख—संतोष, आजीविका से संतोष, नीरोगता।

(३) नीरोगता, जीविका में संतोष, लाभ, यश, सुख।

(४) स्वास्थ्य में गिरावट, मानसिक अशान्ति, पारिवारिक व साम्पत्तिक समस्यायें, उत्साह हीनता, सामाजिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा का ह्रास, विरोधियों की वृद्धि, इष्ट मित्रों से मनोमालिन्यता।

(५) लाभ, विद्या हेतु शुभ, सन्तानपक्ष से सुख-सन्तोष, सद्विचार, सन्तोष लाभ, प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि।

(६) शत्रुवृद्धि, मानसिक चिन्ता, स्वास्थ्य में गिरावट, चोरभय, राजद्वारीय मामलों के प्रतिकूलता, पराजय की सम्भावना, विघ्न-बाधायें, धनहानि, कुबुद्धि।

(७) कुव्यसनों की ओर प्रवृत्ति, पारिवारिक कष्ट या विवाद से अशान्ति, उत्साहहीनता, सिद्धान्त हीनता, धनव्यय, स्वास्थ्य में गिरावट और बुद्धि पर ऐसा कुप्रभाव कि क्या करूँ क्या न करूं—कर्तव्य का विवेक ही न रह सके।

(८) अकारण भ्रम से मानसिक भय, शत्रुवृद्धि, चोरी से हानि एवं धनव्यय की आशंका, अधिक परिश्रम, स्वास्थ्य में गिरावट, कुव्यसनों में प्रवृत्ति।

(९) अपने अधिकारों में वृद्धि, सेवा आदि जीविका से सन्तोष, सत्कार्य यश, पारिवारिक सुख।

(१०) राजद्वारीय मामलों में तथा जीविका के पक्ष में अनुकूल श्रेष्ठ, जीविका एवं लाभ के साधनों में वृद्धि का अवसर, अधिकार वृद्धि, कार्यों में सफलता, परोपकार, सत्कार्य, यश तथा लाभ।

(११) नीरोगता, परमसन्तोष, पारिवारिक व मित्रपक्षीय सुख, आर्थिक साधनों में वृद्धि व लाभ, राजद्वारीय मामलों में अनुकूल।

(१२) व्ययवृद्धि, कुसंगति से हानि सम्भव, उद्योग करने से भी वांछित सफलता न मिलना, स्वास्थ्य में गिरावट, लोगों से अकारण शत्रुता सूचक होती है।

ध्यान दें

मुन्था का जन्मलग्न, वर्षलग्न से स्थिति, ग्रहयुति (युक्त) दृष्टि को तो फल कहते समय तारतम्यानुसार ध्यान में रक्खेंगे ही वर्षलग्न की अन्य ग्रहों की स्थिति को भी ध्यान में रखना आवश्वक है। क्योंकि अकेले मुन्था पर ही वर्ष का फल निर्भर नहीं है, अपितु अन्य ग्रहों की स्थिति भी उसमें भागी है।

मुंथाः ग्रह-युति और दृष्टि

मुन्था कौन से ग्रह के साथ है? इसका भी महत्व है, प्रत्येक ग्रह के साथ होने से मुन्था क्या विशेष फल देती है, अथवा मुन्था पर किस ग्रह की दृष्टि का क्या फल है यह भी जानना आवश्यक है—

सूर्य—(से युक्त मुन्था या सूर्य की दृष्टि होने पर—) राज्यसम्मान अधिकार वृद्धि।

चं०—नीरोगता, सन्तोष, यश, सत्कार्य।

मं०—शस्त्र से भय, रक्त एवं पित्तज रोग।

बु०—पारिवारिक सुख, लाभ, यश, सत्कार्य।

बृ— ,,

शु— ,,

श—बात विकार, वाहन एवं धनहानि, शस्त्र भय, रोग भय।

राहुमुख—अर्थात् मुन्था राहु के साथ हो, लेकिन [मुन्था के अंश उतने ही होते हैं जितने अंश जन्मलग्न के हों] मुन्था के अंश राहु के अंशों से कम हों—धनलाभ, यश, सुख, जीविका में उन्नति।

राहुपुच्छ—अर्थात् मुन्था के अंश राहु के अंशों से अधिक हों—हानि अपयश, सुखहीनता, हानि ।

केतु—धनव्यय, भय, स्वास्थ्य में गिरावट, शत्रुवृद्धि ।

मुँथेश

मुन्थाराशि के स्वामी को भी देखें । उसका वर्षलग्न से ४, ६, ८, १२, ७वें होना, अस्तगत होना, अष्टमेश के साथ में होना, अष्टमेश की इस पर शत्रु दृष्टि होना, यह योग अच्छे नहीं माने जाते हैं। वर्षेश तथा वृहस्पति से युक्त, दृष्ट शुभ है।

मुद्दा तथा पात्यंशी दशायें

जातक में जैसे ग्रहों का फल-पाक काल जानने को विंशोत्तरी आदि प्रमुख दशायें हैं, ऐसे ही ताजिक में भी किसी ग्रह का शुभ या अशुभ प्रभाव किस समय घटित होगा इसे जानने के लिए दशाओं का विधान है । जैसे जातक में सैकड़ों दशाएं आचार्यों ने कही हैं वैसे ही ताजिक में भी दस दशायें हैं । इन सब में 'हीनाँश-पात्यंश' दशा मुख्य है । यह दशा साधन श्रमसाध्य है जिसमें गणित कर्ता को वर्ष फल बनाने हेतु २–३ दिन श्रम करना पड़ेगा, वर्तमान युग में न तो इस तरह के विद्वान उपलब्ध हैं और न गुणग्राहक ही–अतः इस ताजिक शास्त्र की मुख्य दशा 'हीनाँश-पात्यंश' का भी लोप ही हो गया है । कहीं लाखों वर्ष पत्रों में से किसी एक आध में भी इसका गणित मिल जाय तो आश्चर्य है । आधुनिक ज्योतिर्विदों ने सरलता के लिये ताजिकशास्त्र में भी जातक का प्रयोग कर दिया है । जहाँ वर्षफल का गणित ताजिकशास्त्र से होता है, वही वर्ष की दशायें मुद्दा या गौरीमत दशा से दी जाती हैं जो विंशोत्तरी (जातक) दशा की प्रणाली पर आधारित है ।

मुद्दा

गत वर्षों में जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़कर दो घटा दें, शेष में ९ नौ का भाग देने से जितना शेष बचे, उसी क्रम से-सू, चं, मं, रा, बृ, श बु, के, शु–वर्ष में प्रथम दशा आरम्भ होती है और इनका समय भी एक नियत है—

दशा	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
दिन	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	६०

उदाहरण के लिए यहाँ जिस कुण्डली से वर्षफल का उदाहरण दिया है उसमें जन्मनक्षत्र चित्रा है जिसकी संख्या चौदह (१४) है। अत: गतवर्ष ३७+१४ नक्षत्र=५१ इसमें २ घटाया=४९, इसमें ९ का भाग देने पर ४ शेष बचा, अत: वर्ष के आरम्भ में चौथी राहु दशा प्रवेश हुई। इसके बाद क्रमश: (वर्ष प्रवेश २४ जून को है)

दशा	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु,	सू.	चं.	भौ
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२४	१८	२७	२१	२१	०	१८	०	२१
योग	१८	६	३	२४	१५	१५	३	३	२४
	अग	अक्टू	दि.	ज.	फ.	अ	म	जू	जून

पात्यंशी-दशा

वर्ष एवं ताजिकमत की अन्य (तासीर, भावतासीर स्थलभाव तासीर, कालहोरा, हद्दा, नैसर्गिक, तनुभाव, मुद्दा और वलराम मत) दशाओं में यही मुख्य है। इसके साधन हेतु ग्रहस्पष्ट साधन आवश्यक है। ग्रहस्पष्ट में राशि की पहली पंक्ति छोड़कर अंश, कला, विकला ग्रहण की जाती हैं।

सर्वप्रथम लग्न समेत राहु, केतु छोड़कर जिसके सबसे कम अंश हों उसे सबसे पहले लिखा जाता है। फिर इसके बाद इसी हिसाब से अन्त में जिसके सबसे अधिक अंश हों। क्रमश: एक के अंशों को उसके अगले ग्रह के अंशों में घटाया जाता है, इसे हीनांश-पात्यंश कहते हैं। एक उदाहरण—

ग्रहस्पष्ट

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.
रा.	३	९	८	४	३	४	३	४
अं.	६	२८	१९	२	१९	१६	२१	८
क.	३६	१६	५७	१८	२३	४४	५७	५७
वि.	५७	३१	८	२८	३७	२६	३	२

हीनाँश

यहां पर सबसे कम अंश बुध के हैं, इससे बाद ल. सू. शु. वृ. मं. श. चं. क्रमश: हैं अत: प्रथम पंक्ति राश्यादि छोड़कर इसी क्रम से लिखें—

ग्र.	बु.	ल.	सू.	शु.	वृ.	मं.	श.	चं.
अं	२	८	६	१६	१९	१९	२१	२८
क	१८	५७	३६	४४	२३	५७	५७	१६
वि	२८	२	५७	२६	३७	८	४	३१

अब इन्हें एक दूसरे में घटाया, सबसे पहले एवं कम अंश बुध है अत: वह अपने ही रूप में रहा इसे नहीं घटाया जाता। इसके आगे लग्न ८।५७।२ में बुध २।१८।२८ घटाया तो शेष ६।३८।३४ यह लग्न के पात्यंश हुए। फिर लग्न के अंशों ८।५७।२ को सूर्य के अंशों ९।३६।५७ में घटाया तो शेषं ०।३९। ५५ यह सूर्य के पात्यंश हुए, इसी तरह अगले ग्रहों को भी क्रमश: घटाने पर निम्न पात्यंश हुए—

पात्यंश

बु.	ल.	सू.	शु.	वृ.	मं.	श.	चं.	योग
२	६	०	७	२	०	१	६	२८
१८	३८	३९	७	३९	३३	५९	१९	१६
२८	३४	५५	२९	११	३१	५५	२८	३१

गुप्तरहस्य—मैं पाठकों को यह गुप्त रहस्य बता देना चाहता हूं कि सभी ग्रहों के पात्यंशों का योग करने पर उतना ही आता है जितना कि हीनांश में सर्वाधिक अंश वाले अन्तिम ग्रह के अंश हों। यदि ऐसा न मिले तो समझना चाहिए कि जोड़ने या घटाने में कोई त्रुटि रह गई है उसे सुधार लेनी चाहिए। यहाँ पर हीनांश में सबसे अधिक अंश वाले चन्द्रमा के अंश २८।१६।३१ थे, वही जोड़ पात्यंशों का योग भी मिला, अत: सही है।

दशा साधन के लिए सर्वप्रथम पात्यंशों के इस योग के विकला बना लें और इससे (१२९६००० अर्थात् एक वर्ष का विकलात्मक मान=एक वर्ष में ३६० सावनदिन इसके घटी बनायें ३६०×६०=२१६ ० इसके पल बनायें ×६०=१२९६००० पल) एक वर्ष के विकलात्मक मान में भाग दें—यह ध्रुवक होगा। इस ध्रुवक से प्रत्येक ग्रह के पात्यंशों को अलग-अलग गुणा करना तब यह उक्त ग्रह के दशा का परिणाम होगा।

उदाहरणार्थ पात्यंशों के योग २८।१६।३१ के विकला बनाई—

```
   २८ अंश
 × ६०
 ─────────
 १६८० कला
 + १६ कला
 ─────────
 १६९६ कला
 × ६०
 ─────────
 १०१७६० विकला
 + ३१
 ─────────
```

१०१७९१ बिकला

१०१७९१)१२२६०००(१२ दिन
१०१७९१
२०८०९०
२०३५८२
७४५०८
×६०
४४७०४८०(४३ घटी
४०७१६४
३९८८४०
३०५३७३
९३४६७
×६०
५६०८०२०(५५ पल
५०८९५५
५१८४७०
५०८९५५
९५१५

=१२ दिन ४३ घड़ी ५५ पल यह ध्रुवक हुआ। इससे सर्वप्रथम बुध के पात्यंशों को गुणा किया बुध के पात्यंश २।१८।२८ को गोमूत्रिका रीति से गुणा किया।

दि. घ. प. वि. प्र.

२ —१८ —२८— ०—० ×१२
० — २ —१८—२८—० ×४३
० — ० — २—१८— २८×५५

२४ –२१६–३३६—०—
० – ८६–६७४—११०४–०
० – ०–११०—९९०–१५४०

२४ –३०२–११२०–२०९४–१५४०

पिछली संख्याओं में ६० का भाग लेकर =२९—२२—६ इसी तरह अन्य ग्रहों के पात्यंशों को भी ध्रुवक से गुणा करने पर निम्न दशा सिद्ध हुई —

ग्रह	बु०	ल०	सू०	शु०	वृ०	मं०	श०	चं०	योग
दिन	२९	८३	९	९०	३३	७	२५	८०	३६०

घड़ी	२२	४४	१९	४२	४६	६	२६	३१	०
पल	६	२८	३४	१७	४३	४४	४६	२२	०

यहाँ भी सबका योग ३६० दिन आना चाहिए। एक आध घटी पल का अन्तर संभव है। तभी गणना सही समझें।

ध्यान दें

यह बात ध्यान देने की है कि पात्यंशी दशा में दशाओं का क्रम इसी प्रकार रहेगा, सबसे पहले जिसके कम अंश हों वर्ष प्रवेश पर वही दशा शुरू होगी और आगे भी इसी क्रम से। अर्थात मुद्दा दशा में जैसे दशाओं का क्रम नियत है यहाँ नहीं है, पहले कौन दशा प्रवेश होगी और उसके बाद किसका क्रम होगा यह वर्ष प्रवेश समय के ग्रहों के अंशात्मक स्थिति पर निर्भर है।

दूसरी बात मुद्दा दशा की भांति यहाँ दशा के दिन भी नियत नहीं है। कौन दशा कितने दिन की होगी– यह भी ग्रहों के अंशात्मक स्थिति पर निर्भर है।

तीसरी बात यह कि पात्यंशी दशा में लग्न की भी दशा होती है ओर राहु—केतु की दशा नहीं होती।

पारशीय ज्योतिष की विशिष्ट पद्धतियाँ

ताजिक ज्योतिष एवं वर्ष फल के बारे में पिछले अध्याय में बताया जा चुका है, अब ताजिक ज्योतिष की कुछ विशिष्ट नई पद्धतियों एवं सिद्धान्तों पर प्रकाश डालेंगे। वैसे तो ताजिक का प्रयोग मुख्यत: वर्षफल में होता है, लेकिन ज्योतिष के जन्म, प्रश्न आदि दूसरे क्षेत्रो में भी किया जाना चाहिए। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं ताजिकी केवल वर्षफल से सम्बन्धित नहीं है अपितु यूनानी एवं पारसीय पद्धति पर आधारित ज्योतिष शास्त्र की ही एक नई पद्धति है। हम देखते हैं कि श्री नीलकण्ठ आदि ने वर्षफल की भांति ही प्रश्न में भी ताजिक सिद्धान्तों का प्रयोग किया है। ताजिक की जो विशेषतायें हैं उनमें षोडश योग और सहम मुख्य हैं।

षोडशयोग

षोडश योगों के नाम, लक्षण और फल निम्नाँकित है--

(१) इक्कवाल—कुण्डली में ३, ६, ९, १२ भावों में कोई भी ग्रह न हों यह भाव खाली हों तो 'इक्कवाल, योग कहा जाता है, यह राज्यसम्मान, सुख लाभ प्रद शुभ है।
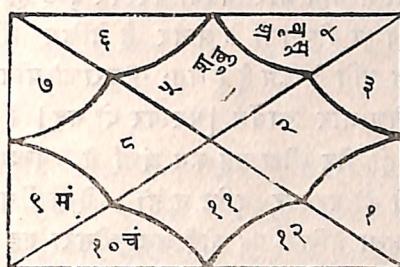
(२) इन्दुवार—कुण्डली में सभी ग्रह ३, ६, ९, १२ भावों में हों और भाव खाली हों तो 'इन्दुवार, योग होता है यह इक्कवाल के ठीक विपरीत है और फल भी विपरीत देता है, अर्थात् अपयश, दुख, हानि।

३– इत्थशाल या मुथशिल—परस्पर दो ग्रह ऐसे भावों में बैठे हों जो एक दूसरे को देखते हों [परस्पर दृष्टि हो] और इन दोनों में तेज गति वाला ग्रह कम अंश का हो और मन्द गति वाला अधिक अंश का हो लेकिन परस्पर अंशों में इतना कम अन्तर हो कि यह अन्तर दोनों के दीप्तांशकों से कम हो-- यह परस्पर दो ग्रहों का 'इत्थशाल' या मुथशिल कहा जाता है।

लग्नेश का जिस भाव के स्वामी के साथ अथवा परस्पर जिन दो भाव स्वामियों का इत्थशाल हो उस भाव सम्बन्धी वृद्धि करता है, यह शुभ योग है। मुख्यत: इत्थशाल योग जिस भाव का बिचार करना हो उस भावेश का लग्नेश से देखा जाता है।

निम्न कुण्डली को देखिए, और इत्थशाल' योग बताइये—

ग्रह	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	लग्न
अंश	९	२८	१९	२	१९	१६	२१	८
कला	३६	१६	५७	३८	२३	४४	५७	५७

इसमें देखिये मंगल और शुक्र की परस्पर ४५ कलात्मक ९।५ प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि है। शुक्र तेज गति वाला ग्रह है जो कम अर्थात् १६ अंश पर है और मंगल मन्द गति वाला इससे अधिक १९ अंश पर है [ग्रहों की दैनिकगति पंचाग व कुण्डलियों में ग्रहस्पष्ट के नीचे दी रहती है इससे ज्ञात हो जायगा कि कौन ग्रह कम गति का है] दोनों के अंशों में केवल ३ ३ अंशों का अन्तर है। ऊपर बताया जा चुका है कि मंगल के दीप्तांश ८ और शुक्र के ७ हैं अत: यह अन्तर दीप्तांशों से कम है अत: इत्थशाल सिद्ध हुआ। इनमें मंगल भाग्येश और शुक्र राज्येश है इसलिए यह इत्थशाल राजसम्मान, भाग्योदय उन्नतिकारी होगा।

बिस्तार में इसके वर्तमान इत्थशाल, पूर्णइत्थशाल भविष्य इत्थशाल आदि भेद हैं—इन सबका सारांश यही है कि इत्थशाल योग करने वाले दो ग्रहों के परस्पर अंशों में जितना कम अन्तर हो उतना ही फल अधिक होगा। जैसे यहाँ पर १६ और १९ तीन अंश का अन्तर है यदि यह १६ अंश १० कला— और १६ अंश १२ कला होते तो परस्पर केवल दो कला का ही अन्तर होता यह योग अधिक प्रभावशाली होता।

इत्थशाली ग्रह केन्द्र त्रिकोणादि शुभ भावों में हों, स्वगृह उच्चादि में बली हों तो शुभ फल निश्चय देंगे, अन्यथा दुर्बल या छठे, बारहवें, आदि हों तो इत्थशाल निष्फल भी हो सकता है, यह ध्यान देने योग्य है।

४–ईशराफ या मूशरिफ–यह ठीक इत्थशाल के विपरीत है–अर्थात् परस्पर दो ग्रहों में दृष्टि हो, उनका अन्तर दीप्तांशों के भीतर हो, किन्तु तेज गति ग्रह के अंश अधिक और मन्द ग्रह के अंश कम हों। यह फल भी इत्थशाल के विपरीत देता है।

उपरोक्त कुण्डली में शनि और चंद्रमा परस्पर दृष्ट हैं, दोनों के अंशों का अन्तर भी सात के लगभग दीप्तांशों के अन्दर है लेकिन शीघ्र गति चन्द्रमा के अंश अधिक, मन्द गति शनि के कम है। अत: 'ईशराफ' योग सिद्ध हुआ।

५–नक्त—लग्नेश और कार्येश [परस्पर दो ग्रह] के अंशों का अन्तर दीप्तांशकों के भीतर हो और शीघ्र ग्रह कम अंशों में, मन्दगति अधिक अंश में भी हो—लेकिन दोनों की परस्पर दृष्टि न हो। ऐसी स्थिति में दृष्टि न होने में इत्थशाल तो नहीं हुआ लेकिन एक कोई अन्य तीसरा ग्रह ऐसा हो जो दोनों को देखता हो, दोनों से शीघ्र गति हो और इसके अंश उपरोक्त दोनों के मध्य में हों अर्थात् शीघ्रगति ग्रह से अधिक और मन्द गति ग्रह से कम तो यह 'नक्त' योग है। इत्थशाल के समान यह भी शुभ फलदायक है, लेकिन यह योग किसी तीसरे मध्यस्थ व्यक्ति के द्वारा कार्यसिद्धि बतलाता है।

उदाहरण के लिए उपरोक्त कुण्डली को ही ले लें। केवल उसमें इतना बदलाव मान लें कि चन्द्रमा षष्ठस्थान में २८ अंश के बजाय भाग्य स्थान (नवम भाव) में ५ अंश का है। ऐसे प्रश्न लग्न के समय प्रष्टा धनलाभ का प्रश्न करता है। अत: लग्नेश और धनेश का विचार होगा, लग्नेश सूर्य मन्द गति ९ अंश पर है धनेश बुध शीघ्र गति २ अंश है, दोनों का अंशात्मक, अन्तर भी दीप्तांशों के भीतर है—केवल दृष्टि की कमी से इत्थशाल नहीं हुआ।

यहाँ पर चन्द्रमा इन दोनों से शीघ्र गति है, उसके अंश भी २ से ऊपर तथा ९ से कम (दोनों के मध्य) हैं चतुर्थ में सूर्य को भी देखता है पंचम में बुध को भी अत: चन्द्रमा द्वारा 'नक्त, योग सिद्ध हुआ।

६ यमया—यह भी नक्त योग के समान ही है और इसका फल भी तीसरे मध्यस्थ व्यक्ति से कार्य सिद्धि करता है। नक्त और यमया में इतना भेद है कि इसमें लग्नेश और कार्येश दोनों के अंशों का अन्तर दीप्तांशकों के भीतर होना ही जरूरी है, शीघ्रगति कम अंश हो, मन्द अधिक अंश हो यह आवश्यक नहीं है।

यहां मध्यस्थ तीसरा ग्रह दोनों से मन्दगति होना चाहिए, दोनों से शीघ्र गति नहीं।

७–मणऊ—यह योग कार्यहानि एवं विघ्न सूचक है मणऊ शब्द पारशीय (मनाही, मनै) शब्द का सूचक अर्थात कार्य की मनाही बतलाता है।

लग्नेश कार्येश का परस्पर इत्थशाल होता हो, लेकिन शनिश्चर अथवा मंगल में से कोई एक या दोनों कुण्डली में ऐसे भाव में स्थित हो जहाँ से वह शीघ्र गति ग्रह को शत्रु दृष्टि (१, ७, ४, १०) से देखता हो और शीघ्रगति ग्रह के अंशों से इस ग्रह के अंशों का अन्तर दीप्तांशों के अन्दर हो। और किसी भी (मित्र या शत्रु) दृष्टि से मन्दगति ग्रह को भी देखता हो।

संक्षेप में 'मणऊ' को इत्थशाल योग भंग जानना चाहिए, अत: इत्थशाल योग देखते समय यह भी देख लें कि कहीं मणऊ योग से इत्थशाल भंग तो नहीं हुआ ?

एक कुण्डली खींचिए–तुला लग्न प्रश्न या विचार है राज्यभाव सम्बन्धी लग्नेशशुक्र (मंदगति) लग्न में ५ अंश पर और राज्येश चन्द्रमा (शीघ्रगति) सप्तम में २ अंश पर है। शनि चौथे भाव में ४ अंश का है जो गुप्त शत्रु दृष्टि से चौथे चन्द्रमा (शीघ्र गति) को देखता है, मन्द गति शुक्र पर भी दृष्टि है। शीघ्र गति चन्द्रमा व शनि के अंशों का अन्तर दीप्तांशकों के भीतर है अत: लग्नेश-राज्येश (शुक्र + चन्द्रमा) का जो इत्थशाल योग यहाँ बना था वह शनि ने 'मणऊँ' योग बनाकर भंग कर दिया।

'मणऊँ' योग का एक भेद और भी है—यदि शनि या मंगल लग्नेश या कार्येश के साथ दीप्तांशकों के भीतर युति करता हो—तब भी मणऊँ योग बनकर इत्थशाल योग को भंगकर कार्यनाश करता है।

८–कम्बूल—यह पारसीय शब्द कबूल से बनता है, विस्तार से इस योग के ३२ भेद हैं। मुख्यत: लग्नेश और कार्येश का इत्थशाल योग हो तथा चन्द्रमा भी लग्नेश से, या कार्येश से या दोनों से इत्थशाल करे तो कम्बूल योग है। क्योंकि चन्द्रमा शीघ्रगति ग्रह है, अत: यह योग कबूल अर्थात् स्वीकृति सूचक शुभ फल दायक है। इत्थशाली ग्रह लग्नेश, कार्येश, चन्द्रमा जितने अधिक बली हों, उसी अनुपात से कम्बूल योग का फल होता है और ३२ भेद बनते हैं। नीचस्थ ग्रहों का कम्बूल योग कुफल, कार्यहानि भी करता है।

९–गैरकम्बूल—यथानाम कम्बूल योग का विपरीत अर्थात् अस्वीकृति सूचक है। कुछ आचार्य कुछ स्थितियों में इसे शुभ मानते हैं, इस योग के बारे में भी अनेक भेद हैं। लग्नेश कार्येश का इत्थशाल योग हो किन्तु चन्द्रमा इत्थशाली न हो तो गैरकम्बूल मानना चाहिए।

१०–खल्लासर–अर्थात् रिक्तता सूचक है, लग्नेश कार्येश का इत्थशाल हो किन्तु चन्द्रमा का न तो लग्नेश या कार्येश से इत्थशाल हो, न इनमें किसी के साथ युति ही हो यह खल्लासर योग है।

११–रद्द–यथानाम अस्वीकार या निकम्मापन सूचक है, जब इत्थशाली ग्रह अस्त हो, नीच का हो, शत्रु ग्रही हो, वक्री हो, ६-८-१२ आदि कुस्थान में स्थित हो तो निर्बल होने के कारण इत्थशाल योग होते भी फल नहीं दे पाता अर्थात् ऐसा इत्थशाल योग निकम्मा हो जाता है, ऐसे इत्थशाल ही को रद्द कहते हैं।

१२–दुष्फालीकुत्थ–दुष्फाली अर्थात् बड़े भारी प्रयत्नों से अन्त में शुभ कार्य सिद्ध सूचक योग है। जब इत्थशाली ग्रहों में मन्दगति ग्रह उच्च स्वगृही आदि का बली हो और निर्बल ग्रह शीघ्र गति हो तो यह योग बनता है।

१३–दुत्थोत्थदिवीर–जब रद्दयोग की भाँति लग्नेश कार्येश दोनों निर्बल हों, किन्तु शीघ्र गति के साथ किसी ऐसे ग्रह की युति (दीप्तांशकों के भीतर) हो जो शीघ्र गति ग्रह से मंद गति का हो और स्वराशि या उच्च का हो। यह योग दूसरे की सहायता से, सूझबूझ से सफलता देता है।

१४–तंबीर–यह योग भी तीसरे व्यक्ति के द्वारा कार्य साधक है। लग्नेश व कार्येश ऐसे स्थानों में हों कि उनका इत्थशाल न हो। किन्तु इनमें से कोई ग्रह राशि के अन्त में हो अर्थात २९ अंश पर और ऐसी स्थिति हो कि अगली राशि में प्रवेश करते ही वह इत्थशाल करने लगे। और उस अगली राशि में भी कोई ऐसा ग्रह हो जो उसके उस राशि में प्रवेश करते ही उससे भी इत्थशाल करे।

१५–कुत्थ–इत्थशाली ग्रह बली हों तो कार्यसिद्धि कारक योग 'कुत्थ' बनता है।

१६–दुरफ–इत्थशाली ग्रह निर्बल हों तो अयोग्यता या कार्यहानि सूचक दुरफ योग बनता है।

ध्यान दें

पाठकों ने ध्यान दिया होगा कि मूलतः योग चार (इक्कवाल, इत्थशाल, इन्दुवार, ईशराफ) ही हैं शेष योग इत्थशाल के ही भेद हैं, किस स्थिति में इत्थशाल योग सफलता देता है, और किस स्थिति में नहीं, किस स्थिति में योग भंग हो जाता है ? यह विस्तार से वर्णित है।

अत: इत्थशाल योग देखते समय यह देखना आवश्यक है कि योग का भंग तो नहीं हुआ और उसमें फल देने की क्षमता कितनी है ? चन्द्रमा की युति या इत्थशाल है या नहीं ? इत्यादि।

सहम

षोडश योगों के अलावा पारशीय पद्धति में सहम [सद्‌म अर्थात् गृह] विचार की विशेषता है। जैसे जन्म कुण्डली या वर्ष व प्रश्न लग्न में भी द्वादशभाव–तन, धन, भ्रातृ, सुख, सन्तान आदि के गृह नियत हैं, यह गृह अपने नियत [फिक्सड] हैं। ताजिकाचार्यों का कहना है कि किसी भी विषय-वस्तु पर विचार करने के लिए केवल नियत गृहों [भावों] का विचार पर्य्याप्त नहीं है, अत: उन्होंने जन्मकालीन, वर्षलग्न या प्रश्न कालीन विशिष्ट ग्रहस्थिति के अनुसार [क्योंकि ग्रह निरन्तर चल हैं] प्रत्येक विषय वस्तु के चर गृहों की पद्धति निकाली है। आचार्यों ने चर सदमों को जानने की जो पद्धति स्वीकार की है, उनमें से ५० सद्‌म [सहम] मुख्य हैं, तथा जन्मलग्न, वर्षलग्न या प्रश्न के समय इन सदमों [सहमों] का स्थान जानने की विधि निम्न है—

दिन में जन्म, वर्ष या प्रश्न हो तो

नामसहम	गणित प्रक्रिया			
पुण्य-चन्द्र में	ऋण	सूर्य	फिर धन	लग्न
गुरु-रवि	,,	चन्द्र	,,	,,
ज्ञान/विद्या-रवि	,,	चन्द्र	,,	,,
यश-गुरु	,,	पुण्यसहम	,,	,,
मित्र-गुरुसहम	,,	पुण्यसहम	,,	शुक्र
माहात्म्य-पुण्यसहम	,,	भौम	,,	लग्न
आशा-शनि	,,	शुक्र	,,	,,
समर्थ-मंगल	,,	लग्नेश	,,	,,
भ्रात-गुरु	,,	शनि	,,	,,
गौरव-गुरु	,,	चन्द्र	,,	रवि
राज-शनि	,,	रवि	,,	लग्न
तात-शनि	,,	रवि	,,	,,

माता-चन्द्र	ऋण	शुक्र	फिर धन	लग्न
सुत-गुरु	,,	चन्द्र	,,	,,
जीवित-शनि	,,	गुरु	,,	,,
जल-चन्द्र	,,	शुक्र	,,	,,
कर्म-भौम	,,	बुध	,,	,,
रोग-शनि	,,	चन्द्र	,,	,,
कामदेव-चन्द्र	,,	लग्नेश	,,	,,
कलह-गुरु	,,	मंगल	,,	,,
क्षमा-शनि	,,	भौम	,,	,,
शास्त्र-गुरु	,,	शनि	,,	बुध
बन्धु-बुध	,,	चन्द्र	,,	लग्न
बंदक चन्द्र	,,	बुध	,,	,,
मृत्यु-अष्टमभाव	,,	चन्द्र	,,	शनि
परदेश-नवमभाव	,,	नवमेश	,,	लग्न
धन-धनभाव	,,	धनेश	,,	,,
अन्यस्त्री-शुक्र	,,	रवि	,,	,,
अन्यकर्म-चन्द्र	,,	शनि	,,	,,
वणिक-चन्द्र	,,	बुध	,,	लग्न
कार्य शनि	,,	सूर्य	,,	सूर्यराशीश
विवाह-शुक्र	,,	शनि	,,	लग्न
प्रसूति-गुरु	,,	बुध	,,	,,
संताप-शनि	,,	चन्द्र	,,	षष्टभाव
श्रद्धा-शुक्र	,,	भौम	,,	लग्न
प्रीति-विद्यासहम	,,	पुण्यसहम	,,	,,
बल/सैन्य-गुरु	,,	,,	,,	,,
तनु-गुरु	,,	,,	,,	,,
मूर्खता-भौम	,,	शनि	,,	बुध
व्यापार-भौम	,,	बुध	,,	लग्न
वर्षा-शनि	,,	चन्द्र	,,	,,
शत्रु-भौम	,,	शनि	,,	,,

साहस-पुण्यसहम	,,	भौम	,,	,,
उपाय-शनि	,,	गुरु	,,	,,
दारिद्र-पुण्यसहम	,,	बुध	,,	बुध
गुरुता-०/१०	,,	सूर्य	,,	लग्न
जलमार्ग-३/१५	,,	शनि	,,	,,
बंधन-पुण्यसहम	,,	शनि	,,	,,
कन्या-शुक्र	,,	चन्द्र	,,	,,
घोड़ा-पुण्यसहम	,,	सूर्य	,,	,,
स्त्री-शुक्र	,,	सप्तमेश	,,	,,
देशान्तर-धर्मेश	,,	धर्मभाव	,,	,,

इसी प्रकार रात्रि में जन्म वर्ष या प्रश्न होने पर—

पुण्यम्	सू—चं + ल	गुरु	चं—सू + ल
ज्ञानम्	चं—सू + ल	यश	पु स—गु + ल
मित्रम्	पु स--गु स + शु	महात्म्यम्	मं—पु + ल
आशा	शु—श + ल	सामर्थ्यम्	ल—मं + ल
भ्राता	बृ—श + ल	गौरव	बृ—सू + चं
राज	सू—श + ल	तात	सू—श + ल
माता	शु—चं + ल	सुत:	बृ—चं + ल
जीवितम्	बृ—श + ल	अम्बु	शु—चं + ल
कर्म	बु—मं + ल	रोग:	लग्न—चं + ल
मन्मथ:	लप—चं. + ल.	कलि:	मं—बृ + ल
क्षमा	मं--बृ + ल	शास्त्रम्	श—बृ + बु
बन्धु	बु—चं + ल	बन्दक	बु—चं + ल
मृत्यु	अष्ट—चं + ल	परदेश:	धर्म—धप + ल
धनम्	द्वि—द्विप + ल	अन्यस्त्री	शु—सू + ल
अन्यकर्म	श—चं + ल	वणिक	चं—बु + ल
कार्यसिद्धि	श—चं +	उद्वाह	शु—श + ल
	चन्द्रराशिपति		
सूति:	बु—बृ + ल	संताप	श—चं + रिपुभाव
श्रद्धा	शु—मं + ल	प्रीति:	वि स—पु + ल

बलम्	पु—बृ+ल	तनु:	पु—बृ+ल
जाड्यम्	श—मं+बु	व्यापार	मं—बु+ल
पानीयम्	च—श+ल	रिपु:	श—मं+ल
शौर्य्यम्	मं—पु+ल	उपाय:	बृ—श+ल
दारिद्रम्	पु—बु+बु	गुरुता	१।३—चं+ल
अम्बुपथ	श—३/१५+ल	बन्धन	श—पु+ल
दुहिता	शु—चं+ल	अश्व:	सू—पु+लाभभाव

स्त्री = शुक्र—सप्तमेश + सप्तमभाव

देशान्तर = धर्म भाव—धर्मेश + लग्न

पूर्वोक्त गणित प्रक्रिया करने के बाद कभी-कभी सहम में एक विशेष संस्कार भी करना पड़ता है तब शुद्ध सहम सिद्ध होता है।

जिसको घटाया जाय—उससे लेकर जिसमें घटाया जाय—इस मध्य में यदि पूर्वोक्त प्रकार से सहम स्पष्ट निकले तो कोई संस्कार नहीं किया जाता, अन्यथा उसमें एक राशि और जोड़ देना चाहिए, तब सहम शुद्ध होगा।

उदाहरण

कल्पना करें कि हमें किसी के जन्म, प्रश्न या बर्ष प्रवेश के समय पुण्यसहम का विचार करना है, पृच्छक का प्रश्न है कि मुझसे निकट भविष्य में कोई पुण्य कर्म हो सकेगा या नहीं? प्रश्न, जन्म या वर्ष प्रवेश दिन का है। पहले हम बता चुके हैं कि पुण्य सहम जानने के लिये चन्द्र, सूर्य और लग्न इन तीन घटकों की आवश्यकता होती है, हम कल्पना कर लें कि २० जुलाई ६९ को प्रात: का समय है, जब कि इन तीनों घटकों की स्थिति इस प्रकार है—

सूर्य स्पष्ट	३।३।४०।५६
चन्द्र	५।३।२०। ०
लग्न	३।२५।१३।५७

अत: चन्द्र स्पष्ट में सूर्यस्पष्ट घटाकर—पूर्वोक्त गणित प्रक्रियानुसार—लग्न स्पष्ट जोड़ा—

चन्द्रस्पष्ट	५।३।२०।०
सूर्य	३।३।४०।५६
	१।२९।३९।४
लग्न +	३।२५।१३।५७
	५।२४।५३।१ पुण्यसहम।
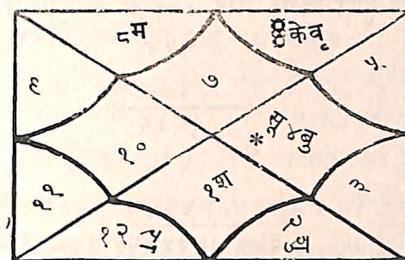
क्योंकि यहां पर सूर्यस्पष्ट का चन्द्र स्पष्ट में घटाया गया है, और पुण्य-सहम इनके मध्य में नहीं है अत: इसमें संस्कार करना है।

क्योंकि पुण्य सहम स्पष्ट ५।२४।५३।१ सूर्य ३-३-४०-५६ से ५-३-२०-० (चन्द्र) के मध्य में नहीं है अत: इसमें एक राशि और जोड़ दी—

५।२४।५३।१
\+ १। ०। ०।०
६।२४।५३।१ यह स्पष्ट पुण्यसहम हुआ।

क्योंकि पुण्यसहम राशि ६।२४।५३।१ स्पष्ट है अत: तुला लग्न रखकर उस समय की ग्रहस्थित्यानुसार कुण्डली खींच दी, यह "पुण्यसहम की कुण्डली" बनी—

8 चं, * वर्षलग्न

इसी प्रकार अन्य सहमों (सद्मों) की भी जिस समय जिसका विचार करना हो सहम–कुण्डली बना लेनी चाहिए। दिन में जन्म, प्रश्न या वर्ष प्रवेश होने पर और रात में होने पर गणित प्रक्रिया कुछ बदल जाती है (किसी सहम में नहीं भी बदलती है)। यह पहले बतलाया जा चुका है।

सहम का फल कब

सहम (सद्म) सम्बन्धी शुभ या अशुभ अर्थात् कार्य सफलता या असफलता कितने दिनों में होगी? यह जानने के लिये–

सहम स्पष्ट में सहम लग्नेश को घटा दें, उसके अंश बना लें, फिर सहम लग्न के स्वदेशीय लग्न मान के स्वदेशीय मान से (लंकोदयों के चरखण्डों द्वारा स्वदेशीय लग्नमान पिछले पाठों में बतलाया जा चुका है–लग्न साधन के क्रम में) इन अंशों को गुणा करें, तब इसमें तीन सौ से भाग लें, लब्धि जो संख्या मिले

उतने ही दिनों में फल होगा अथवा जब सहमेश (सहम लग्नेश) की दशा आयेगी उस समय होगा ।

उदाहरण के लिए यहां पुण्य सहम का लग्न तुला है अत: सहम लग्नेश शुक्र हुआ, अत: देखा कि उस दिन (२० जुलाय ६९) शुक्र स्पष्ट १।२०।३२।१५ है, सहम स्पष्ट में सहम लग्नेश शुक्र घटाया--

६।२४।५३।१
१।२०।३२।१५
५।४।२०।४६

शेष में राशि ५ के अंश बनाये ५ × ३० = १५० + ४ = १५४ अंश हुए, कला-विकला छोड़ दिये । उदाहरण के लिये मान लिया कि यह पुण्य सहम हमें श्री नगर (गढ़वाल) उ० प्र० में देखना है, या जन्म श्रीनगर में है, या हमसे श्रीनगर में प्रश्न पूछा गया है, अस्तु, क्योंकि श्रीनगर में पुण्यसहम लग्न तुला का स्वोदय-मान ३४८ है अत: इससे गुणा किया–और ३०० से भाग लिया–

१५४
× ३४८
१२३२
६१६
४६२
३००)५३५९२(१७८ लब्धि
३००
२३५९
२१००
२५९२
२४००
१९२

अर्थात् वर्ष प्रवेश के दिन से, या प्रश्न दिन से १७८ दिन में शुभाशुभ फल होगा, अत: २० जुलाई ६९ में १७८ दिन जोड़ने पर–

२०।७।१९६९
२८।५।०
+ १७८ दिन = -------------(पांच माह अट्ठाईस दिन)
१८।१।१९७०

अर्थात् १८ जनवरी १९७० को फल मिलेगा ।

अथवा

पुण्य सहम लग्नेश—शुक्र की वर्ष में जब दशा आयेगी उस समय फल होगा।

शुभाशुभ फल

सहम का शुभाशुभ क्या फल होगा, इसके लिए निम्न बातें विचारणीय होती हैं—

(१) सहम लग्नेश की सहम पर दृष्टि है या नहीं ?

(२) सहमलग्न पर शुभ ग्रहों और पाप ग्रहों की दृष्टि ?

(३) सहम लग्न में शुभ ग्रह और पाप ग्रहों की स्थिति ?

(४) सहम लग्नेश स्वराशि, उच्च, वर्गोत्तम का बलवान है या निर्बल ?

(५) सहमेश और सहम लग्न वर्ष या प्रश्न लग्न से ६ ८, १२, में तो नहीं है ?

सहमलग्न का स्वामी बलवान होकर सहमलग्न को देखता हो, सहमलग्न में शुभग्रहों की युति या दृष्टि हो, सहमलग्नेश अष्टमेश सम्बन्ध (दृष्टि या युति) न हो, सहमलग्नेश सहमलग्न से ६, ८, १२ में न हो, और सहमलग्न वर्षलग्न से ६, ८, १२ वें न पड़ा हो तो पूर्ण शुभफल, सफलताप्रद होता है।

इसके विपरीत—सहमेश निर्बल हो, सहमपर सहमेश की दृष्टि न हो, सहमलग्न में पापग्रहों की दृष्टि या युति हो, सहमेश का अष्टमेश से सम्बन्ध हो, सहमेश व सहमलग्न वर्षलग्न से ६,८ १२ में हो तो सहमसम्बन्धी कुफल, विघ्न, कार्यहानि करेगा।

मिश्रित स्थिति में स्वल्पफल, परिश्रम से सफलता सम्भव हो सकेगी।

पूर्वोक्त उदाहरण में—सहमलग्न में किसी ग्रह की युति नहीं हैं, सहमलग्नेश शुक्र स्वगृही बलवान है किन्तु सहम पर सूर्य, शनि, बुध की पापदृष्टि है बर्ष-लग्न से सहम चौथे व सहमेश ग्यारहवें शुभ है, सहमेश का वर्षलग्न से अष्टसेश (शनि) से संबंध नहीं है; सहमेश सहमलग्न से अष्टम है। ऐसी स्थिति में कार्य-सफल होने में सन्देह है, आंशिक सफलता संभव है, क्योंकि बिपरीत योग आधिक हैं इत्यादि,

जन्म में सहम का प्रयोजन

जन्म में भी सहम का विचार क्यों आवश्यक है ? इसलिये कि जो कार्य जीवन में संभव नहीं है, उसका सहम यदि वर्ष में अच्छा भी पड़े तब भी कार्य

सफलता में सन्देह है, जैसे किसी के जन्म लग्न से (जीवन में) भाई का योग नहीं है, इसलिए यदि वर्ष में भ्रातृसहम अच्छा भी पड़े तब भी निष्फल हो जायगा इसलिए आचार्यों ने कहा है कि सहमों (सद्मों) का विचार पहले जन्म में (जन्म-कुण्डली में) करना चाहिए और जो सद्म उसमें अच्छे (संभव) हों, उन्हीं का विचार वर्ष या प्रश्न में करे-तभी निर्णय होगा—

आदौ जन्मनि सर्वेषां सहमाना बलाबलम् ।

विमृश्य संभवो येषां तानि वर्षे विचिन्तयेत् ॥

उलटा फल

कुछ सहम ऐसे भी हैं, जिनका निर्बल एवं विपरीत होना ही अच्छा है, जैसे मांदि (रोगसहम), शत्रु, कलह, मृत्यु, दरिद्र आदि बलवान् होंगे तो रोग, शत्रु, कलह, मृत्यु, दरिद्रता में वृद्धि करेगें, अत: इनका निर्बल एवं विपरीत होना ही हित में है ।

'मांद्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययाद्‌दादिशेत्फलम्'

कुछ व्याख्यायें

कुछ सहमों के ऐसे नाम हैं जिससे उनका वास्तविक अर्थ क्या है ? भ्रम संभव है, आचार्यों ने ऐसे सहमों की व्याख्या इस प्रकार की है—

गुरु = गुरु, उपदेशक, शिक्षक

ज्ञान = विद्या, शास्त्राध्ययन

जाड्य = अज्ञानता, विस्मृति आदि

बल = सैन्यशक्ति

वपु या देह = शरीर, शारीरिक गठन, स्वाथ्य

जल = शारीरिक कान्ति,

गौरव = मानप्रतिष्ठा

राज = राजा व शासन की कृपा, राज्यप्राप्ति राजद्वार से सफलता, अधिकार प्राप्ति ।

माहात्म्य = युक्तिचातुर्यता, मंत्रयुक्ति,

धृति = चतुरता, बुद्धिचातुर्य

सामर्थ = शारीरिक बल

गुरुता = विशेषाधिकार प्राप्ति

शौर्य या साहस = शत्रु से निपटने की शक्ति
आशा = इच्छा,
श्रद्धा = धर्म के प्रति आस्था
वंदक = पराश्रयता
पानीयम् = वर्षा होना या जल में डूबना
(प्रश्नानुसार)
माँदि या रोग = मानसिक व शारीरिक कष्ट, ज्वर,
अन्यकर्म = दूसरे की सेवा
प्रसूती = सन्तानोत्पत्ति, प्रसव
बन्धु = सगोत्रीय व्यक्ति, सपिण्ड ।
शेष नाम स्पष्ट हैं ।

ताजिक में भाव फल

ताजिक तथा जातक में ग्रहों का भावफल सर्वत्र प्राय: समान है, केवल जो विशेषफल ताजिकशास्त्रों में कहे हैं वह इस प्रकार हैं—

(१) लग्न में बुध अकेला या शुभ ग्रह युक्त हर्ष देता है ।

(२) धनभाव में शनि कार्यों में विघ्न एवं असफलता तथा राजद्वारीय मामलों में विपरीत, भय करता है ।

(३) तीसरे में चन्द्रमा हर्षप्रद विशेष अच्छा होता है ।

(४) पंचम में शुक्र हर्षप्रद विशेष अच्छा होता है ।

(५) षष्ठ में शुभ ग्रह अच्छे नहीं हैं, पापग्रह तो षष्ठ में सर्वत्र शुभ माने है, यहां मंगल विशेष अच्छा होता है ।

(६) अष्टम में भी शुभ ग्रह अच्छे नहीं कहे हैं ।

(७) नवम में पापग्रह सहोदरों से समस्यायें, पशु वाहनादि पीड़ा दायक माने जाते हैं, सूर्य को नवम में हर्षप्रद विशेष अच्छा मानते हैं ।

(८) दशम में शुभ व पाप ग्रह सभी अच्छे हैं, केवल शनि को अच्छा नहीं मानते, दशमशनि पशु, वाहन तथा धनहानि कारक होता है ।

(९) ग्यारहवे में पापग्रह भी (यदि निर्बल हों तो) शुभ फल नहीं करते ।

(१०) व्ययस्थान में शनि को अशुभ न मानकर उलटे हर्षप्रद अच्छा मानते हैं ।

मास प्रवेश लग्न

जिस प्रकार वार्षिक फल की सूक्ष्मता के लिये वर्षफल बनता है, उसी प्रकार मुद्दा एवं पात्यंशी आदि अनेक दशाओं के होते भी प्रत्येक मास का सूक्ष्म फल जानने के लिये मासकुण्डली बनती है। जिस मास में दशा (मुद्दा, पात्यंशी-आदि) अच्छी हो और मासकुण्डली भी अच्छी हो उस मास अवश्य समय अच्छा जायगा। दोनों विपरीत हों तो विपरीत रहेगा। एक अच्छा एक बुरा हो तो साधारण रहेगा। इस प्रकार मास कुण्डली से मास का सूक्ष्मफल कहा जाता है तथा मासकुण्डली के ग्रहस्थिति से यह भी देखा जाता है कि कौन मास किस विषय में (कौन भाव) अच्छा या अशुभ है।

'जन्म कालीन सूर्य प्रतिमास जब जब अंश, कला, विकला में समान होता है, उक्त समय में प्रतिमास मास प्रवेश होता है''

एक कल्पना करें कि किसी के जन्म कुण्डली में राश्यादि सूर्यस्पष्ट १।२।१४।५६ है इसमें राशि का पहला अंक छोड़कर अंशादि २।१४।५६ जब सूर्य होगा, तब-तब प्रतिमास प्रवेश होगा—

राश्यादि सूर्य स्पष्ट		मास प्रवेश
१।२।१४।५६	=	प्रथम मास प्रवेश
२।२।१४।५६	=	द्वितीय ,,
३।२।१४।५६	=	तृतीय ,,
४।२।१४।५६	=	चतुर्थ ,, इत्यादि

अब बांछित सूर्य स्पष्ट अपने उपरोक्त स्थिति में कब आयगा? यह जानने के लिये प्रत्येक पंचांग में साप्ताहिक या दैनिक सूर्य या सूर्यादि ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं सूर्य लगभग एक दिन में एक अंश चलता है, इसमें ज्ञात हो जायगा कि लगभग किस दिन मास प्रवेश होगा।

"बाँछित सूर्य स्पष्ट के लगभग निकटस्थ सूर्य स्पष्ट पंचांग में किस दिन है यह देख लें और अपने बाँछित सूर्य स्पष्ट में अन्तर कर लें। बाँछित सूर्य स्पष्ट को 'मासार्क' तथा पंचाँग के सूर्य स्पष्ट को 'पंत्यर्क' कहते हैं। इन दोनों के अन्तर की बिकला बनाकर इसमें पंत्यर्क में सूर्य स्पष्ट के नीचे जो सूर्य स्पष्ट

की गति दी है उससे भाग ले लें। प्राप्त लब्धि क्रमश: वार, घटी और पल होंगें इस लब्धि को मासार्क से पंत्यर्क का वारादि इष्ट अधिक हो तो इसे वारादि इष्ट में घटा दें और मासार्क से पंत्यर्क कम हो तो पंत्यर्क के वारादि इष्ट में जोड़ दें। यह मास प्रवेश का बार तथा घटी पलात्मक इष्टकाल होगा। अब इस इष्टकाल से लग्न निकाल कर कुण्डली बना लें, यह मास कुण्डली या मास प्रवेश लग्न होगा।

उदाहरण

कल्पना की कि एक व्यक्ति का जन्म कालीन सूर्य स्पष्ट १।२।१४।५६ है, अत: राश्यादि सूर्य १।२।१४।५६ पर उसे प्रथम मास प्रवेश होगा। उल्लेखनीय है कि प्रथम मास प्रवेश की कुण्डली जो वर्ष कुण्डली होती है वही होती है अत: प्रथम मास कुण्डली स्वत: बन जाती है। अब राश्यादि सूर्य स्पष्ट २।२।-१४।५६ आने पर इसे दूसरा मास प्रवेश होगा। अब इसके निकटस्थ पंचाँग में सूर्य देखना है। पंचाँग के साप्ताहिक ग्रहस्पष्टों में (आषाढ़ अधिक शुक्ल पक्ष-२०२६, तदनुसार १५ जून १९६९) रविवार घटयादि ३१।५५ के ग्रह स्पष्ट हैं, जिसमें सूर्यस्पष्ट २।०।४८।२५ गति ५७।१५ है। यह पन्त्यर्क हुआ, अत:—

मासार्क २।२।१४।५६
पंत्यर्क २।०।४८।२५

इनका अन्तर किया = १।२६।३१
इसकी विकला बनानी हैं

१ अंश की कला बनायी
× ६०
६० कला
× २६ कला
८६ इसकी विकला बनायीं
× ६०
= ५१६०
+ ३१ विकला
५१९१ बिकला कुल

(२) पंचाँग में सूर्य की गति ५७।१५ की विकला बनायीं—५७ × ६० = ३४२० + १५ = ३४३५।

(३) पूर्वोक्त विकालात्मक मान से इससे भाग लिया ।

```
३४३५)५१९१(१ बार
     ३४३५
     ----
     १७५६
      ×६०
   ------
   १०५३६०(३० घटी
   १०३०५
   -----
     २३१०
      ×६०
   ------
   १३८६००(४० पल
   १३७४०
   -----
     १२००
```

वारादि लब्धि १।३०।४०

क्योंकि मासार्क २।२।१४।५६

पन्त्यर्क २।०।४८।२५

मासार्क से पंत्यर्क कम है, इसलिये इस लब्धि को पंत्यर्क के वारादि इष्ट (जैसा कि ऊपर बताया है पंचाँग का सूर्य स्पष्ट रविबार को ३१।५५ के हैं अतः पंत्यर्क का वारादि इष्ट १ बार, ३१ घटी, ५५ पल हुए) में जोड़ दिया–

पन्त्यर्क का वारादि इष्ट १।३१।५५

लब्धि———————— १।३०।४०

= बारादि ३। २।३५

अर्थात् मंगलबार (१७ जून ६९) को प्रातः २ घटी ३५ पला पर मास प्रवेश हुआ, इष्ट पर लग्न निकाल कर कुण्डली बन जायगी । इस वर्ष प्रवेश के दिन से अगले वर्ष प्रवेश तक बारह महीनों की बारह मास कुण्डली निकल आयेंगी ।

मुँथास्पष्ट

मासकुण्डली में ग्रह स्थिति मास प्रवेश दिन एवं पूर्वोक्त आगत इष्ट की लिखी जायगी मुंथा के लिये यह ध्यान देने योग्य है कि जन्म लग्न स्पष्ट अंशादि जो हो वही प्रति वर्ष मुंथा के अंशादि होते हैं, राशि बदल जाती है । प्रत्येक

वर्ष एक राशि बढ़ती है अतः जन्मलग्न स्पष्ट में गतवर्ष जोड़ने पर प्रतिवर्ष मुंथा स्पष्ट हो जाती है (वर्ष प्रवेश लग्न में) इसके बाद प्रतिमास २ अंश ३० कला चलती है, तदनुसार जितना मुंथा स्पष्ट हो-तदनुसार रख दें।

उदाहरण के लिये मान लिया कि जन्म लग्न स्पष्ट ६।२५।०।१४ है गत-वर्ष ३७ हैं।

अतः ६।२५।०।१४
+३७
―――――
४३।२५।०।१४

पहली संख्या १२ से अधिक है अतः १२ से भाग लेने पर शेष ७।२५।०।१४ यह ३८वें वर्ष प्रवेश पर (यही ३८वें वर्ष के प्रथम मास प्रवेश पर भी) मुंथा होगी।

दूसरे मास प्रवेश पर २ अंश ३० कला
बढ़ी—७।२५।०।१४
२।३०
―――――
७।२७।३०।१४

अतः वृश्चिक राशि में २७ अंश पर मुंथा होने से वृश्चिक में रक्खी जायगी।

मास कुण्डली के अधिकारी एवं फल

वर्ष कुण्डली की भांति मास कुण्डली में भी अधिकारी होते हैं, मास लग्न-पति—यह एक अधिकारी और बढ़ जाता है। त्रिराशिपति, मुंथापति, सूर्य राशिपति—मास प्रवेश समयानुसार होते हैं।

मासकुण्डली में जिस भाव का बिचार करना हो, उस भाव का नवांश-स्वामी तथा उस भाव का स्वामी जिस राशि के नवाँश में हो उस राशि का स्वामी उन्हें देखता हो इनके अच्छे स्थान होने परस्पर मित्र होने या न होने पर ही शुभाशुभ फल कहा जाता है, यह विशेष पद्धति है। मासलग्न का नवांशेश तथा मासलग्नेश जिस नवाँश में हो उस राशि का स्वामी शुभ (स्थान में) तथा परस्पर मित्र होने से मास अच्छा होता है।

दिन-प्रवेश

मास प्रवेश की ही भांति प्रत्येक दिन की दिन प्रवेश कुण्डलियां भी बनती हैं। जब-जब प्रतिदिन सूर्य कला विकला जन्मकालीन सूर्य की कला

विकला के तुल्य हो तब तब दिन प्रवेश होता है, इस प्रकार सूर्य के एक एक अंश चलने पर वर्ष में ३६० दिन प्रवेश कुण्डलियां बनती हैं।

कुछ पचाँगों में दैनिक सूर्य दिया रहता है, कुछ में साप्ताहिक। अपने वाञ्छित सूर्य और पञ्चांग के सूर्य का अन्तर कर लें यहां पर वाञ्छित सूर्य, दिनार्क और पचाँग का सूर्य का पंत्यर्क होगा। जिस प्रकार मास प्रवेश लग्न के लिये पंत्यर्क और मासार्क से इष्ट निकाला, उसी प्रकार दिनार्क और पत्यर्क से दिन प्रवेश का इष्टकाल व लग्न ज्ञात होगा। तदनुसार मास कुण्डली बन जायगी।

ऊपर पिछले अभ्यास में उदाहरण देकर समझा दिया है, उसे देखें— किसी जन्मकालीन सूर्य स्पष्ट १।२।१४।५६ है, प्रतिवर्ष जब सूर्य स्पष्ट इतना होगा, तब वर्ष प्रवेश प्रथम मास प्रवेश प्रथम दिन प्रवेश एक साथ होंगे। अब जब सूर्य एक अंश बढ़ जायगा अर्थात् १।२।१४।५६ + ०।१।०।० = १।३। १४।५६ सूर्यस्पष्ट आने पर वर्ष का दूसरा दिन प्रवेश होगा, इसी प्रकार एक एक अंश जोड़ते जायेंगे तो प्रतिदिन का दिन प्रवेश लग्न होगा ३१वें दिन प्रवेश व दूसरे मास प्रवेश, ६१वें दिन व तीसरे मासप्रवेश की कुण्डली एक ही होगी इसी प्रकार और भी। अब पूर्वोक्त मासप्रवेश साधन में बतलाई विधि से सूर्य स्पष्ट १।३।१४।५६ कब आयगा, यह जान लें इससे दूसरे दिन की दिन कुण्डली बन जायेगी।

मुंथा साधन मुंथा प्रतिदिन ५ कला चलती है, तदनुसार लिख लें, पूर्वोक्त उदाहरण में वर्ष प्रवेश पर मुंथास्पष्ट ७।२५।०।१४ थी, दूसरे दिन प्रवेश पर—

७।२५।०।१४
+ ०।०।५।०
―――――――
७।२५।५।१४ होगी

फलादेश

दिन प्रवेश कुण्डली में फल कथन के लिए—

(अ) दिन प्रवेश लग्न कुण्डली के अनुसार

(आ) ,, ,, में लग्न नवांशानुसार

(इ) और ,, ,, में चन्द्र नवांशानुसार

यह तीन विधियाँ है।

दिन प्रवेश कुण्डली की ग्रह स्थिति के अनुसार भावफल जो भाव जैसा हो। फिर भी नवांश का विचार मुख्य है। दिन प्रवेश कुण्डली के द्वादश भाव स्पष्ट कर लें प्रत्येक भाव स्पष्ट जिस नवांश में हो वह राशि शुभ, स्वस्वामी से युक्त या दृष्ट हो, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो शुभ है। उस भाव सम्बन्धी शुभ-फल देगा। उदाहरण के लिये एक का दिन प्रवेश लग्न स्पष्ट ०।१८।१३।१७ है, दशमभाव स्पष्ट ९।६।३०।३८ है, हमें राज्यभाव का विचार करना है अत: दशमभाव देखेंगे। क्योंकि दशमभाव ९।६।३०।३८ (मकर राशि के ६ अंश ३० कला है) अत: कुंभ का नवांश हुआ कुम्भ राशि स्वस्वामी से शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्टि होने पर राज्य सम्बन्धी शुभफल कहेंगे। पापयुक्त, स्वस्वामी से रहित निर्बल होने पर राज्य सम्बन्ध में यह दिन अच्छा नहीं जायगा।

चन्द्रमा की अवस्था से फल

दिन प्रवेश के समय चन्द्रमा की जैसी अवस्था हो उसी प्रकार दिन व्यतीत होता है, यह भी एक फल कथन विधि है। दिन प्रवेश के समय चन्द्रमा स्पष्ट बना लें राशी छोड़ कर शेष तीन अंश कला, विकला को देखें, प्रत्येक ढाई अंश पर चन्द्रमा की एक अवस्था होती है, २ अंश ३० कला विकला तक प्रथम इसी प्रकार ५।०, ७।३०, १०।०, १२।३०, १५।०, आदि ढाई-ढाई अंश की अवस्था होती हैं जिनके नाम व फल क्रमश: इस प्रकार हैं प्रवास (विदेश या घर से बाहर प्रवास) नाश (हानि कष्ट) मरण (कष्ट), जया (विजय), हास्य (प्रसन्नता, स्त्रीविलासादि मनोरंजन), रति (स्त्री सुख, प्रसन्नता) क्रीडित (सुख, खेल कूद) सुप्ता (नींद, आलस्य, कलह, कष्ट) भुक्ता (भय) ज्वरा (ज्वर, संताप) कंपिता (हानि) और स्थिरा (सुख)।

पदाधिकारी

वर्ष कुण्डली के ५ मास कुण्डली के ६ पदाधिकारियों का वर्णन ऊपर आ चुका है। दिन कुण्डली में दिन प्रवेश लग्नेश को भी मिलाकर कुल ७ अधिकारी होते हैं।

१—जन्मलग्नेश, २ व वर्षलग्नेश, ३ दिन कुण्डली मुन्थेश, ४ दिन कुण्डली से त्रिराशिपति, ५ दिनप्रवेशानुसार सूर्य चन्द्र राशि पति, ६ पहला दूसरा तीसरा जो मास चल रहा हो उस मासप्रवेश लग्न का पति और ७ दिन प्रवेश लग्न का पति। इन सातों में जो बली होकर दिन प्रवेश लग्न को देखे वह दिनेश होता है।

विश्व की समय प्रणालियाँ

भारतीय गणराज्य के अन्तर्गत कहीं के लिये भी जहां तक कि भारतीय राष्ट्रीय समय (इण्डियन स्टैन्डर्ड समय) प्रचलित है, इष्टकाल व लग्न साधन आपको बतलाया जा चुका है। इष्टकाल साधन तो भारत में सरल है, जहां तक लग्न साधन है वह भी यदि अपने इष्टस्थान की लग्न सारिणी उपलब्ध (वाँछित स्थान की अंक्षाशानुसार) हो तो सरल है, वाँछित अक्षांश की लग्न सारिणी न होने पर भी सायनसूर्य के द्वारा स्वदेशीय लग्न मान से लग्न साधन कर सकते हैं।

लेकिन भारतीय सीमा से बाहर का यदि इष्टकाल बनाना पड़ जाय तो यह पद्धति काम न देगी। वास्तविकता यह है कि आजकल ९९ प्रतिशत ज्योतिर्विद भारतेतर देशों में इष्टकाल व लग्न साधन नहीं जानते हैं, यह एक लज्जा का विषय है, अत: हम सरल प्रकार से विदेशीय इष्टसाधन प्रक्रिया पर प्रकाश डालेंगे।

सर्वप्रथम हमें जहां का इष्टकाल साधन करना है उस स्थान का अक्षांश और देशान्तर रेखा ज्ञात करनी होगी। और इसके बाद उक्त देश में प्रचलित राष्ट्रीय समय से भारतीय राष्ट्रीय समय में कितना अन्तर है यह ज्ञात करना होगा, भारतेतर देशों के प्रसिद्ध नगरों एवं प्रत्येक राष्ट्र के राष्ट्रीय समय से भारतीय स्टैन्डर्ड समय का कितना अन्तर है, यह जानने के लिये विश्व समय सारिणी देखें।

आधुनिक समय प्रणाली के मुख्य दो भाग हैं (१) स्पष्ट समय (लोकल टाइम) (२) निर्धारित समय या स्टैन्डर्ड टाइम। स्पष्ट समय या लोकल टाइम वह समय है जो कि वैज्ञानिक एवं गणित से ठीक ठींक हो। इसके आधार यह हैं कि सामान्यत: भूमध्य रेखा पर प्रति देशान्तर रेखा पर ४ मि० का अन्तर रहता है। भूमध्य रेखा से उत्तर दक्षिण देशों में पृथ्वी के झुकाव के कारण अन्तर आ जाता है। यदि भूमध्य रेखा पर किसी देशान्तर रेखा के स्थान पर ६ बजे हैं तो यह आवश्यक नहीं है कि उस देशान्तर रेखा के ३० अक्षांश उत्तर या दक्षिण में भी ६ बजे होंगे।

पृथ्वी के इस झुकाव से कुछ अन्तर रहता है, परन्तु किसी भी अक्षांश का उत्तर या दक्षिणवर्ती प्रदेश हो या भूमध्य रेखा पर हो प्रति देशान्तर ४ मि० का अन्तर पड़ता है। इस प्रकार प्रत्येक शहर का भिन्न भिन्न समय होगा। इलाहाबाद में जब ६ बजेंगे लखनऊ में ५-५६ और बनारस में ६-४ तथा कलकत्ता में ६-२६ का समय होगा। इस प्रकार के समय से रेलादि के समस्त आवागमन यातायात एवं जन साधारण में बड़ी असुविधा रहती है। यदि कलकत्ते से कोई लखनऊ में आये तो उसे रास्ते भर प्रत्येक देशान्तर पार करने ७ स्थानों पर ४/४ मि० समय घटाना होगा।

इन असुविधाओं को ध्यान में रख कर हर एक देश में स्टैन्डर्ड समय नियुक्त रहता है, इसके लिये उस देश के किसी एक स्थान का लोकल टाइम लिया जाता है। इसी आधार पर भारतीय स्टैडर्ड टाइम करीब करीब बनारस के लोकल टाइम को लेकर बनाया गया है। बनारस का जो लोकल टाइम होगा वही सम्पूर्ण भारत में चलेगा। किन्तु भारत के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी समय की सुविधा हो तो अच्छा हो। इसी कारण भारत में आज कल जो स्टैन्डर्ड समय प्रचलित है वह ग्रीनविच पर आधारित है, ग्रीनविच में विश्व की सबसे बड़ी वेधशाला है वहाँ से प्रतिदिन दिन के १ बजे समस्त देशों को समय बतलाया जाता है। प्रति देशान्तर ४ मि० के हिसाब से ग्रीनविच व बनारस में ५ घन्टे ३२ मि० का अन्तर है, अपनी सुविधा के लिये इसे ५-३० मान कर भारतीय स्टैन्डर्ड टाइम चलता है। ग्रीनविच वेधशाला के समय में ५.३० जोड़ने से काशी का लोकल टाइम सामान्यरूप से बनता है। किन्तु दोनों के भिन्न भिन्न अक्षांश होने से इनमें भी कभी कभी बीस (२०) मि० तक का अन्तर आ जाता है। केवल ८ अप्रैल, २४ जून, २४ अगस्त, २६ दिसम्बर को ठीक ग्रीनविच समय में ५-३० जोड़ने से काशी का लोकल टाइम होता है। अन्य दिनों में पृथ्वी के झुकाव के अनुसार अन्तर आ जाता है।

अत: भारतीय स्टैन्डर्ड समय = ग्रीनविच + ५-३० (लगभग काशी का लोकल टाइम)। कई बड़े शहरों में अब भी लोकल टाइम प्रचलित है। जैसे कलकत्ते में। अत: जो व्यक्ति कभी कलकत्ते जायगा उसे नगर में प्रवेश करने पर अपनी घड़ी में २२ मि० बढ़ाना होगा।* बम्बई में भी लोकल समय लागू करने के हेतु कारपोरेशन में कोशिश की गई थी जो सफल न हुई। यदि यह बिल

---

* वर्तमान में लोकल समयों का प्रचलन बन्द है। कलकत्ता में भी अब लोकल टाइम नहीं चलता है।

पास हो जाता तो बम्बई जाने वालों को अपनी घड़ी में ४४ मि० कम करने होते ।

सर्व प्रथम चीन जाने पर ३१ अगस्त को श्री नेहरू जी ने चुंगकिंग में १० बजे रात रेडियो में भाषण दिया था, किन्तु समय की अनभिज्ञता से लोग इसे घर में रेडियो रहते हुये भी न सुन सके, ग्रीनविच समय से उस समय २।१०पी० एम० होगा और भारतीय स्टैन्डर्ड समय से उस समय ७।४० पी० एम० रहा होगा ।

रूस जापान की संधि १५ सितम्बर को १० बजे (ए० एम०) हुई थी । भारत में उस समय ३ बजकर ३० मि० (पी० एम) होंगे ।

ग्रेट ब्रिटेन एवं उनके आस पास एक ब्रिटिश स्टैन्डर्ड टाइम चलता है । ब्रिटेन के समस्त राजकीय कार्यो व नगरों में भी इसका उपयोग होता है । यह समय ग्रीनविच समय से एक घंटा पीछे होता है । अर्थात् जी० एम० टी० (ग्रीनविच मध्य टाइम) से ६ बजे हो तो बी० एस० टी० से ५ बजे होंगे ।

इसी प्रकार यू० एस० ए० अमेरिका में विभिन्न प्रान्तों में अलग-अलग समय हैं । पूरे राष्ट्र में एक समय नहीं चलता है ।

इसके अतिरिक्त कई देशों में स्वदेशीय लोकल समय भी प्रचलित है । फ्रांस, नार्वे आदि में पेरिस टाइम का प्रचलन है जो कि पेरिस के लोकल टाइम पर चलता है । ग्रीनविच से पेरिस तक देशान्तर रेखा में प्रति देशान्तर ४ मि० के हिसाब से पेरिस का लोकल समय निकलेगा ।

यूरोप के अन्य देशों में तथा अन्य भी जहां कि छोटे छोटे देश हैं । जैसे उदाहरणार्थ जापान, जर्मनी हैं, इसमें स्टैन्डर्ड टाइम प्रत्येक देश का भिन्न भिन्न है । जिसका आधार यह है कि ग्रीनविच से पश्चिम में प्रति १५ देशान्तर एक घंटा ऋण, और पूर्व में एक घंटा धन कीजिये । वह उस देश का समय होगा । उदाहरणार्थ माना कि ग्रीनविच से १३५ पश्चिम देशान्तर रेखावर्ती देश में क्या समय होगा ? क्योंकि १५ देशान्तर में १ घंटा पश्चिम में ऋण होता है । इसलिये १३५ पर १५ × ९ = १३५ अत: ९ घंटा ऋण होगा । तात्पर्य यह है कि १३५ देशान्तर से १५० देशान्तर रेखा पश्चिम तक के देशों में ग्रीनविच समय में १० घन्टे कम करने से जो आयेगा वह उस देश का स्टैन्डर्ड समय होगा । माना कि उस समय ग्रीनविच वेदशाला में १२ बजे रात का समय है तो उक्त देशों में १२–१० = २ बजे होंगे । उसी को वहा स्टैन्डर्ड समय मानकर उपयोग में लाया जा सकता है ।

क्योंकि बच्चे का जन्म समय स्टैन्डर्ड समयानुसार बतलाया जाता है, और भारत के समस्त पंचांग लोकल समयानुसार बनते हैं, सिर्फ कुछ पंचांग स्टैन्डर्ड समय से बनते हैं। परन्तु कुण्डली निर्माण के लिये वह लोग अपने नगर का स्टैन्डर्ड सूर्योदय नहीं निकाल पाते। यद्यपि बड़े पंचांगों में इसकी विधि दी रहती है किन्तु यह सभी के समझ के बाहर है। जो कोई देशान्तर देखते भी हैं वे प्रति देशान्तर ४ मि० के हिसाब से देख लेते हैं। किन्तु पृथ्वी के झुकाव जो कि भिन्न-भिन्न तिथियों में अलग-अलग रहते हैं, के कारण जो अन्तर आता है उससे और भी अशुद्ध हो जाता है। यदि आज बम्बई के लोकल और स्टैण्डर्ड समय में १ घण्टे अन्तर आता है तो यह आवश्यक नहीं कि वह हमेशा ही १ घन्टा रहेगा। भिन्न तिथियों में अन्तर भिन्न होता है। इस प्रकार जब जन्म पत्र का निर्माण किया जाता है तो ज्योतिषी जन्म के स्टैन्डर्ड समय को लोकल समय मान कर ही कुण्डली बना देते हैं जिससे कभी-कभी दो घन्टे तक का भी अन्तर आ जाता है। इस अन्तर से यदि ग्रहों के शुभाशुभ फल में तो कोई विशेष अन्तर नहीं भी आयेगा किन्तु कौन ग्रह का फल किस समय कौन तिथि में होगा यह जानना हो तो एक एक मिनट के अन्तर में पांच पांच दिन तक का अन्तर आ जाता है १ घन्टे में १० महीने का। यदि हम उस कुण्डली में कोई घटना जनवरी में होने को कहें तो वह नवम्बर में होगी। खेद का विषय है कि आधुनिक युग में घड़ी सर्वत्र सुलभ रहते भी उसके उपयोग में इस प्रकार असावधानी की जाती है।

विदेशी समय सारिणी

ब्रिटेन स्थित ग्रीनविच वेधशाला में जिस समय दिन के १२ बजेंगे, उस समय विभिन्न देशों में जो स्थानीय अर्थात् लोकल (धूपघड़ी) समय होगा, और जो राष्ट्र में प्रचलित स्टैन्डर्ड समय होगा, दिया गया है, इससे किसी भी समय का विदेशी समय देखा जा सकता है।

नगर का नाम	धूपघड़ी समय घं० मि०	राष्ट्रीय या स्टैन्डर्ड समय घं० मि०
एडिलेड	९।१४ P.M.	९।३० P.M.
अन्थस्	१।३५ ,,	२।० ,,
आकलैण्ड	११।३९ ,,	११।३० ,,
बर्लिन	१२।५४ ,,	१।० ,,

बम्बई	४।५१ ,,	५।३० ,,
ब्रिसब्रेन	१०।१२ ,,	१०।० ,,
बुएनोसएैरेंज	८।७ A.M.	८।० A.M.
कलकत्ता	५।५३ P.M.	५।३० P.M.
केपटाउन	१।१४ ,,	२।० P.M.
शिकागो	६।१० A.M.	६।० A.M.
कोपनहेग	१२।५० ,,	१।० ,,
इस्तेम्बुल	१।५६ P.M.	२।० P.M.
लेनिनग्राड	२।१ ,,	२।१ ,,
मदरास	५।२१ ,,	५।३० ,,
मेड्रिड	११।४५ A.M.	१२।० दिन
माल्टा	१२।५८ P.M.	१।० P.M.
मैलबोर्न	६।४० ,,	१०।० ,,
मोण्ट्रयाल	७।६ A.M	७।० A.M
मास्को	२।३० P.M.	२।१ P.M.
न्यूओर्ल्याज	६।० A.M.	६।० A.M.
न्यूयार्क	७।४ ,,	७।० ,,
पनामा	६।४२ ,,	७।० ,,
पेरिस	१२।९ P.M.	१२।० दिन
पेकिंग	७।४६ ,,	८।० P.M
पर्थ, प. आस्ट्रेलिया	७।४३ ,,	८।० ,,
कुईवेक [कनाडा]	७।१५ A.M	७।० A.M.
रिओडि यनेरो	९।७ ,,	९।० ,,
रोम	१२।५० P.M.	१।० P.M.
राटरडम	१२।१८ ,,	१२।२० ,,
सेनफ्रांसिस्को	३।५० A.M.	४।० A.M.
वालपरैसो	७।१४ ,,	७।० ,,
बैनकूपर	३।३८ ,,	४।० ,,
वियना	१।५ P.M.	१।० P.M.
वेलिंगटन	११३९ ,,	११।३० ,,
योकोहामा	९।१९ ,,	९।० ,,

उदाहरण—माना कि हमें देखना है जब भारत के राष्ट्रीय समय से रात के आठ बजेगें, पेरिस का राष्ट्रीय समय क्या होगा ? भारत के जब साय ५।३० बजते हैं, तब पेरिस में दिन के १२ बजते हैं, अर्थात् हमारे समय से ५।३० पीछे रहता है, अत: ८।० में ५।३० ऋण किया तो २।३०, अर्थात् पेरिस में उस समय दिन के ढाई बजे होंगे। इत्यादि।

भारतीय राष्ट्रीय समय से विभिन्न देशों के समय का अन्तर

विदेशों के स्टैन्डर्ड टाइम और भारतीय स्टै० टाइम का अन्तर—या + के चिन्हों में है। भारतीय स्टै० टा० में उतना समय ऋण या धन करने से उक्त देश का स्टै० टा० होगा।

			घं०	मि०
[१]	न्यूजीलैण्ड	+	६–०
	नोट :—अक्टूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक	+	६–३०
[२]	टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यूवेल्स, (ब्रोकेन हिल छोड़कर) क्वीन्सलैण्ड	+	४–३०
[३]	जापान, कोरिया	+	३–३०
[४]	दक्षिण आस्ट्रेलिया, ब्रोकेनहिल प्रान्त, उत्तर टेरीटोरी (आस्ट्रेलिया)	+	४–०
[५]	सायबेरिया रेखांश ९७।३० से १११।३० पूर्व तक, चीन, हांगकांग, वियतनाम	+	२–३०
[६]	साराबान	+	२–०
	(सितम्बर १४ से दिसम्बर १४)	+	२–२०
[७]	बंगलादेश	+	०–३०
[८]	पाकिस्तान	—	०–३०
[८B]	ईरान	—	२–००
[९]	यूरोपियन रसिया	—	२–३०
[१०]	यूगेण्डा, केनिया, कालनी	—	३–००
[११]	पूर्वीय यूरोप, फिनलैण्ड, यूरोप कष्ट्री पूर्वीय विभाग, मध्य यूरोप जोन, पेलेस्टइन, सीरिया, मिश्र द० अफ्रिका	—	३–३०

टिप्पणी—पूर्वीय यूरोप फिनलैण्ड में
२० जून से ३० सितम्बर तक — २–३०

[१२] फ्रांस, वेल्जियम, मध्य यूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, हंगरी, स्विटजरलैण्ड यूगोस्लाविया, अल्वानिया, इटली, सर्वोनिया, सिसली, माल्टा — ४–३०

[१३] ग्रीनविच, (ब्रिटिश द्वीप) और पश्चिमी यूरोप — ५–३०
टिप्पणी— ग्रिनविच में २३ अप्रैल से
७ अक्टूबर तक — ४–३०
तथा फ्रांस और वेलजियम में १९ अप्रैल से
४ अक्टूबर तक — ४–३०

[१४] हालैण्ड — ५–१०

[१५] आइसलैण्ड — ६–३०

[१६] पूर्वीय ब्राजिल — ८–३०

[१७] युरुगुआ — ९–०

[१८] लेब्राउडर न्यूफाण्डलैण्ड — ९–०
टिप्पणी—मई के प्रथम रविवार से अक्टूबर के प्रथम रविवार तक — ८–०

[१९] अटलांटिक केनेडा, सेण्ट्रल ब्राजिल, सूरीनाम — ९–०

[२०] E. T. पूर्वीय केनेडा ६८ से ८९ रेखांश, पूर्व यू. एस. ए. स्टेट्स चील, पेरू तथा पश्चिम ब्राजिल — १०–३०
टिप्पणी—रे. ६८ से ८९ रे. पश्चिम यू. एस. ए. स्टेट्स चील में १ सितम्बर से ३१ मार्च तक (A.T.) — ९–३०

[२१] (C.T.) मध्य केनेडा ८९ से १०३ रेखांश तक, मध्य यू.एस.ए. स्टेट्स, ब्रिटिश होल्डर्स — ११–३०
टिप्पणी—ब्रिटिश होल्डर्स १ अक्टूबर से १४ फरवरी तक — ११–०

[२२] (M.T.) केनेडा १०३ रेखांश से बी.सी. सीमा तक, यू.एस.ए. स्टेट्स — १२–३०

[२३] (P.T.) पेसेफिक [ब्रिटिश कोलम्बिया] केलिफोर्निया, नेवाड़ा, आरगिन, और वाशिंगठन — १३–३०

नवीनतम संशोधित

विभिन्न देशों के मानक समय (स्टैन्डर्ड) के स्थान

	देशों के नाम	देशान्तर रेखा भा.	स्टै. टाइम से अन्तर
(१)	चाथम आइसलैण्ड, न्यूजीलैण्ड,	१८०/०	पूर्व + ६/३०
	फिजी द्वीप	१८०/०	पूर्व + ६/३०
(२)	लार्ड हाउ आइस लैण्ड	१५७/३०	पूर्व + ५/०
(३)	आस्ट्रेलियन देश (विक्टोरिया आदि केपिटल	१५०/०	पूर्व + ४/३०
	टेरेटरी) सखलिन उत्तरी (रसियन जापानी)	१५०/०	पूर्व + ४/३०
(३–ख)	दक्षिण आस्ट्रेलिया	१४२/३०	पूर्व + ४/०
(४)	मलूकस आइसलैंड (नान्योगुण्टू, ओम्बे, पेंटर)	१३५/०	पूर्व + ३/३०
	सखलिन दक्षिणी (साबू, बेट्टा)	१३५/०	पूर्व + ३/३०
	टिमर (मलक्का आइस लैण्ड)—ईस्ट इण्ड्रीज	१३५/०	पूर्व + ३/३०
	जापान इण्डोनेशिया—(केई आदि)	१३५/०	पूर्व + ३/३०
(५)	वालीद्वीप (बेलीटांग), जावा (बटालिया), आदि इंडोनेशिया (बोर्नियो), लम्वक (लम्वलिम) मदुरा (जावा), इण्डोचाइना, श्याम, बेस्टर्न आस्ट्रेलिया, हांगकांग।	१२०/०	पूर्व + २/३०
(६)	फेड्रेटेड मलाया स्टेट (स्ट्रीट्स सेटिलमेण्ट्स) मलेशिया, सिंगापुर,	११२/३०	पूर्व + २/०
(७)	चीन (यांगकिंग, चुंगकिंग सेलेकर शाज्से तक), पश्चिमी इण्डोनेशिया (सुमात्रा आदि), थाईलैण्ड	१०५/०	पूर्व + १/३०
(७-ख)	वर्मा	९७/३०	पूर्व + १/०
(७-ग)	बंगला देश	९०/०	पूर्व + ०/३०
(८)	भारत, भूटान, नेपाल और श्री लंका, अण्डमान, निकोबार द्वीप।	८२/३०	पूर्व = ०/०
(९)	पाकिस्तान	७५/०	पूर्व — ०/३०
(१०)	अफगानिस्तान	६७/३०	पूर्व — १/०
(११)	ओमन (मसीरा, सलाला, सर्जा) वहरीन	६०/३०	पूर्व — १/३०

(१२) मारिशस, सऊदी अरब (धरहन) । ६०/० पूर्व—१/३०

(१२-ख) ईरान ५२/३० पूर्व—२/०

(१३) अदन, ब्रिटिश सोमाली लैण्ड, इथोपिया, ४५/० पूर्व—२/३०
कुवैत, जंजीवार, यूगाण्डा, केन्या, ईराक, सउदी अबर पूर्व
(जेद्दा) तंजानिया, यमन, सोमालीलैण्ड फ्रेंच ब ब्रिटिश द्वीप समूह

(१४) लीविया (प० अफ्रीका), क्रिनाइका, मिश्र, रूस, ३०।० पूर्व—३।३०
सीरिया, टर्की, रुमानिया, बलगेरिया, ग्रीस, इजराइल,
इस्ताम्बुल, साइप्रेस, लेबनान, उत्तर दक्षिण रोडेशिया

(१५) लीबिया [ट्रिपोलीटानिया], फ्रांस, जर्मनी, हालैण्ड, १५/० पूर्व—४/३०
नाइजीरिया, स्विटजरलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क
पर्शिया, पोलैंण्ड, आस्ट्रिया, हंगरी, चेकोस्लाविया,
सिसली, इटली, ट्यूनीसिया, यूगोस्लाविया, लिथुआनिया,
बेल्जियम डान्झिग आदि ।

(१६) इंगलैण्ड, स्पेन, सिर्लालियो, गाम्बिया [स्टेट्स हेलेन] ०/० —५/३०
ग्रीन, लैण्ड, घाना, ग्रेट ब्रिटेन, स्पेन, जिबाल्टर, पुर्तगाल,
मोरक्को, अल्जीरिया, स्काटलैण्ड, उत्तर दक्षिणी व
रिपब्लिक आयरलैण्ड, फ्रेंच गिनी आदि

(१६-ख) कनाडा [A T.—एटलांटिक टाइम] सूरीनाम, ६०/० पश्चिम—६/३०
युरुगुरा, लेब्राउडर, न्यू फाउण्ड लैण्ड, अटलांटिक
कनाडा, सेन्ट्रल ब्राजिल, ब्रिटिशगियाना, फ्रेंच गियाना

(१७) पूर्वी कनाडा [E. T.—ईस्टर्न टाइम] ७५/० पश्चिम—१०/३०
पूर्वी अमरीका [E.T.]
[चाइल स्टेट्स, डोमिनिकन गणतंत्र, पश्चिम ब्राजिल
कोलम्बिया, पेरु, वेंजुला]

(१८) मध्य कनाडा [C. T.—सेन्ट्रल टाइम], ९०/० पश्चिम—११/३०
मध्य अमरीका [C. T.], शिकागो
मेक्सिको [सोनोरा स्टेटस, सिनालो, नयारिट,
उत्तरी अमरीका]

(१९) कनाडा [M. T.—माउन्टेन टाइम] १०५/० पश्चिम—१२/३०
अमरीका [M. T.] केलिफोर्निया [लोअर] ह्विचकीय

(२०) कनाडा [P. T. पेसेफिक टाइम] १२ /० पश्चिम–१३/३०
अमरीका [P. T.] अलास्का [दक्षिणपूर्व]
जेनेवा [डगलस, किमाश्मकोव, पार्टस वर्ग]

(२१) अलास्का [उत्तरी], प्रिंसविलियम साउण्ड १३५/० पश्चिम–१४/३०
[नार्थ वर्ड टेरियर]

(२२) हवाइयन आइसलैण्ड [होनोलूलू–उ० अम० १५०/० पश्चिम–१५/३०

(२३) मिडवे आइसलैण्ड [पश्चिमी गोलार्ध] १६५/० पश्चिम–१६/३०

भारत के मानक समय की देशान्तर रेखा [८२.३० पूर्व] से जितना अन्तर हो उसे चार से गुणा करें, यह मिनट होंगे, इनके घण्टे बनालें। यदि वह देश ८२.३० देशान्तरपूर्व से १८० पूर्व तक होतो, इसे भारतीय समय में जोड़ दें और यदि ८२.३० पूर्व देशान्तर से पश्चिम में हो [अर्थात् पूर्वदेशान्तर रेखा ८२.३० से कम हो] अथवा पश्चिम देशान्तर रेखा का देश हो तो उसे भारतीय समय में घटा दें—यह उस देश का मानक समय [स्टैन्डर्ड टाइम] होगा।

उदाहरण—भारत में जब दिन के १२/० बजते हैं तब मिश्र में क्या समय होगा? भारत ८२/३० और मिश्र ३०/० [देखें—कालम १४] = अन्तर ५२—१/२X४ = २१० मि० = ३ घण्टा ३० मि० हुआ, इससे भारतीय समय १२/० में कम किया तो ८/३० यह मिश्र का मानक समय हुआ।

विदेशी समय से भारतीय समय बनाना हो तो इसके विपरीत क्रिया करें—

मिश्र में दोपहर के २/० [अर्थात् १४/० बजे] हैं, भारत में क्या समय होगा? पूर्वोक्तानुसार भारत और मिश्र के समय का अन्तर ३ घं० ३० मि० है। इसे मिश्र के समय में जोड़ दिया [भारत पूर्व में होने से] १४।० + ३/३० = ०७/३० अर्थात् भारत में उस समय सायं के ५/३० बजे का समय होगा।

अमरीका आदि पश्चिमी गोलार्ध का या शून्य देशान्तर रेखा से पश्चिम का बनाना हो तो—जितना पश्चिम देशान्तर हो, उसे ४ से गुणा कर मिनट प्राप्त होंगे उसमें ५/३० घण्टा और जोड़ दें। इस योग को भारतीय समय में घटा दें।

भारत में रात के ८/० [= २०/०] बजे हैं, मैक्सिको का समय क्या होगा। मैक्सिको का पश्चिम रेखांश ९०X४ = ३६० मि० = ६/० घण्टा + ५/३० = ११/३० इसे २०।० में घटाया = ८/३० मैक्सिको का समय।

इन परिवर्तनों को भी ध्यान में रक्खें

विश्व के समय मानों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं, ज्योतिर्विदों को पुरानी जन्म पत्रियाँ भी बनानी पड़ती हैं, अर्थात् पिछले वर्षों की। अत: पिछले वर्षों में कब, क्या परिवर्तन हुए इनका ज्ञान भी आवश्यक है। पिछले कुछ दशकों तक यूरोप, अमरीका अफ्रीका आदि देशों में शीतकालीन समय में अन्तर रहता था। बहुत से द्वीपों व नगरों में स्थानीय समय भी चलते थे, जैसे भारत में भी बम्बई, कलकत्ता व मद्रास में स्थानीय समय चलते थे। लेकिन अब लगभग सभी देशों में अपना-अपना एक राष्ट्रीय समय नियत है, वही व्यवहार में प्रयोग होता है।

प्रमुख परिवर्तन इस प्रकार हैं :--

(१) द्वितीय महायुद्ध के समय भारतीय राष्ट्रीय समय एक घंटा बढ़ा हुआ था जो युद्धकालीन समय के नाम से १ सितम्बर ४२ से १४ अक्टूबर ४५ तक चालू रहा।

(२) भारत के विभाजन के बाद १ अक्टूबर ५१ से ३० अप्रैल ५४ तक भारतीय समय से पाकिस्तान का समय एक घंटा पीछे था। लेकिन अब १ मई ५४ से आधा घंटा पीछे है।

पूर्वी पाकिस्तान [अब बंगला देश] में १ अक्टूबर ५१ से भारतीय समय से आधा समय आगे चलता है।

विभाजन से पहले पूरे देश में एक ही समम चलता था।

(३) अमरीका महाद्वीप में एक ही देश में चार-पाँच समय चलते हैं। अत: यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि कौन सा समय है। जैसे—ए० टी० ई० टी, सी० टी०, एम० टी०, पी० टी० आदि। शीतकाल व ग्रीष्मकाल में भी समय बदला जाता है।

(४) भविष्य में जो परिवर्तन हों—उनको भी ध्यान में रक्खें। सत्ता परिवर्तन के साथ ही देशों के नाम भी बदल जाते हैं। समय भी बदल सकता है। जैसे—भारत [अब–भारत, बंगलादेश, पाकिस्तान, तीनों का भिन्न समय है]। इसी प्रकार डचगियाना [द. अमरीका] अब सूरीनाम' कहा जाता है।

शंका होने से सम्बन्धित देश के दूतावास से पूछकर पुष्टि कर लें। कोई भी जन्म कुण्डली बनाने से पहले सम्बन्धित व्यक्ति से पूछकर भी भारतीय समय और उक्त देश के समय का अन्तर सुनिश्चित कर लें।

भारतेतर देशों [उत्तरी गोलार्ध] का इष्टकाल साधन

अब सर्वप्रथम विदेशी समय को भारतीय स्टैन्डर्ड समय में परिवर्तित कर लें, अर्थात् विदेश (निर्दिष्ट स्थान) में जब उस देश का राष्ट्रीय समय यह था तो उस समय भारतीय राष्ट्रीय समय क्या रहा होगा ? तदुपरान्त सूर्योदय में चरान्तर, देशान्तर संस्कार कर भारतीय पद्धति के अनुसार ही इष्टकाल निकाल लें, और लग्न स्पष्ट कर लें।

उदाहरण—१

उदाहरण के लिए एक बालक का जन्म उत्तर अमरीका के मेक्सिको नगर में ५ अप्रैल (४ की रात) १९६५ को उक्त देश के राष्ट्रीय समयानुसार ४/१५ ए० एम० पर हुआ है।

(अ) मैक्सिको का अक्षांश–२० उत्तर, देशान्तर रेखा–१०० पश्चिम

(आ) भारतीय राष्ट्रीय समय तथा मैक्सिको के राष्ट्रीय समय में अन्तर-(भारतीय स्टैन्डर्ड टाइम में ११।३० घटाने से मैक्सिको टाइम होता है) अत: मैक्सिको टाइम में ११।३० जोड़ने पर भारतीय स्टैन्डर्ड समय होगा।

मैक्सिको का जन्म समय ५ अप्रैल ४।१५ ए० एम०

+११।३०

=१५।४५(३।४५ पी० एम०)

अर्थात् भारतीय स्टैन्डर्ड समयानुसार उस समय दिन के ३।४५ बज रहे होंगे।

५ अप्रैल–सूर्योदय (काशी में) ५।४८

देशान्तर-काशी की देशान्तर रेखा ८२।। पूर्व, मैक्सिको १०० पश्चिम =अन्तर ८२।।+१००=१८२।। प्रति रेखाँश ४ मिनट अन्तर अत: १८२।।×४=७३० मि० अथवा १२ घंटा १० मिनट (धन) १२।१०

=१७।५८

(रवि क्रा० ५ उत्तर अशांश २० उत्तर) चरान्तर ०/२ धन

१८/० = ६।० पी.एम.

यह भारतीय स्टैन्डर्ड समयानुसार मैक्सिको का उस दिन सूर्योदय समय हुआ।

सूर्योदय (भा. स्टै. समयानुसार) मैक्सिको १८।०

जन्म समय (,, ,,) १५।४५

रात्रिशेष २।१५

इसके घटी पल बनाये = ५।३७।३० रात्रिशेष।

अहोरात्र मान ६०।० में घटाया

५।३७।३०

———

५४।२२।३० इष्टकाल

स्वल्पान्तर के कारण २० अंक्षाश के स्थान पर १९ अंक्षाश की लग्न (मीन का सूर्य २२ अंश पर) सारिणी से प्राप्त घटयादि—१।५९

+ ५४।२२ इष्टकाल

५६।२१

(योग सारिणी में कुम्भ के ९ अंश पर मिला) अत: कुम्भलग्न हुआ। इष्ट अक्षाँश की लग्न सारिणी न हो तो सायन सूर्य द्वारा स्वदेशीय लग्नमान सिद्ध कर सूक्ष्म गणित से लग्न निकालें।

पंचांग परिवर्तन

इष्टकाल साधन के साथ-साथ पंचाग भी परिवर्तन परमावश्यक है। पिछले पाठों में भयात भभोग साधन के अवसर पर यह बतलाया जा चुका है कि भारत में भी भिन्न-भिन्न नगरों के लिये पंचांग में परिवर्तन करना आवश्यकीय है, उसका उदाहरण भी दे दिया है।

जिस नगर की गणनानुसार अपना पंचांग बना हो उस नगर का सूर्योदय (भा. रा. समय से) और इष्ट नगर का सूर्योदय (भा. रा. समय) इन दोनों में जितना अन्तर हो वह (पंचांग के नगर के सूर्योदय से इष्ट नगर का सूर्योदय अधिक हो तो ऋण, और पंचांग वाले नगर के सूर्योदय से इष्ट नगर का सूर्योदय कम हो तो धन) पंचांग के घटीपलों में धन या ऋण करने से इष्टस्थान का पंचांग होगा, इसी से भयात, भभोग आदि की गणना करनी चाहिये।

काशी का पंचांग न होने पर जिस नगर के अक्षांश देशान्तरानुसार पंचांग बना हो उस नगर का सूर्योदय निकाल कर अन्तर करें।

तदनुसार यहां पर—

काशी में सूर्योदय (भा. स्टै. टा.) ५।४८

मैक्सिको ,, ,, १८।०

=अन्तर १२।१२(३० घटी ३० पल) क्योंकि पंचांग के (काशी का पंचांग) सूर्योदय से इष्ट स्थानीय मूर्योदय अधिक है। अत: काशी के पंचांग में यह ऋण होगा। उस दिन का पंचांग—

(सं० २०२२ शाके १८८७ चैत्र शुक्ल)

मैक्सिको में जन्म अंग्रेजी मत से सोमवार प्रात: का है, किन्तु भारतीय पंचांग सूर्योदय से बदलता है अत: रविवार की रात्रि हुई। अत: रविवार के पंचांग में घटाया। यद्यपि बालक के जन्म समय में भारत में सोमवार के सायं ३।४५ बज रहे थे।

वार	तिथि	नक्षत्र	योग	करण
रवि	तृ५५।२४	भ५१।५	वि२८।३१	तै२६।५३
	—३०।३०	—३०।३०	—३०।३०	—३०।३०
	२४।५४	२०।३५	×	×

अर्थात् भरणी मैक्सिको में २० घ० ३५ पल (रविवार को सूर्योदयोपरान्त) तक रहा क्योंकि इष्टकाल ५४।२२ है अत: जन्म में कृतिका रहा।

योग और करण नहीं घटाये जा सकते इसका यह अर्थ हुआ कि मैक्सिको में रविवार के सूर्योदय से पहले ही यह समाप्त हो चुके थे अत: पंचांग में दूसरे दिन के योग-करणों में ६०।० जोड़कर यह अन्तर घटाया—

सोमवार	योग	करण
	प्री २२।३१	व २३/२७
	+६ ।०	६०। ०
	८२।३१	८३।२७
ऋण	— ३०।३०	३०।३०
मैक्सिकों में रविवार	५२।१	५२।५७

अर्थात् प्रीतियोग मैक्सिको में रविवार को ५२।१ इष्ट पर समाप्त हो गया, अत: जन्म में आयुष्मान योग आ गया और इसी प्रकार विष्टिकरण—

श्री सम्बत् २०२२ शाके १८८७ चैत्र शुक्ल रविवासरे तृतीया २४।५४ जन्मनि चतुर्थ्यां, भरणीनक्षत्रे २०।३५ जन्मनि कृतिका, प्रीतियोगे ५२।१ जन्मनि आयुष्मान योगे तात्कालिके विष्टिकरणे, श्रीसूर्योदयाद्दिष्टम ५४।२२।३० कुंभलग्ने जन्म: ।

उदाहरण–२

२८ अगस्त १९८८, ६।४६ सायं (१८/४६) ओटावा, कनाडा (रेखांश ७५/४२ पश्चिम, अक्षांश ४५/२७ उत्तर)

ओटावा (E. T) समय १८।४६
+ १०।३० अन्तर
———————
= २९।१६ (ए. एम. ५।१६) भारतीय समय (२९ अगस्त)

२९ अगस्त, काशी सूर्योदय ५।३८
+ १०।३७ देशान्तर
———
१६।१५
— ०।२० चरान्तर
———
१५।५५ भारतीय समय से सूर्योदय ओटावा ।

अत: जन्म समय २९।१६ IST
सूर्योदय १५।५५ IST
———
१३।२१ अथवा X२.३० = ३३।२२ इष्टकाल ।

सन्निकट अक्षांश ४४ की लग्न सारिणी में सूर्य ४।१२ पर—प्राप्त =
२४।३६
इष्टकाल + ३३।२२
———
५७।५८

यह कुंभ के १४ अंश पर प्राप्त होते हैं, अत: कुंभ लग्न सिद्ध हुआ ।

पचांगान्तर = ओटावा सूर्योदय—१५।५५

काशी में— ५।३८

———

१०।१७ (घटीपल = २५।४२)

अत: काशी के पचांग में २५ घटी ४२ पल ऋण करने पर ओटावा पचांग सिद्ध होगा।

उदाहरण—३

२३ मई १९८५—१।४४ ए० एम० (माउण्टेन टाइम) पासाडीला यू० एस० ए०
(देशान्तर ११८·२५ पश्चिम, अक्षांश ३४·१० उत्तर)

समयान्तर १२।३०, अत: १।४४ + १२।३० = १४।१४ भारतीय समय

काशी सूर्योदय ५।११ + देशान्तर १३।२४

(८२।। + ११८।। = २०९X४ = ८०४ = १३।२४)

चरान्तर (३४ अं०X२० कां०) ऋण ०।१७

अत: ५।११ घन १३।२४ ऋण ०।१७ = १८।१८

(भारतीय समय से जन्म स्थान का सूर्योदय)

सूर्योदय १८।१८

जन्म १४।१४

———

४।४ = १०।१० रात्रिशेष

इसे ६०।० में घटाने से ४९ घटी ५० पल इष्टकाल

३४ अक्षाँश की सारिणी में वृष के सूर्य ७ अंश पर—७।१६

+ ४९।५०

५७।६

यह योग कुंभ के १० अंश पर प्राप्त है, अत: कुंभ लग्न सिद्ध हुआ।

पचाँगान्तर—स्थानीय सूर्योदय १८।१८ और काशी सूर्योदय ५।११ अन्तर (३२ घ० ४८ पल) १३।७ यह काशी के पचाँग मान में ऋण होंगे।

उदाहरण—४

२७ सितम्बर १९८८ दिन २।० (१४ = ००) माउन्टेन टाइम। डेन्वर—अमरीका, अक्षां० ३९.४५ उ०, देशान्तर १०५ प०। जन्म समय अमरीकी माउन्टेन टाइम १४।०

अन्तर + १२।३०

———

(२८ सितम्बर २।३० ए० एम०) भारतीय समय २६।३०
२८ सितम्बर काशी सूर्योदय ५।५०
देशान्तर +(८२।। + १०५ × ४ =) १२।३०
चरान्तर + २।०

डेन्वर का सूर्योदय भारतीय समय से ।१८।२२
अत: जन्म समय २६।२० IST
सूर्योदय—१८।२२ IST

८।८ = २० घ. २० पल इष्टकाल ।

सन्निकट ४० अक्षांश की सारिणी में कन्या के ११ अंश सूर्य पर प्राप्त ३०।५३ + २०।२० इष्टकाल = ५१।१३ यह धनु के २३ अंश पर प्राप्त होते हैं । अत: धनु लग्न सिद्ध हुआ ।

अन्य पंचांग से पंचांगान्तर का उदाहरण

कल्पना करें, हमारे पास काशी पर आधारित पंचांग न होकर 'जयपुर' से आधारित पंचांग है, इसमें पंचांगान्तर कैसे निकालेंगे । पहले २८ सितम्बर का जयपुर का सूर्योदय सिद्ध करें— काशी सूर्योदय ५।५० + देशान्तर ०।२९ = ६।१९, चरान्तर ०।०, अत: ६।१९ जययुर का सूर्योदय हुआ ।

स्थानीय सूर्योदय १८।२२ ऋण ६।१९ (जयपुर सूर्योदय) = १२।३ (३० घटी ७ पल), अत: जयपुर के पंचांग की तिथ्यादि में ३० घ० ७ पर ऋण करने पर डेन्वर का पंचांग बनेगा ।

उदाहरण—५

११ अप्रैल १९३९–९/१५ रात, वर्गैन, नार्वे ।(अक्षांश ६०.२५ उत्तर, देशान्तर ५.३० पूर्व) उपलब्ध पंचांग अक्षांश २६ देशान्तर ७९.१५ पूर्व । वर्गेन (नार्वे) समय ९/१५ = २१/१५ + ४/३० (१२ अप्रैल १/४५ ए०एम०) २५/४५ भारतीय समय । भारतीय सूर्योदय ११/४ को ५/४२ (काशी), देशान्तर ५/३० ऋण ८२।३० = ७७ गुणा ४ = ३०८ मि० या ५ घ. ८ मि. जोड़ा ५।८ = १०।५०, चरान्तर ७ अंश X ६० अक्षांश (—) ०।३६ ।। भारतीय समय से वर्गेन का सूर्योदय—१०।१४, जन्म = २५।४५ ऋण सूर्योदय–१०।१४ = घंटा मि० १५।३१ = ३८।४७ इष्टकाल + ०।५४ (लग्न सारिणी द्वारा ६० अक्षांश, सूर्य २८ अंश मीन पर ०।५४ प्राप्त जोड़ने से) लग्न स्पष्ट ६।१३।३९।४१ तुला

लग्न आया। क्योंकि हमारे पास पंचांग २९ अक्षांश ७९.१५ रेखांश पूर्व पर आधारित पंचांग है अत: पंचांग गणना स्थल का सूर्योदय निकाला (काशी) ५।४२ + ०।१३ देशान्तर ऋण ०।२ चरान्तर = ५।५३ पंचांग स्थल का सूर्योदय ५।५३, बर्गेन का १०।१४ परस्पर अन्तर ४ घं २१ मि (१० घटी ५२ पल) पंचांग के तिथि नक्षत्र मान में ऋण करने से बर्गेन का तिथ्यादिमान होगा।

पंचांग परिवर्तन की दूसरी विधि

दूसरी सरल विधि है—क्योंकि बालक का जन्म समय भारतीय स्टैन्डर्ड समयानुसार सोमवार ३।४५ बजे सायं होता है, अत: हम सोमवार ३।४५ सायं भारतीय समयानुसार के तिथि, नक्षत्र, ग्रहस्पष्ट बना लें।

चर साधन

चर सारिणी ६६ अक्षांश तक की ज्योतिष नवनीत भाग १ में दी है। यदि बालक का जन्म ऐसे स्थान में हो (रूस आदि) जहाँ का अक्षांश ६६ से ऊपर हो ऐसी स्थिति में चरान्तर जानने का निम्न क्रम करना चाहिए।

(१) तात्कालिक सूर्यस्पष्ट (स्पष्ट सूर्य तो इष्टकाल बनाने पर ही बनेगा, (स्थूलमान से लेकर) में अयनाँश जोड़कर सायन सूर्य बना लें, फिर उसके 'भुज' बना लें—

(अ) सायनसूर्य ३।०।० से कम हो तो यही भुज है।

(आ) ३।०।० से ऊपर ६।०।० तक हो तो इसे ६।०।० में घटा दें। शेष भुज होगा।

(इ) ६।०।० से ऊपर ९।०।० तक हो तो सायन सूर्य में ६।०।० घटादें। शेष भुज होगा।

(ई) और ९।०।० से ऊपर हो तो १२।०।० में घटा दें। भुज होगा।

(२) इष्ट स्थान के अक्षाँश पलभा द्वारा चरखण्डा बना लें (विधि पिछले पाठों में दे चुके हैं)

इसके बाद सायन सूर्य का उपरोक्त 'भुज'

(अ) राशि में शून्य हो तो—अंशादि को प्रथम चरखण्ड से गुणा करें। गुणनफल में ३० का भाग लें लब्धि चरपल' होंगे।

(आ) राशि में १ हो तो—अंशादि को (राशि छोड़कर) द्वितीय चरखण्ड से गुणा करें। गुणनफल में ३० का भाम दें, लब्धि में प्रथम चरखण्ड जोड़ दें।

(इ) भुज में दो राशि २ हो तो–अंशादि को तीसरे चरखण्ड से गुणाकर ३१ का भाग लें, लब्धि में पहले व दूसरे चरखंड जोड़ दें।

उदाहरण

(१) पूर्वोक्त मैक्सिको का ही उदाहरण लें, (यह समझकर कि चर सारिणी सारिणी उपलब्ध नहीं है)

स्थूलमान से सूर्य राश्यादि ११।२२ + अयनांश ०।२३ स्थूल = सायनसूर्य ०।१५ राश्यादि तीन से कम होने पर यही भुज हुआ।

(२) अक्षाँश २० की पलभा = ४।२२।१ इसके चरखण्डा बनाये–

४।२२।१	४।२२।१	४।२२।१
× १०	× ८	× १०
४०।२२०।१०	३२।१७६।८	४०।२२०।१०
		= ४३ भागा ३ = १४

= ४३, ३४, १४ यह चरखंडा हुए।

(३) क्योंकि 'भुज' राश्यादि ०।१५ शून्य है, अतः (अ) के अनुसार अंशादि १५ को प्रथम चरखंड ४३ गुणा किया।

```
        ४३
       १५X
    ------
   ३०) ६४५ (२१ लब्धि = ०।२१ चरपल
        ६०
    ------
        ४५
        ३०
    ------
        १५
```

इसी प्रकार काशी २५ अक्षांश के चरपल बनायें तो काशी और मैक्सिको के चरपलों में इस दिन ५ पला का (२ मि.) का ही अन्तर होगा।

दिनमान, रात्रिमान तथा सूर्य घड़ी से सूर्योदय साधन

सायनसूर्य ०।०।० से ६।०० तक हो तो—इन चरपलों को १५ घटी में जोड़ दें। और ६।०।० से ऊपर १५ घटी में घटा दें, यह दिनार्ध होता है, दिनार्ध का दूना दिनमान। दिनमान को ६०।० में घटा देने से रात्रिमान होता है। दिनमान में ५ का भाग देने पर जो मिले यह इष्ट स्थान का सूर्य घड़ी अनुसार सूर्यास्त काल होता है, सूर्यास्तकाल को १२।० में घटा देने से सूर्योदय काल (सूर्य घड़ी से) होगा।

उदाहरण सायन सूर्य ०।०।०–६।०।० के मध्य है, अत: चरपल ०।२१ + १५।० = १५।२१ दिनार्ध × २ = ३०।४२ दिन मान ३०।४२ में ५ का भाग दिन = ६।८ सूर्यास्त, और १२।० ऋण ६।८ = ५।५२ सूर्योदय।

चरान्तर-संस्कार

संभव है आपके पास जो पचाँग हो उसमें (जिस नगर की गणना का पंचाँग हो) सूर्यघड़ीत: सूर्योदय काल दिया हो क्योंकि ९० प्रतिशत भारतीय पंचाँगों में धूप घड़ी (सूर्यघड़ी) सूर्योदय ही दिया रहता है—न कि स्टैन्डर्ड टाइम। यदि धूप घड़ी सूर्योदय न दिया हो तो पंचाँग में दिये दिनमान से सूर्योदय बना लें। पंचाँग के धूप घड़ी सूर्योदय और आपके धूपघड़ी सूर्योदय में जो अन्तर होगा-वही चराँतरामनट होंगे। यदि पंचाँग के सूर्योदय से इष्ट स्थानीय सूर्योदय अधिक हो तो धन होंगे, और कम हो तो ऋण होंगे।

उदाहरण—पंचाँग में धूपघड़ी सूर्योदय नहीं है, दिनमान ३०।५२ है अत: सूर्योदय ५।५० हुआ। पूर्वोक्त प्रकार से मैक्सिको का सूर्यघड़ी सूर्योदय ५।५२ निकला है अत: ५।५२ और ५।५० = २ मिनट अन्तर निकला। वही अन्तर चरान्तर सारिणी से भी निकला था।

चरान्तर [चर] साधन की सरल-बिधि

प्राय: प्रतिष्ठित पंचाँगों में (इस पुस्तक में दैनिक क्रांतिसारिणी दे रक्खी है) सूर्य की दैनिक क्रांति दी रहती है। पंचाँग में न हो तो इस पुस्तक की सारिणी से देख लें।

एटलस से जहां का चरान्तर जानना हो वहाँ का अक्षाँस जान लें। अक्षाँश और क्रान्त्यशों को परस्पर गुणा करें, उसमें पाँच का भाग दें लब्धि जो मिले उतने पला चरान्तर जानें। यह चरान्तर भूमध्य रेखा से होगा।

उदाहरण

[१] उत्तर अक्षांश २० × ५ क्रान्त्यंश = १०० पल, भागा ५ = २० पल।
(२१) यही पूर्वोक्त विधि से भी मिले थे।

[२] उत्तरअक्षाँश ५०, क्रान्त्यंश २० रविक्रान्ति उत्तर—

= ५० × २० = १०००

५)१०००(२०० पल = ३ घ. २० प० या
१०   १ घंटा २० मि०
——
०

यह ३ घ० २० पल चरपल हुए। चरपलों को दूना कर (उत्तर अक्षाँश में भूमध्य रेखा के उत्तर) रविक्रान्ति उत्तर हो तो ३०।० में जोड़ दें, दक्षिण क्रान्ति हो तो घटा दें। यह उस स्थान का दिनमान होगा।

३०।० + ६।४० = ३६।४० उस दिन का ५० अक्षांश में दिनमान हुआ।

दक्षिणी गोलार्ध का इष्ट काल व लग्न साधन

दक्षिणी गोलार्ध का सूर्योदय, इष्टकाल व लग्न-साधन की विधि भिन्न है।

सर्वप्रथम जन्म समय को भारतीय राष्ट्रीय समय में परिवर्तित कर लें।

जन्मतिथि एवं समय पर स्थूलमान से जो राशि, अंश सूर्य की स्थिति है, उसमें छह राशि और जोड़ दें और तदुपरान्त इतना सूर्यस्पष्ट (राशि अंश) जहां जिस दिन मिले (जो लगभग ६ माह बाद या पहले मिलेगा) उसी तिथि का जन्म मानकर सूर्योदय निकाले और इष्टकाल निकाल कर इसी से लग्न निकालें (सर्वत्र यही मानकर चलना पड़ेगा कि ६ माह पहले या बाद का जन्म है और उत्तरी गोलार्ध का ही जन्म है)। इस प्रकार जो लग्न सिद्ध होगा, उसमें राशि ६।० घटा देने से वास्तबिक लग्न होगा।

पचांगातर की विधि वही है जो उत्तर गोलार्ध की है अर्थात जिस स्थान के आधार पर पंचाँग वान हो, वहां के सूर्योदय और जन्मस्थान के सूर्योदय में परस्पर जो अन्तर हो उसे धन या ऋण करने पर पंचांग (स्थानीय) सिद्ध होगा।

पंचाँग के सूर्योदय से अपना सूर्योदय कम हो तो धन तथा पंचांग के सूर्योदय से अपना सूर्योदय अधिक हो तो ऋण होगा।

उदाहरण-१

दिनाँक २२ जून १९९ -रात्रि २।० बजे (२३ जून ·१० ए. एम.) न्यूजीलैंड समय, स्थान न्यूजीलैंड (अ. ४१. १९ द., देशान्तार पूर्व १७४.४६)।

२२ जून को सूर्य राशि–अंश– ३।७
+ ६।०
= ९।७

९।७ सूर्य = २१ जनवरी १९९१ को पड़ता है। तदनुसार—काशी सूर्योदय—६।४७

देशान्तर (८२.३० और १७४.४६ का अन्तर ९२.१६ × ४ = ६।९मि.) ऋण।

चरान्तर (सूर्य क्रांति २० अंश दक्षिण × अक्षांश ४१ पर ३४ मिनट—धन)

अत: —६।४७
—६।९ देशान्तर
———
०।३८
+ ०।३४ चरान्तर
———————

भारतीय समय मे सूर्योदय १।१२ न्यूजीलैंड।
(=२५।१२)
अब न्यूजीलैंड समय २।० =(२६।०)
समयांतर (——) ६।३०
भारतीय समय से जन्म समय १९।३०
सूर्योदय (IST) २५।१२
जन्म (IST) १९।३० —
————
= ५।४२ घं० मि०
इसके घटी पला = १४।१५ रात्रि शेष।
इसे ६०।० में घटाया = ४५।४५ इष्टकाल।
४० अक्षांश की लग्न सारिणी में सूर्य ९।७ पर प्राप्त
घटी पल — ५३।२५
+ ४५।४५ इष्टकाल
——————
योग ३९।१० यह ६।२० पर प्राप्त है।
इसमें ६ राशि घटाया ६।०
———
०।२०

अर्थात् मेष लग्न २० अंश सिद्ध हुआ।

पंचांग काशी पर आधारित है, काशी का सूर्योदय ६।४७ न्यूजीलैंड का १।१२ = अन्तर ५।३५ (अपना सूर्योदय कम होने से धन) अथवा १३/२८ (घटी-पल) हुआ।

काशी का पंचांग———शुक्रवार अमावास्या———मृगशिरा

५०।४	४७।३९
+ १३।२८	+ १३।२८
६३।३२	६१।७

= शनिबार द्वादशी ३।३२ शनि मृग० १।७

६०/० घटी से ऊपर होने पर एक दिन बढ़ जायगा। न्यूजीलैंड में अमाबास्या शनिवार को ३ घटी ३२ पल रहेगी।

उदाहरण-२

जन्म २२ जून १९९०.३० बजे, अपरान्ह। फीजी (पूर्वदेशान्तर .७९.३०, अक्षांश १६ दक्षिण) पूर्ववत् २२ जून को सूर्य ३।७

+ ६।

———सूर्य

= ९।७

जो २१ जनवरी ९१ को प्राप्त होता है। उक्त दिन

काशी सूर्योदय——६।४७

देशान्तर (८२।३० एवं १७९.३०का अन्तर) ६।२८ ऋण

———

०।१९

चरान्तर (कां २० व अं. १६) ०।१६ घन

———

फीजी का भारतीय समय से सूर्योदय = ०।३५

जन्म समय (फीजी का समय) ३। = १५।०

अन्तर———[ऋण] ६।३०

———

जन्म समय [भारतीय] ८।३०

सूर्योदय काल ०।३५

———

७।५५

७।५५ × २।३०—घटयादि १९।४८ इष्टकाल। १६ अक्षांश की लग्न सारणी में

[सूर्य ९।७ पर]- + ५१।२

———

= १०।५०

यह वृष के २० अंश पर [१।२०[प्राप्त होते हैं।

अत: १।२० ऋण ९।० राशि = ७/२०

अर्थात् वृश्चिक लग्न २० अंश पर सिद्ध हुआ। काशी सूर्योदय ६।४७ फीजी ०।३५ = अन्तर ६।१२ अथवा १५ घटी ३० पल। फीजी का सूर्योदय कम होने से काशी के पंचाँग में घन होंगे।

शुक्रवार को काशी में——अमावास्या ५।४ मृगशिरा ४७।३९

+ १५।३० + १५।३०

———————

फिजी में शनिवार को, ५।३४ ३।९

निरयन लग्न सारिणी—अक्षांश ४०

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३
मेष	२१	२७	३३	३९	४५	५१	५७	३	१०	१७	२४	३२	३१	४६	५३
१	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
वृषभ	५०	५७	४	११	१९	२६	३३	४१	५०	०	९	१९	२९	३८	४८
२	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
मिथुन	२२	३२	४१	५१	१	१०	२०	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३
३	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८
कर्क	३	१५	२७	३९	५१	३	५	२७	३९	५२	५	१७	३०	४३	५५
४	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५
सिंह	१८	३१	४३	५६	९	२१	३४	४७	५९	१२	२४	३७	४९	२	१४
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१
कन्या	३५	४७		१२	२५	३७	५	३	१५	२८	४०	५३	५	१८	३०
६	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७
तुला	५१	३	१६	२८	४१	५३	६	१९	३१	४४	५६	९	२२	३५	४७
७	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४
वृश्चिक	०	२३	३५	४८	१	१३	२६	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०	२
८	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९
धन	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४५	५५	४	१४	२४	३३	४३
९	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४
मकर	१७	२७	३६	४६	५६	५	५	२५	३२	३९	४६	५४	१	८	१५
१०	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७
कुम्भ	१२	१९	२६	३३	४१	४८	५५	३	९	१५	२१	२७	३३	३९	४५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	२१	२७	३३	३९	४५	५१	५७	३	९	१५	२१	२७	३३	३९	४५

निरयन लग्न सारिणी—अक्षांश ४०

अंश	५	१	१७	८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	४		४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
			१५	२२	३०	३७	४४	५	५९	६	१३	२१	२८	३५	४२
१ वृषभ	७		८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०
	५८	७	१७	२६	३६	४६	५५	५	१५	२४	३४	४	५३	३	१२
२ मिथुन	१३	१३	३	३	३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५
	५	७	२९	४	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	३९	५१
३ कर्क	९	९	९	९	१९	२०	२०	२	२	२१	२	२	२	२	२२
	८	२	३३	४६	५९	११	२४	३७	४९	२	१५	२७	४	४	५
४ सिंह	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८
	२७	३९	५	४	७	२९	४२	५५	७	२	३२	४५	५७	१	२२
५ कन्या	१	३१	३२	३२	२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	४३	५५	८	०	३३	४५	५८	११	२३	३६	४८	१	३	२६	३८
६ तुला	३८	३८	३	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४	४	४०	४०
	०		२५	३८	५१	३	१६	२९	४१	५४	७	१९	३२	४५	५७
७ वृश्चिक	४४	४४	४४	४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७
	१४	६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३७	४८	०
८ धन	४९	५०	५०	५	५०	५०	५	५	५	५	५१	५	५१	५१	५२
	५३	२	१२	२१	[illegible]	४	५०		१	१९	२९	३९	४८	५८	७
९ मकर	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६
	२३	०	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२८	३५	४३	५	५७	४
१० कुम्भ	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	५	५७	३	९	१५	२१	२७	३३	३९	४५	५	५७	३	९	१५
११ मीन	०	०	१	१		१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
	५१	५७	३	९	१५	२१	२७	३३	३९	४५	५१	५७	३	९	१५

जन्म जन्मान्तरीय सम्बन्धों के मध्यस्थ माध्यम

ग्रह-नक्षत्र और उनकी शान्ति

ब्रह्माण्ड एवं सृष्टि के ग्रह नक्षत्रों का विश्व के चराचरों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है ऐसी मान्यता परम्परा से सृष्टि के आरम्भ से, मानव समाज में चली आ रही है और अब आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी यह निर्विवाद रूप से स्वीकार कर ली है कि यह मान्यता शत-प्रतिशत सही है, और मानव ही क्या प्रत्येक कण-कण पर दूसरे ग्रहनक्षत्रों का प्रभाव अवश्यम्भावी है। ऐसी स्थिति में अब इस बात पर उहापोह करना कि ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव होता है या नहीं ? एक भारी मूर्खता है। जिस व्यक्ति को अब भी इस बात पर विश्वास न हो उसे बौद्धिक अंधा' ही समझना चाहिए। जैसे 'नेत्रांध' के सामने कितना ही प्रकाश किया जाय उसे दिखलाई नहीं देता, ऐसे ही बौद्धिक अंधे व्यक्ति का भी मानसिक अज्ञान दूर नहीं हो सकता।

हमारे मुख्य चर्चा का विषय है ग्रह नक्षत्रों का मानव जीवन पर पड़ने वाले कुप्रभाव को कैसे दूर किया जाय। ग्रहों की प्रसन्नतार्थ, या उनके कुप्रभाव को अनुकूल करने के लिए जो भी उपाय हमारे यहाँ परम्परागत रूप से चले आ रहे हैं उनके प्रति ऐसी शंका प्राय: की जाती है कि ग्रह तो सजीव है नहीं फिर इन उपायों से लाभ कैसे संभव है। प्रश्न स्वाभाविक है, सचमुच में ग्रह-नक्षत्र जीवधारी नहीं भौतिक पिण्ड हैं, क्योंकि ग्रहों द्वारा हम पर पड़ने वाला प्रभाव भी हमारे पूर्व जन्मार्जित या इहजन्मार्जित अपने कर्मों का ही फल है। ग्रहों का भूमिका तो केवल मध्यस्थता की है जिनकी स्थिति द्वारा, संकेत द्वारा, गणित द्वारा हमें अपने शुभाशुभ कर्मों के फलों का संकेत मिलता है। क्योंकि ग्रहों के द्वारा हमें संकेत मिला है, ग्रहों के नाम से ही हम संकेत का उत्तर भी देते हैं। जैसे हम दूर स्थित मित्र से प्रत्यक्ष वार्तालाप नहीं कर सकते हैं लेकिन टेलीफोन एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम दूर स्थित मित्र से बात करते हैं और इसके लिए उचित धन देते हैं, ऐसे ही ग्रह भी हमारे तथा हमारे पूर्व जन्मार्जित कर्मों से सम्बन्धित जीवों के बीच एक माध्यम हैं। क्योंकि हम

उनसे सीधे सम्पर्क नहीं कर सकते अत: जिन ग्रहों ने हमें संकेत दिया है उन्हें ही माध्यम बनाते हैं ।

इसके अलावा एक और रहस्य है । यह निर्विवाद सत्य है कि इस पृथ्वी की तरह ब्रह्माण्ड एवं सौर मण्डल के दूसरे ग्रहों पर भी जीव हैं । यद्यपि सौर मण्डल के ग्रहों में जीवधारी न होने की संभावना व्यक्त की गई है, लेकिन क्या सर्वत्र सभी लोकों में मानवलोक की तरह ही जीवधारी होना आवश्यक है ? संभव है उन लोकों में ऐसे जीवधारी हों जो पृथ्वी के जीवधारियों से सर्वथा भिन्न एवं मानव चक्षुओं की दृष्टि से परे हों ? ऐसी स्थिति में ऐसा संभव है कि यदि हमें मंगल ग्रह किसी अनिष्ट फल की सूचना देता है तो संभव है कि वह अनिष्ट फल हमारे इस जन्म या पूर्व जन्म के उस पाप का फल है । हमारे जिस कार्य से किसी प्राणी की हानि हुई हो और उस प्राणी की स्थिति अब मंगललोक में हो ।

अस्तु ग्रहों के प्रसन्नतार्थ, अथवा ग्रहों द्वारा सूचित कुप्रभाव को रोकने के लिए जो प्रयोग हमारे महर्षियों ने बतलाये हैं वे प्रयोग ऐसे हैं जो आध्यात्मिक तरंगों के द्वारा हमारा सम्बन्ध ब्रह्माण्ड के दूसरे ग्रह नक्षत्रों, उनमें स्थित प्राणियों से स्थापित कराते हैं ।

वे प्रयोग क्या हैं ?

ऐसे प्रयोगों के बारे में जानकारी के लिये अनेक पाठक पूछते रहते हैं, इसीलिये जनसाधारण के हितार्थ इस विषय पर सामान्य जानकारी भी देना आवश्यक है ।

(१) **ग्रहयज्ञ** - शांति-विशेष संकटों, एवं आसन्न आपत्ति के समय सामूहिक रूप से सभी ग्रहों की शान्ति के लिये अथवा ग्रह विशेष की शान्ति के लिये 'ग्रह यज्ञ शांति' वैदिक परम्परा से चला आ रहा सबसे प्राचीन सबसे अधिक प्रभावकारी विधान है । लेकिन इस युग में ऐसे ज्ञाताओं का भी अभाव है जो शास्त्रीय ढंग से सविधि इस यज्ञ को करवा सकें (कहने को तो जिसे कहिये वही अपने को पारंगत बता बैठेगा, लेकिन अधिकारी विद्वान के सामने उससे विधि पूछी जाय तो रो पड़ेगा) और न ऐसे आस्थावान कर्ता ही हैं । इसमें विधि एवं सामग्री की भी जटिलता है, ऐसी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है जिन्हें प्राप्त करना कठिन है । साथ ही व्यय-साध्य भी है । क्योंकि यह विषय

जन साधारण के विषय से परे एवं योग्य विद्वानों के ही द्वारा सम्पन्न होने का है अत: केवल परिचय देना ही पर्य्याप्त है ।

(२) जप— ध्यान योग द्वारा जप के माध्यम से भी ग्रहों से आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित कर शांति मिलती है । यज्ञशांति की ही भांति सविधि जप करने वाले विद्वानों का भी इस युग में मिलना सुतरां कठिन है । जप का पूर्ण फल तभी संभव है जब पुरश्चरण विधि से शुद्धता एकाग्रता पूर्वक किया जाये । प्रत्येक ग्रहों के अनेकों मंत्र (प्रत्येक तंत्र शास्त्र में अलग-अलग) हैं जिनमें से 'वेदोक्त' बीज पल्लव सहित और 'तांत्रिक मूल मत्र यह दो अधिकतर जनता में प्रचलित हैं । जप में जहां चरित्र शुद्धि, आचार शुद्धि शरीर शुद्धि तथा एकाग्रता आवश्यक है, वही पर पुरश्चरण सम्बन्धी समस्त तांत्रिक क्रियाओं का ज्ञान, ध्यान, छन्द, अंगन्यास करन्यास देहन्यास आदि का भी ज्ञान कर्ता को परमावश्यक है तभी सिद्धि संभव है ।

जिसका चरित्र शुद्ध न हो, जो मद्य मांसादि का सेवन करता हो जिसका शरीर व वस्त्र शुद्ध न हो जिसका मन एकाग्र न हो, जिसका मन विषय वासना के चिन्तन से शुद्ध न हो अथवा जिसे पुरश्चरण सम्बन्धी क्रियाओं का ज्ञान न हो ऐसे कर्ता द्वारा किया जाने वाला जप शुभ के स्थान पर उलटे अनिष्ट, कोई उत्पात ही करेगा । इसके अलावा बिना ध्यान, छन्द, अगन्यास करन्यास देह-न्यास तथा पुरश्चरण क्रियाओं से किया गया जप उसी प्रकार निष्फल है जैसे बालू में वर्षा का जल । कुछ व्यक्ति स्वयं भी यथाज्ञान 'मंत्रमात्र' का जप कर लेते हैं कुछ पण्डित इसकी राय भी यजमानों को देते हैं कुछ लोग साधारण पुरोहितों द्वारा भी ऐसे जप करवाते हैं लेकिन मैं इस प्रकार बिना विधि के अनधिकृत जप का विरोधी हूँ । मेरी राय में यह धन एवं समय का दुरुपयोग ही है इससे कोई फल नहीं प्राप्त होगा । अत: यह विषय भी जन साधारण के उपयोग का नहीं है ।

(३) दान–तीसरा उपाय है दान का । लेकिन दान के बारे में भी जनता अनभिज्ञ है अथवा वह जान कर भी अनजान बनना चाहती है । प्रत्येक ग्रह की शाँति के लिए दान की वस्तुयें प्राप्त पंचाँगों में, पुस्तकों में उपलब्ध रहती हैं । लेकिन दानदाता उनमें से सस्ती वस्तुयें तो दान दे देते हैं मूल्यवान छोड़ देते हैं । इस प्रकार पाँच पैसे के बतासों से शाँति मिलना कठिन है एवं इस प्रकार का दान निरर्थक है । प्रत्येक दान के साथ ग्रह की 'दक्षिणा (धन नहीं) अवश्य दी जानी चाहिए, तभी दान पूर्ण होता है । प्रत्येक ग्रह की दक्षिणा यह

है—सूर्य गाय चन्द्रमा शंख, मंगल-लाल रंग का बैल, बुध सोना, गुरु-रेशमी पीला वस्त्र, शुक्र-सफेद रंग का घोड़ा, शनि गाय काले रंग की या भैंस, राहु कम्बल, केतु बकरा। यदि दान की साधारण वस्तुयें न भी दें, केवल दक्षिणा ही दान कर दें तो पर्य्याप्त है।

(४) रत्न धारण—सूर्य आदि नवग्रहों के लिए क्रमश माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, पोखराज, हीरा नीलम गोमेद और लहसुनियाँ—यह धारणीय रत्न हैं। इन रत्नों के द्वारा चुम्बकीय एवं वैद्युतीय प्रभाव होता है और आश्चर्य-जनक फल अनुभव में आया है, विस्तार भय से यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं नीलम की प्रतिष्ठा कराना आवश्यक है। *

(५) यंत्र—तंत्रशास्त्रों में ग्रहों के लिए 'यंत्र' धारण का विधान बतलाया है, तांत्रिक शक्ति सम्पन्न यह यंत्र मानव में आध्यात्मिक शक्ति देते हैं और ग्रहों के कुप्रभाव को रोकते हैं। वैसे तो आजकल छपी हुई पुस्तकों में ग्रहों के अनेक यंत्र देखने को मिलते हैं जो आधार रहित एवं निष्फल हैं। वास्तविक यत्र इस प्रकार बनते हैं।

एक नौ खानों का कोष्ठक बनाये, इसमें १ से ९ तक के अंक इस प्रकार लिखें कि किसी भी तरफ से, किनारों से जोड़ें सब ओर से जोड़ पन्द्रह मिले। एक अंक एक बार प्रयोग हो, बीच में कोई अंक छूटे भी नहीं यह सूर्य का यंत्र होगा।+

६	१	८
७	५	३
२	९	४

---

* रत्नों के बारे में विस्तृत जानकारी हेतु लेखक की रत्न विवेचन' शीर्षक पुस्तक का अध्ययन करें।

\+ यंत्र चिन्तामणि देखें।

इसी प्रकार चन्द्रमा में	२ से	१० तक,	जोड़	=	१८
मंगल	३ से	११ तक,	जोड़	=	२१
बुध	४ से	१२ तक,	,,	=	२४
वृहस्पति	५ से	१३ तक,	,,	=	२७
शुक्र	६ से	१४ तक,	,,	=	३०
शनि	७ से	१५ तक	,,	=	३३
राहु	८ से	१६ तक,	,,	=	३६
केतु	९ से	१७ तक,	,,	=	३९

पहले नहा धोकर, शुद्ध मन से भोज पत्र पर इस यंत्र को चार लाख या एक लाख बार लिखें (प्रति दिन १००, या १०००, १००००, का क्रम बनाकर पूरा करें। आरम्भ से अन्त तक संख्या पूरी होने तक बीच में किसी दिन क्रम न टूटे) इस प्रकार पहले-पहले यंत्र सिद्ध होगा। जब सिद्ध हो जाय तब जब कभी चाहें लिख सकते हैं।

यंत्र सिद्ध हो जाने पर जब आवश्यकता हो, गोरोचन घोलकर उससे भोज पत्र पर यंत्र बनायें। प्रतिष्ठा, प्राण प्रतिष्ठा, षोडश संस्कार तथा पूजन करें तदुपरान्त इसमें शेरनी की सतोषी, शेर का मूंछ, भूतकेश, कस्तूरी, अम्बर, सरसों, जौ, दूब उसीर, आम के पत्ते, तालीस-पत्र, हल्दी, मोरपंख, सर्पकंचुकी, गन्ध, अक्षत, गोमय, दही इन द्रब्यों से सम्बन्धित करें। तब बन्द कर बीजक में बन्द कर धारण करें, भुजा या गले में। नाभि से नीचे न रहना चाहिए। अथवा उत्तरी अंग के जेब में रक्खे रहें बीजक का मुख ठीक से बन्द रहे कहीं स्नान इत्यादि में बीजक के अन्दर पानी न पहुंचे। जन साधारण जो कि कीमती रत्नों को धारण करने में असमर्थ हैं, उनके लिये यह सरल एव प्रभावकारी उपाय है।

(६) **इत्र और औषधियां**—ऐसी औषधियों का भी वर्णन है, जिनके उबटन से, स्नान करने से शरीर में ग्रहों-नक्षत्रों से दूषित विकिरणों का प्रभाव नहीं पड़ता। यह औषधियाँ प्रत्येक ग्रह की भिन्न-भिन्न तथा सामूहिक दोनों प्रकार से हैं।

सूर्य-मैनसिल, इलायची, देवदार, कुकुम, उशीर, ज्येष्ठी मधु, पद्मक, कनेर के फूलों के उबटन से स्नान।

चन्द्र—गोदुग्ध गोदधि, घृत, गोमय, गोमूत्र, चन्दन, हाथी का मद, शंख, सीप,स्फटिक से मिला जल।

मंगल—बेल, चन्दन, बला, कनेर के फूल, हिंगुलू, कफलिनी, बकुल मांसी युक्त जल से स्नान।

बुध—गोबर, अक्षत, मोती, सोना, गोरोचन युक्त जल।

गुरु—मालती के फूल पीली सरसों, पत्ते, मदयंती, कोदों, महुआ मिश्रित जल।

शुक्र—इलायची, शिलाजीत कुंकुम मिश्रित जल।

शनि—काले तिल, अंजन लोध, बला, शतपुष्पी, खीले युक्त जल।

राहु—भैंसे का सींग, हरिताल, मैनसिल गूगल युक्त जल।

केतु - लोध, कुशा, तिल, पत्रज, मुस्ता, हाथी का मद, कस्तूरी, दुग्ध युक्त जल से स्नान।

सभी ग्रहों की शान्ति के लिये सामूहिक रूप से औषधियां—सरसों, लोध, हल्दी, दारु हल्दी, भद्र, मुस्ता, खील, कूट, बला, प्रियंगु, घन, देवदार, शरपुंखा मिश्रित जल से स्नान अथवा इन औषधियों का उबटन प्रयोग करें।

अथवा ग्रह से सम्बन्धित औषधि द्वारा निर्मित इत्र' का प्रयोग भी कर सकते हैं, जैसे सूर्य के लिए देवदार या इलायची का इत्र। चन्द्रमा-चन्दन का, मंगल चन्दन का गुरु-मालती इत्यादि।

(७) सरल दान-जो निर्धन व्यक्ति ग्रहों के पूर्वोक्त महादान नहीं दे सकते वे साधारण दान दे सकते हैं, जैसे सूर्य के लिए प्रतिदिन ७ पान दान दें।

चन्द्र—प्रतिदिन ११ बच्चों को दूध दान करें।

मंगल—प्रतिदिन १० व्यक्तियों को भोजन प्रदान करें। भरपेट आवश्यक नहीं है।

बुध—प्रतिदिन ९ सन्तरे दान करें।

बृहस्पति—पीले फल १६ दान करें।

शुक्र—सफेद वस्त्र दान करें-सोलह।

(बृहस्पति या शुक्र के लिये यह भी प्रयोग है कि प्रातःकाल उठने से लेकर जो भी व्यक्ति सामने पड़े कोई क्यों न हो, भगवान का स्वरूप मानकर प्रणाम करे, आशीर्वाद ले, प्रतिदिन १६ व्यक्तियों से)

शनि—नित्य तेल मलकर स्नान करे। तेल दान करें।

राहु—सोने का सांप बना कर दान दे। या १८ नारियल दान करे। जूता दान करे।

केतु—इत्र दान करे।

इन दानों को यथा संभव तब तक करे, जब तक इनकी दशा हो।

(८)—त्रिधातु या त्रिशक्ति मुद्रिका

जो व्यक्ति रत्नों की अंगूठी न पहिन सकें वे लोहा १२ भाग, ताँबा १६ भाग सोना १० भाग इन तीन धातुओं की अंगूठी बनाकर धारण करे यह त्रि-शक्ति मुद्रिका दारिद्र भी हरती है। शत्रुबाधा शाँति, आत्म रक्षा, भूतादि बाधा शांति व्यवसाय एवं आजीविका में उन्नति, सकल कामनाओं की पूरक है। तीनों धातुओं के तीन अलग-अलग एक ही लम्बाई के पहले तार बनें, तब तारों को बटवाकर एक लड़ सी बनायें। तदुपरान्त इस लड़ की ऐसी अंगूठी बनायें जिसमें तीन लड़ों की अंगूठी हो अर्थात् प्रत्येक तार ३ × ३ = ९ तार की अगूठी वन जाने पर अगूठी को अभिमंत्रित करने के मंत्र अथर्व वेद में हैं उन मंत्रों से मंत्रित करवाये प्रतिष्ठा, प्राण प्रतिष्ठा व पूजन कराकर धारण करे तभी फल होगा।

(९) औषधियों के मूल—निर्धन श्रेणी के लोगों के लिए ऐसे भी सरल प्रयोग हैं, जिन्हें हर कोई कर सकता है। रत्नों के धारण की जगह निम्न औषधियों का मूल धारण भी ग्रह-जनित अनिष्ट का शाँति कारक माना है—

सू - बेल की जड़।

च — खिरनी की जड़।

मं—अनन्तमूल-नागजिह्वा।

बु — विधारा (वृद्धभूल)।

बृ—भारंगी (बमनेठी)।

शु —मजीठ (सिंहपुच्छ)।

श — अम्लवेत (श्वेत विरैला)।

रा — सफेद चन्दन की जड़।

के - असगन्ध की जड़।

(१०) व्रत पूजन और स्तोत्र-ग्रहों की शाँति के लिए कर्मकाण्ड में विभिन्न प्रकार के व्रत, पूजन व स्तोत्र भी नियत हैं। यह एक विस्तृत विषय है, यदि सभी ग्रहों के व्रत व पूजन का विधान और पाठ करने योग्य स्तुतियों (प्रार्थनाओं) का विवरण दिया जाय तो पूरी एक अलग से पुस्तक ही बन जायगी, अतः उसका विवरण देना यहां सम्भव नहीं है। पूजन और उपवास का क्रम

सरल व मानसिक शांतिप्रद है तथा प्रत्येक व्यक्ति सरलता से कर भी सकता है। यहां पर हम केवल परिचय मात्र देंगे।

(अ) सूर्य के लिए—रविवार का व्रत व सूर्य का पूजन, सूर्य की प्रार्थना। एक बार पवित्र अन्न का भोजन, नमक, तेल, दूध, खटाई, गरम जल आदि का उपयोग वर्जित करें। पौष के प्रथम रविवार से या आश्विन के अन्तिम रविवार से व्रतारम्भ करें।

(आ) चन्द्रमा के लिए—सोमवार को उपवास, श्रावण, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के प्रथम सोमवार से उपवास आरम्भ करें शिव जी तथा चन्द्रमा का पूजन १२ या १४ वर्ष तक उपवास करना श्रेष्ठ है।

अथवा प्रत्येक पौर्णमासी को उपवास रह कर सायंकाल पूर्ण चन्द्रमा का पूजन किया करें।

(इ) मंगल-ताम्र पत्र में मंगल का यंत्र बनाकर मंगल का पूजन, मंगलवार को उपवास, मंगल के स्तोत्र का पाठ, तिल व गुड के बने २१ लड्डुओं का दान करें।

(ई) शनि—प्रत्येक शनिवार को उपवास, प्रात: दातून, सुगंधित तेल मल कर स्नान तदुपरान्त शमी के पेड़ या पीपल के पेड़ की जड़ में शनि की पूजा (सूर्योदय होने से पहले ही करें) कच्चे सूत से वृक्ष को सात बार लपेटें वृक्ष की सात परिक्रमा करें। व्रत आरम्भ करना हो तो श्रावण के पहले शनिवार से आरम्भ करें। शनि के स्तोत्र का पाठ करें। (देखें—भविष्योत्तर पुराण और स्कंद पुराण)।

(उ) शुक्र - शुक्रवार का उपवास श्रावण मास के अन्तिम शुक्रवार से आरम्भ करे, लक्ष्मी (वरलक्ष्मी) तथा शुक्र का पूजन करे (शुक्रतारे का), घी में पके शक्कर युक्त २१ पक्वान्न दान करे।

(ऊ) बुध व वृहस्पति को भी उपवास का विधान है।

(ए) राहु केतु के लिये कोई उपवास नहीं है।

(११) लौकिक प्रयोग—ग्रहों की शान्ति के लिये कुछ ऐसे भी प्रयोग समाज में प्रचलित हैं जिनका कोई शास्त्रीय प्रमाण या औचित्व नहीं है, जिनके प्रति उनका विश्वास ही काम करता है जैसे—

मंगल के लिये हनुमान जी का पूजन (उल्लेखनीय है कि मंगलग्रह और हनुमान जी से कोई सम्बन्ध नहीं है, दो अलग-अलग है, केवल इतनी साम्यता है दोनों कुमार, ब्रह्मचारी व लाल रंग के हैं)।

शनि के लिये—तेल में अपनी छाया देखकर तेलदान।

राहु के लिये—चीटियों को चारा देना।

केतु के लिये—मछलियों को चारा देना।

बृहस्पति के लिये—केले के पेड़ का पूजन। इत्यादि,

कुण्डली निर्माण की पाश्चात्य विधि

भारतीय गणना पंचांग से होती है जिसमें तिथि (चान्द्र) वार, नक्षत्र, योग और करण यह पांच अंग दिये रहते हैं और साथ ही ग्रहस्पष्ट भी दिये रहते हैं। जब कि पाश्चात्य गणना 'एफेमरीज' से होती है जिसमें केवल ग्रह-स्पष्ट दिये रहते हैं और सम्पूर्ण गणित इसी पर आधारित होता है। भारतीय पद्धति में जहां सूर्योदय, भयात, भभोग आदि आवश्यक है वहां पाश्चात्य पद्धति में इसकी आवश्यकता नहीं होती।

वैसे पाश्चात्य पद्धति की अपेक्षा भारतीय पद्धति सरल है लेकिन अभ्यास की बात है, जो लोग पाश्चात्यपद्धति 'एफेमरीज' से गणित करते हैं उन्हें भारतीय पद्धति से कार्य करने में कठिनाई होती है। इसी प्रकार भारतीय पद्धति से गणित कर्ताओं को 'एफेमरीज' से कार्य करना सरल नहीं होता।

अत: पाठकों का यह अनुरोध रहा है कि पाश्चात्य पद्धति से भी उन्हें अवगत कराया जाय। इसी आग्रह को देखते हुए संक्षिप्त में पाश्चात्य पद्धति का गणित उपलब्ध कराया जा रहा है। प्राय: विद्वान लोग छात्रों को कठिन पद्धति में उलझाये रहते हैं सरल विधि एवं गुप्त रहस्यों को रहस्य ही बनाये रखते हैं। लेकिन मैं यहां पर सरलतम विधि प्रस्तुत कर रहा हूं। यद्यपि एफेमरीज' वेध सिद्ध एवं आधुनिक नवीनतम शुद्धगणित से होने का, शुद्धता के प्रतीक कहे जाते हैं लेकिन निरयन गणना में अयनांश भेद से (अयनाँश के बारे में सभी का एकमत न होने से) तथा इनकी गणना भू पृष्ठीय होने से फलित की दृष्टि से इनका गणित सटीक नहीं बैठता है, ऐसा मेरा व्यक्तिगत अनुभव है ज्ञातव्य है कि भारतीय पद्धति से तथा पाश्चात्य पद्धति से साधित ग्रहस्पष्टों में, विशेषत: चन्द्र स्पष्ट में भारी अन्तर रहता है, जिससे दशा आदि में वर्षो का अन्तर आ जाता है और इससे भविष्यवाणियां असत्य सिद्ध होती हैं। फिर भी जिन्हें 'एफेमरीज' का गणित सत्य प्रतीत हो, जो इन्हें प्रामाणिक मानते हों, वे पाश्चात्य पद्धति से गणित कर सकते हैं।

प्रमुख गणित इस प्रकार हैं।

साम्पातिक काल से लग्न व दशम साधन

इस पद्धति में सूर्योदय, सूर्यस्पष्ट, इष्टकाल आदि के विना केवल जन्म समय से सीधे लग्न और दशम भाव का साधन किया जाता है।

स्थानीय मध्यम समय साधन

सर्वप्रथम अपने जन्म समय को स्थानीय मध्यम समय में बदल लें। इसकी विधि यह है कि अपने (जन्म) देश के राष्ट्रीय समय का निर्धारण जिस देशान्तर रेखा से हो, उस देशान्तर रेखा से जन्म स्थान की देशान्तर रेखा का अन्तर निकालें, उसे चार से गुणा करने पर जो मिनट आदि प्राप्त हों — उसे राष्ट्रीय समय में धन या ऋण करने से (राष्ट्रीय समय की रेखा से जन्म स्थान की देशान्तर रेखा अधिक हो तो धन (+) और राष्ट्रीयदेशान्तर रेखा से जन्म देशान्तर रेखा कम हो तो ऋण (−) होगा। यह नियम पूर्वी गोलार्ध अर्थात् पूर्वदेशान्तर रेखाओं के निमित्त है। पश्चिम देशान्तर रेखा हो तो विपरीत क्रिया होगी अर्थात् अपना देशान्तर कम होने पर धन (+) और अपना देशान्तर अधिक होने पर ऋण (—) होगा।

यह स्थानीय मध्यम समय (लोकल मीन टाइम) होगा।

एक दूसरी विधि आगे उदाहरण में दी है।

साम्पातिक काल और उसमें संस्कार

(अ) साम्पातिक काल की वार्षिक गति ५७.३८१ सेकिण्ड प्रतिवर्ष ऋण है, लेकिन प्रतिवर्ष लीपइयर में २८ फरवरी के बाद ३ मि. ५६ से. ३४ प्रति सेकिण्ड जोड़ना होता है। अर्थात् फरवरी २९ की होने पर, २८ फरवरी के बाद मि. ३।५६।३४ जोड़ना होगा।

(प्रत्येक चार वर्ष में साम्पातिक काल ७ सेकिण्ड बढ़ता है)।

१ जनवरी रात्रि ०/० बजे ग्रोनविच का साम्पातिक काल

सन् (ई०)	साम्पातिक काल घं० मि० से०	सन् (ई०	साम्पातिक काल घं० मि० से०
१९०५	६।३९।५८	१९५३	६।४१।२२
१९०९	६।४०।५	१९५७	६।४१।२९
१९१३	६।४०।१२	१९६१	६।४१।३६
१९१७	६।४ ।१९	१९६५	६।४१।४३
१९२१	६।४०।२६	१९६९	६।४१।५०
१९२५	६।४०।३३	१९७३	६।४१।५७
१९२९	६।४०।४०	१९७७	६।४२। ४

१९३३ —६।४०।४७	१९८१ — ६।४२।११
१९३७ —६।४०।५४	१९८५—६।४२।१८
१९४१—६।४१। १	१९८९ --६।४२।२५
१९४५—६।४१। ८	१९९३—६।४२।३२
१९४९—६।४१।१५	१९९७--६।४२।३९

अपने अभीष्ट वर्ष का साम्पातिक काल जानने हेतु प्रत्येक चार वर्ष बाद ७ सेकिण्ड जोड़दें, इस प्रकार प्रत्येक चौथे वर्ष का साम्पातिक काल होगा। बीच के वर्षों हेतु ५७.३८१ सेकिण्ड के गति से ऋण करके इष्ट वर्ष का १ जनवरी को ०/० बजे का साम्पातिक काल सिद्ध होगा।

उपरोक्त ग्रीनविच (शून्य देशान्तर रेखा) के साम्पातिक काल में रेखांश संस्कार करने पर १ जनवरी को ०/० का स्वदेशीय साम्पातिक काल होगा।

(आ) एक रेखांश पर सम्पात ३९.४२६ प्रति सेकिण्ड चलता है। ग्रीनविच से अपनी देशान्तर रेखा के अन्तर को इससे गुणने पर जो प्राप्त हो वह पूर्वदेशान्तर रेखा में ऋण (—) और पश्चिम रेखांश के देशों में धन (+) होगा।

मोटे तौर पर रेखांश के अन्तर को दो से गुणा करके तीन का भाग देने से सेकिण्ड प्राप्त किये जा सकते हैं। जैसे काशी ८२.३० × २ = १६५ भागा ३ = ५५ सेकिण्ड पूर्व होने से ऋण।

(इ) १ जनवरी को ०। बजे उपरोक्त साम्पत्तिक काल होगा। इसके आगे के महिनों में इस प्रकार जोड़ना होगा—

माह (१ ता० को ०।० बजे)	सामान्य वर्षों में घं. मि. से.	लीपईयर में घं. मि. से.
जनवरी	०।०।०	०।०।०
फरवरी	२।२।१३	२।२।१३
मार्च	३।५२।३७	३।५६।३४*
अप्रैल	५।५४।५०	५।५८।४७
मई	७।५३।७	७।५७।४
जून	९।५५।२०	९।५९।१७
जुलाई	११।५३।३७	११।५७।१४
अगस्त	१३।५५।५०	१३।५९।४७
सितम्बर	१५।५८।३	१६।२।०
अक्तूबर	१७।५६।२०	१८।०।१७
नवम्बर	१९।५८।३३	२०।२।३०
दिसम्बर	२१।५६।५०	२२।०।४७

* उपरोक्त लीपईयर का संस्कार इसमें सन्निहित है।

(ई) अब पहली तारीख से इष्ट तारीख तक का अन्तर ज्ञान करके धन करें। प्रत्येक २४ घंटे अर्थात् एक दिन में साम्पातिक काल की गति ३ मि. ५६.५६ सेकिण्ड है। तदनुसार गत तारीख × ३।५६.५६ = इष्ट अन्तर।

दिन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०
घं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
मि.	०	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	१४	५४
से.	०	५७	५३	५०	४६	४३	३९	३६	३२	३०	५५	२१

(उ) रात्रि ०।० बजे से जन्म समय तक जितने घण्टे व्यतीत हो चुके हों, इसका संस्कार। प्रत्येक घण्टे में साम्पातिक काल की गति निम्न है (० मि०, ९ से०, ५१ प्रति से०)।

अन्तर

घं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मि	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
से.	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८
प्र.से.	५१	४२	३४	२५	१६	८	९	५०	४२	३३	२४	१६

(ऊ) मिनटान्तर संस्कार—पूरे घण्टों के बाद जन्म समय जितने मिनट पर हो, उसको भी निम्न अनुपात से जोड़ें। स्थूनमान से प्रति एक मिनट पर १० प्रति सेकिण्ड गति है।

मि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	४०
से.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	३	६
प्र.से.	१०	२०	३०	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	१७	३४

(ए) इसके बाद उक्त में अपना स्थानीय मध्यम समय जोड़दें। उपरोक्त ७ संस्कार करने पर अपना शुद्ध साम्पातिक काल सिद्ध होगा।

उदाहरण

३० जुलाई १९९०, लखनऊ, राष्ट्रीय समय ३।२९ अक्षांश २६.५५, देशान्तर ८०.३० पूर्व।

सर्वप्रथम ३।२९ (ए. एम.) राष्ट्रीय समय का स्थानीय मध्यम समय बनाया। राष्ट्रीय का आधार रेखांश—८२.३० और इष्ट रेखांश ८०.३० का अन्तर २ × ४ = ८मि. (जन्म रेखांश कम होने से ऋण) को इष्ट समय में घटाने से ३।२१ यह लखनऊ का स्थानीय मध्यम हुआ।

दूसरी विधि—मध्यमकाल जानने की एक और सरल विधि है। पूर्व देशान्तर में—ग्रीनविच समय से स्वदेशीय राष्ट्रीय समय जितना आगे हो, उतना ही समय जन्म समय में घटा दें, इसके बाद ग्रीनबीच से जितना देशान्तर अपना हो उसे चार से गुणा कर इसमें जोड़ दें। स्थानीय मध्यम समय हो जायगा। पश्चिम देशान्तर हो तो ग्रीनविच समय से राष्ट्रीय समय जितना पीछे हो, उतना जन्म समय में जोड़ दें। फिर जितना पश्चिम देशान्तर हो उसे चार से गुणाकर घटा दें।

इस विधि से—भारत का राष्ट्रीय समय ग्रीनविच से ५।३० आगे है, अत: जन्म समय ३।२९(—) ५।३० = २१।५९, (३।२९ में ५।३० नहीं घटता, अत: २४ घंटे जोड़कर ३।२९ + २४।० = २७।२९ में ५।३० घटाया)-

जन्म ८०.३० देशान्तर पूर्व = ८०.३० × ४ = ३२०।१२० = ३२२।० इसमें ६० का भाग देने पर ५ घंटा २२ मि.। इसे उपरोक्त में जोड़ा २१।५९ + ५।२२ = २७।२१ यह २४ घंटे से अधिक होने पर इसमें २४ घंटे घटाने से शेष ३।२१ यह लखनऊ का स्थानीय मध्यम समय हुआ।

अब साम्पातिक काल का साधन करें—

(अ) १९८९ का साम्पातिक काल (ग्रीनविच १।१।८९ को)

घं., मि., से. प्र. से.,

६।४२।२५।०

५७।० एक वर्ष का संस्कार (—)

———

= १।१।९० को—६।४१।२८।०

(आ) देशान्तर— (—) ५४।०—८०.३० × २ = १६१ ÷ ३ = ५४ से.

———

६।४०।३४।०

(इ) माह जुलाई १।५३।३७।०(+)

———

१८।३४।११।०

(ई) दिनान्तर—(+)१।५४।२१।० (३० ता० का)

———

२०।२८।३२।०

(उ) घण्टान्तर (+) २९।३४ (३ घण्टे पर)

———

(ऊ) मिनटान्तर(+)२०।२९।१।३४

३।२७ (२१ मिनट पर)

———

योग २०।२९।५।१

(ए) इसमें जन्म समय (स्थानीय मध्यम समय) + ३।२ ।०।० (+)

= स्पष्ट साम्पातिक काल २३।५०।५।१

(स्पष्ट साम्पातिक काल २४।०।० से अधिक हो तो २४।०।० घटाकर शेष साम्पातिक काल होगा। यहाँ पर ध्यान रक्खें कि जन्म समय भी रात्रि ०।० बजे से (रेलवे समय की तरह) अगले रात्रि ०।० बजे तक २४ घण्टों के रूप में प्रयोग करें।)

साम्पातिक काल से लग्न साधन

वैसे तो साम्पातिक काल से लग्न तथा दशम सारिणी द्वारा लग्न साधन किया जाता है, प्रत्येक अक्षांश की लग्न सारिणी भिन्न-भिन्न होती है। पुस्तक रूप में एक से पैंसठ तक सभी अक्षांशों की साम्पातिक लग्न सारिणी छपी हुई प्राप्त होती हैं, उनका उपयोग करना चाहिए। उक्त सारिणियों में (अपने अभीष्ट अक्षांश की साम्पातिक लग्न सारिणी में) अपना साम्पातिक काल जिस राशि एवं अंश पर प्राप्त हो वही लग्न स्पष्ट होगा। इसी प्रकार जिस स्थान पर साम्पातिक काल दशम सारिणी में मिल जाय वही दशमभाव स्पष्ट होगा। प्राय: ज्योतिर्विद रहस्य की बात नहीं बताते हैं, गुप्त ही रखते हैं, मैं विद्यार्थियों को गुप्त रहस्य बता देना चाहता हूँ। अत्यन्त सरल विधि—अर्थात् भारतीय लग्न सारिणी से ही साम्पातिक काल से लग्न साधन।

इष्ट साम्पातिक काल को घटीपल में परिवर्तित कर लें। यह योग दशम सारिणी में जहाँ मिले वह दशम भाव स्पष्ट होगा। और इस योग में (साम्पातिक काल के घटीपल) १५।० घटी जोड़कर योग अपने अभीष्ट अक्षांश की लग्न सारिणी में जहाँ मिले—वही लग्न स्पष्ट होगा।

उदाहरण

यहाँ पर साम्पातिक काल २३।५०

= ५९ घटी ३५ पल

(देखें 'ज्योतिष नवनीत' पूर्व खण्ड)

दशम सारिणी (शून्य अक्षांश की सारिणी) में यह योग ११।४ पर मिलते हैं, यह दशम स्पष्ट हुआ। अब ५९।३५ + १५।० = १४।३५ यह योग २७ अक्षांश की सारिणी (२६.५५ के तुल्य) में २।१५ पर प्राप्त हुए, अत: १५ अंश मिथुन लग्न सिद्ध हुआ।

दक्षिणी गोलार्ध में

यदि जातक का जन्म दक्षिणी गोलार्ध का हो तो उपरोक्त प्रकार से ही अभीष्ट साम्पातिक काल निकालें। इसमें बारह घण्टे और जोड़ दें, इस योग को ही वास्तविक साम्पातिक काल मानकर पूर्वोक्त रीति से दशम व लग्न निकालें तथा साधित लग्न में छह राशि ६/० और जोड़ दें। यह शुद्ध लग्न होगा।

उदाहरण

मान लिया कि उपरोक्त जन्म ३०।७।९० को ८०।३० देशान्तर पूर्व में उत्तर अक्षांश २६।५५ के स्थान पर दक्षिण अक्षांश २६।५५ है। साम्पातिक काल उपरोक्त ही आयगा। दक्षिण अक्षांश होने से २३।५०

+ १२।०

————

११।५० साम्पातिक काल

११।५० के घटीपल = २९।३५

जो दशम सारिणी में ५।४ पर प्राप्त होते हैं।

अब साम्पातिक काल के घटीपल—२९।३५

+ १५।०

————

४४।३५

२७ अक्षांश की सारिणी में यह योग ७।२२ पर प्राप्त है।

६ राशि जोड़ी + ६।०

————

१।२२

अर्थात् वृषलग्न २२ अंश सिद्ध हुआ।

दशम स्पष्ट में भी ६ राशि जोड़ दें, स्पष्टदशम होगा। दशम ५।४ + ६।० = ११।४ अर्थात् मीन के ४ अंश दशमभाव हुआ। कला, विकला त्रैराशिक से लिये जा सकते हैं।

ग्रहस्पष्ट साधन

विदेशो में छपने वाली 'एफेमरीज' जैसे राफेल आल्मनक व 'नाटिकल आल्मनक' आदि में सायन मान से ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं। भारतीय 'एफेमरीज' अधिकांशत: निरयन (अपना वाँछित अयनाँश घटाकर) मान से ही प्रकाशित की जाती हैं। इनमें प्रतिदिन के एक निर्धारित समय के ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं उसके आधार पर अपने वाँछित (जन्म) समय के ग्रहस्पष्ट बना लिये जाते हैं प्रत्येक ग्रह के दो दिनों के स्पष्ट का अन्तर करने से एक दिन अर्थात २४ घंटे की उसकी गति आती है एफेमरीज के समय (ग्रहस्पष्ट जिस समय के दिये हों) व अपने अभीष्ट समय का जो घण्टादि अन्तर हो उसे उसकी घटी-पला बना लें। और उपरोक्त गति से गोमूत्रिका रीति सेगुणा करने पर क्रमश: कला विकला होंगे। पीछे की संख्या छोड़ दें। कला ६० से ऊपर हो तो ६० का भाग देने से अंश होंगे। जो योग प्राप्त हो उसे एफेमरीज के समय से अपना समय आगे हो तो धन और अपना समय पीछे हो तो ऋण। एफेमरीज के ग्रहस्पष्ट में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट समय का ग्रहस्पष्ट होगा इसी। प्रकार सभी ग्रहों का तात्कालिक स्पष्ट बना लिया जाता है। ध्यान दें—जो ग्रह वक्री हो उसमें और राहु–केतु में विपरीत संस्कार होता है। धन के स्थान पर ऋण और ऋण के स्थान पर धन)। इस गणित के लिए 'लघुरित्थ' कोष्टक चक्र भी आता है इससे स्पष्ट करना सरल होता है।

उदाहरण

३० जुलाई १९९० को (IST) ३/२६ पर चन्द्रमा स्पष्ट क्या होगा।

(अ) एफेमरीज में ३०-७-९० को ५/३० बजे का चन्द्रस्पष्ट—७।११।०।०
एफेमरीज में २९-७-९० को ५/३० बजे का चन्द्रस्पष्ट—६।२९।०।०

———— —

(राशि, अंश, कला विकला—२४ घण्टे की गति ०।१२।०।०

(आ) ३०-७-६० को ५।३० बजे
३०-७-९० को ३।२९ बजे

———— —

२।१

अन्तर २।१ घण्टा-मिनट (=५ घटी २ पल ३० विपल)

अत: ५।२।३०।+ × १२=६०।२४।३६०।+

+।५।२।३०×००=+। ०। ०। ०

योग ६०।२४।३६०

३६० में ६० का भाग देने पर लब्धि ६+२४=३० विकला, ६० कला में ६० का भाग देने पर १ अंश लब्धि शेष कला शून्य =१ अंश ० कला ३० विकला।

क्योंकि जन्म समय एफेमरीज के समय से पहले है, अत: इसे ३०।७।९० के ५/३० बजे के चन्द्र स्पष्ट में घटाया—

रा. अं. क. बि.

७। १।०।०

(—) ०। १। ०।३०

७।६।५९।३०=३।२९ बजे का सायन चन्द्र।

(—) ०।२३।४२। ० वांछित अयनाँश घटाया।

६।१६।१७।३० निरयन तात्कालिक चन्द्र स्पष्ट।

नोट—यदि एफेमरीज में निरयन ग्रहस्पष्ट दिये हों तो अयनाँश घटाने की क्रिया नहीं होगी।

कभी कभी ज्योतिर्विदों को पुरानी जन्म कुण्डलियां बनानी होती हैं, उस वर्ष की एफेमरीज (विस्तृत) नहीं मिलती है, अत: १०, ५० या १०० वर्षीय एफेमरीज से काम चलाना पड़ता है। ऐसे एफेमरीज में साप्ताहिक ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं। ऐसी स्थिति में—दो सप्ताहों के ग्रहस्पष्ट का अन्तर करके प्राप्त राशि में ७ का भाग देने पर एक दिन की गति प्राप्त होगी। और समय में भी तारीख आगे रखकर चालन बनाना होगा। शेष क्रिया वही हैं।

रा. अं. क. वि.

४-८-९० का सूर्य स्पष्ट ३।३० पर— ३।१७।३४।०

२७-७-९० का सूर्य स्पष्ट ३।३० पर— ३।१०।५२।२०

०। ६।४१।४०

इसमें ७ का भाग देने पर ० राशि, ० अंश।

६ अंश × ६० = ३६० + ४१ = ४०१ भागा ७ = ५७।

शेष २ × ६ = १२० + ४० = १६० भागा ७ = २३ लगभग।

= ५७ कला २३ विकला दैनिक गति सिद्ध हुई।

अब ३० ७-९० को ३।२९ पर सूर्यस्पष्ट करने को—

ता० घं० मि०

३० -- ३ —२९ जन्म तिथि व समय।

(—) २८ — ३ —३० एफेमरीज का स्पष्ट समय।

————————

१—११ —५९ चालन (= १ दिन ५९ घ. ५८ पल)।

दिन घ· प.

= १ । ५९ । ५८। + × ५७ = ५७।३३६३।३३०६। +

+ । १ । ५९।५८ × २३ = +। २३।१३५७।१३३४

————————————

योग ५७।३३८६।४६६३।१३३४

पिछले अंकों में ६० का भाग देने पर १।५४।४४।५।१४ = १ अंश, ५४ कला, ४४ बिकला।

क्योंकि अपना समय एफेमरीज के समय से आगे है, अतः यह धन (+) होगा।

२८।७ को ३।३० पर एफेमरीज का सूर्य ३। ०।५२।२०

चालन + ०। १।५४।४४

————————

३०।७।९० को ३।२९ पर स्पष्ट सूर्य = ३।१२।४७। ४

चान्द्रमास का ज्ञान

भारत में प्रायः चान्द्रमास प्रचलित हैं। यदि एफेमरीज से चान्द्रमास जानना हो तो, जन्म तिथि से आसन्न पहले सूर्य और चन्द्रमा की युति (राशि, अंश, कला, विकला समान स्थिति में) कब थी और कौन राशि में थी तदनुसार जन्म का चान्द्रमास ज्ञात होगा। जिस राशि में सूर्य और चन्द्रमा की युति

सम्पन्न हुई हो, वह गत मास की अमावास्या होगी और अगला पक्ष जन्ममास होगा। यदि एक राशि में सूर्य चन्द्र की दो बार युति हुई हो तो एक नाम के दो चान्द्रमास (मलमास) उस वर्ष जानने चाहिए।

सूर्य चन्द्र (निरयन) युति की राशि	गत मास उत्तर भारत	गत मास दक्षिण भारत
मेष	वैशाख	चैत
वृष	ज्येष्ठ	वैशाख
मिथुन	आषाढ़	ज्येष्ठ
कर्क	श्रावण	आषाढ़
सिंह	भाद्रपद	श्रावण
कन्या	आश्विन	भाद्रपद
तुला	कार्तिक	आश्विन
वृश्चिक	मार्गशीर्ष	कार्तिक
धनु	पौष	मार्गशीर्ष
मकर	माघ	पौष
कुम्भ	फाल्गुन	माघ
मीन	चैत्र	फाल्गुन

यह ध्यान दें कि प्रत्येक मास में शुक्लपक्ष उत्तर व दक्षिण भारत में एक ही नाम से पुकारा जाता है लेकिन कृष्णपक्ष में जिसे उत्तर भारत में ज्येष्ठकृष्ण कहा जाता है, दक्षिणी व पश्चिमी भारत में उसे वैशाख कृष्ण कहते हैं।

उदाहरण

पूर्वोक्त ३०-७-९० के उदाहरण में २२-७-९० को कर्क राशि में सूर्य-चन्द्र की युति हुई है, अत: उत्तर भारत में वह श्रावणकृष्ण पक्ष की अमावास्या थी, इसके बाद श्रावण मास का शुक्लपक्ष चल रहा है। क्योंकि उत्तर व दक्षिणी भारत में शुक्लपक्ष समान चलते हैं अत: दक्षिण भारत में भी इसे श्रावण शुक्ल ही कहा जायगा। लेकिन पिछली अमावास्या को आषाढ़ की अमावास्या कहा जायगा।

चान्द्र तिथि का ज्ञान

भारत में बालक की जन्मतिथि (चान्द्रतिथि) का विशेष महत्व है, प्राय: जन्मोच्छव चान्द्रतिथि के अनुसार ही मनाये जाते हैं। अत: जन्मतिथि का

उल्लेख आवश्यक है। जन्म के समय का स्पष्ट चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्य घटा दें। शेष के अंश बना लें, इसमें १२ का भाग दें, लब्धिगत तिथि होगी, इससे अगली तिथि जन्म तिथि (शुक्लपक्ष) होगी। लेकिन चन्द्रमा में सूर्य घटाने पर शेष १८० अंश से अधिक हो तो उसमें १८० घटाकर शेष में १२ का भाग दें। लब्धि गतितिथि (कृष्णपक्ष शुक्लपक्ष के बाद का पक्ष) होगी।

उदाहरण

३०-७-९०—३।२९ पर चन्द्रस्पष्ट—६।१६।२७।३०
,, ,, ,, सूर्य स्पष्ट—३।१२।४७। ४

३। ३।४०।२६

३ राशि × ३० = ९० + ३ = ९३ अंश।

इसमें १२ का भाग देने पर लब्धि सात (७) प्राप्त हुआ, अर्थात शुक्ल-पक्ष की सप्तमी व्यतीत होकर अष्टमी (८) तिथि का जन्म है।

जन्म नक्षत्र का ज्ञान

तात्कालिक चन्द्रस्पष्ट की कला बना लें इसमें ८०० का भाग देने पर लब्धिगत नक्षत्र, तथा इससे अगला वर्तमान जन्म नक्षत्र होगा। शेष कला २०० से कम हों तों प्रथम चरण, २०० से ४०० तक द्वितीय चरण, ४०० से ६०० तक तीसरा चरण तथा ६०० से ऊपर हों तो चतुर्थ चरण का जन्म होगा।

उदाहरण

स्पष्ट चन्द्र ६।१६।२७।३०

६ राशि × ३० + १६ = १९६ अंश × ६० + २७ = ११७८७ इसमें ८०० का भाग देने पर लब्धि १४ शेष ५८७/३० कला। अर्थात् १४वाँ (चित्रा) नक्षत्र बीतकर १५वें नक्षत्र स्वाती का जन्म है और शेष कला ५८७।३० होने से तीसरे चरण में जन्म सिद्ध हुआ।

जन्मदशा का भुक्तभोग्य साधन

यहाँ भयात भयोग आवश्यक नहीं है। उपरोक्त विधि से जन्म नक्षत्र ज्ञान हो जाने पर यह स्पष्ट हो जायगा कि कौन सी दशा प्रारम्भ में थी। यथा (विंशोत्तरी) जन्मनक्षत्र + ७ भागा ९ शेष = दशा। (योगिनी) जन्म नक्षत्र + ३ भागा ८ शेष = दशा। भुक्त-भोग्य जानने हेतु सारिणियाँ भी प्रचलित हैं।

उनसे दशा निकालने में भी कुछ समय लगता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि वे सारिणियों के आश्रित न रहकर स्वयं गणित करें। यों भी सारिणी सर्वत्र सुलभ नहीं होती। एक बहुत ही सरल गुप्त विधि दे रहा हूं।

तात्कालिक चन्द्र स्पष्ट के अनुसार दशा का भुक्तकाल इस प्रकार निकालें। चन्द्रमा की कलाओं में ८०० का भाग देने पर शेष बची कलाओं से पहले दशा की सामान्यगति के अनुसार भुक्त दशा वर्षादि निकालें, फिर प्रारम्भ में जो दशा हो (जन्मदशा) उसके दशा वर्षों से इसे गुणा करदें। यह भुक्त दशा होगी। इसे दशा वर्षों में घटाने से भोग्यदशा होगी।

१ विकला में = २७ पल
१ कला में = २७ घटी
१ अंश में = २७ दिन
} यदि दशा की सामान्य गति है।

उदाहरण

पूर्वोक्त उदाहरण में जन्मनक्षत्र १५ है।

(अ) १५ + ७ = २२ भागा ६ = शेष ४ जन्मदशा विंशोत्तरी में राहु की हुई। जिसके दशा वर्ष १८ हैं।

चन्द्रमा की कलाओं में ८०० का भाग देने पर शेष :—५८७।३०

कला ५८७ × २७ = १५८४९ घटी

शेष ३० विकला × २७ = ८१० पल

= १५८४९ घटी ८१० पला।

८१० भागा ६० = लब्धि १३ घटी शेष ३० पला।

१५८४९ + १३ = १५८६२ भागा ६० = लब्धि २६४ दि. २२ घटी

२६४ भागा ३० = ८ माह २४ दिन

= कुल ८ माह २४ दिन २२ घटी ३० पला।

इसे राहु के दशा वर्ष १८ से गुणा किया —

८।२४।२२।३० = १४४।४३२।३९६।५४०
× १८

= १३ वर्ष २ माह १८ दिन ४५ घटी ० पल यह राहु की भुक्त दशा हुई।

इसे राहु के दशा वर्षों में घटाने पर—

१८। ।०।०
१३।२।१८।४५
————————
४।९।११।१५ यह जन्म पर राहु दशा शेष रही।

(आ) इसी प्रकार १५ + ३ = १८ भागा ८ शेष २

= पिंगला दशा (योगिनी) में जन्म है।

पूर्वोक्त प्रकार से ८ माह २४ दिन २२ घटी ३० पला।

इसे पिंगला के दशा वर्ष २ से गुणा किया।

= ८।२४।२२।३० = १६।४८।४४।६०

× २

१।५।१८।४५।० = भुक्त

पिंगला के दशा वर्ष २।०।०।० में घटाया —

१।५।१८।४५

———————

पिंगला दशा शेष = ०।६।११।१५

सुगम सारणी

निम्न चक्र से दशा साधन सुगम होगा। प्राप्त सामान्य दशा वर्षादि को दशा वर्षों से गुणा करने पर स्पष्ट भुक्त दशा होगी।

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	१००
दिन	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	९	१३	१८	२२	४५
घटी	२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३६	३	३०	०	३०		३	०

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३	४०	५०	१००
घटी	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	९	१३	१८	२२	४५
पल	२७	५४	२१	४८	१५	४२	६	३६	३	३०	०	३०	०	३०	०

जैसे—पूर्वोक्त चन्द्रमा की कला-विकला—५८७।३०

५०० कला (१०० कला पर ४५ दिन = २२५ दिन. घ. प.

८० पर (५० + ३०) = ३६ दिन. घ. प.

७ = ३ दिन. ९ घ. ० प.

३० विकल्प पर = १३ घ. ३० प.

———————————

(दो सौ चौंसठ दिन २२ घटी ३० प.) योग—२६४।२२।३०

अर्थात = ८ माह २४ दिन २२ घ० ३० प० यही मान ऊपर भी आया था। इसे राहुदशा वर्ष १८ से गुणा करने पर १३।२।१८ वर्षादि राहु की दशा भुक्त हुई। तथा ४।९।११ इतनी शेष रही।

दशा साधन की एक और सरल बिधि

विकलात्मक चन्द्रमा में ८०० का भाग देने पर जो शेष बचे, उसे ८०० में घटा दें। शेष को प्रारम्भ में जो दशा हो उसके दशा वर्षों से गुणा कर ८०० से भाग लें, यह वर्ष होंगे, शेष को बारह से गुणाकर फिर ८०० का भाग लें, यह मास होंगे। शेष को पुन: ३० से गुणा कर ८०० से भाग लें—यह दिन होंगे। शेष को ६० से गुणाकर फिर भाग लें—घटी होगी। यह सीधे भोग्य-दशा प्राप्त होगी।

उपरोक्त उदाहरण में—

चन्द्रमा की कलाओं में ८०० का भाग देने पर शेष—५८७।२७ इसे ८०० में घटाने पर शेष २१२।३३ × १८ = ३८२५।५४ (राहुदशा वर्षों से गुणा)

८००)३८२५(४ वर्ष
३२००
―――――
६२५
×१२
―――――
७५००(९ माह
७२००
―――――
३००
×३०
―――――
९०००(११ दिन
८००
―――――
१०००
८००
―――――
२००
×६०
―――――
१२०००(१५ घटी
८००
―――――
४०००
४०००
―――――
०

= राहुदशा भोग्य ४।९।११।१५

सूर्य-चन्द्र स्पष्ट से तिथ्यादि का भुक्त-भोग्य काल

(अ) तिथि का भुक्त योग्य साधन-पूर्वोक्त प्रकार से चान्द्रमास तथा तिथि का ज्ञान हो जाने पर तिथि का भुक्त योग्य जानना हो तो चन्द्रस्पष्ट में सूर्यस्पष्ट घटाकर शेष बचे अंशों में १२ का भाग देने पर जो शेष बचे, उसे १२ अंशों में घटाने से 'भोग्य अंश होंगे। उपरोक्त १२ का भाग देने से जो शेष बचे हो वह 'भुक्तांश' होंगे। अब चन्द्रमा की गति में सूर्य की गति घटाकर शेष कलामान से भुक्तांशों में (सवर्णित विकला करके) भाग देने पर लब्धि घटी-पलों में भुक्ततिथि होगी। इस इसी प्रकार शेष से भोग्यांशों में भाग देने से भोग्य तिथि होगी। दोनों का योग तिथि का सर्वमान होगा।

उपरोक्त उदाहरण में (क्रमांक ४-चान्द्रतिथि का ज्ञान) चन्द्रमा स्पष्ट में सूर्यस्पष्ट घटाने पर शेष ३।३।४०।२६ बचा है = ९३ अंश ४० क० २६ विकला।

अंशों में १२ का भाग देने पर पर लब्धि ७, शेष ९।४०।२६, यह 'भुक्तांश' हुए। इसको विकला में सवर्णित किया (९X६० + ४०X६० + २६) = ३५८२६। चन्द्रमा की गति (चन्द्रमा स्पष्ट में) १२ अंश दैनिक और सूर्य की गति ५७ क. २३ वि. = १२।०।०

०।५७।२३

———————

११। २।२७

इसको कला में सवर्णित किया (११X६० + २) = ६६२

६६२)३५८२६(५४ घ. ७ पला

३३१०

————

२७२६

२६४८

————

७८

X६०

————

४६८०

४६३४

————

४६

= ५४।७ अष्टमी का भुक्तमान

इसी प्रकार भुक्तांश ६।४०।२६ को १२।०।० में घटाने से शेष २।१९।३४ 'भोग्यांश' हुए । इन्हें भी विकला में सवर्णित किया (२×६०+ १९×६०+३४)=१३७४

६६२)१३७४(२ घ०
१३२४
————
५०
×६०
————
३०००(४ प०
२६४८
————

३५२ =२।४ यह अष्टमी का भोग्य काल हुआ ।

=भुक्तकाल ५४।७+२।४ भोग्य काल=५६।११ यह अष्टमी का सर्वमान (कुलमान) सिद्ध हुआ ।

(आ) नक्षत्र का भुक्त भोग्य (भयात-भभोग) साधन

पूर्वोक्त जन्म नक्षत्र का ज्ञान करने की विधि में चन्द्रमा की कलाओं में ८०० का भाग देने से शेष बची कलाओं को विकला में सर्वगित कर चन्द्रमा की गति के कलामान से भाग देने पर लब्धि नक्षत्र का भयात होगा । ८०० में घटाने से शेष बची कलाओं को ८०० में घटाकर शेष में चन्द्रगति का भाग देने से भोग्यकाल होगा । दोनों का योग भभोग होगा । उपरोक्त उदाहरण में ८०० का भाग देने पर शेष बची ५८७।३० को विकला में सर्वणित किया (५८७×६०+३०)=३५२५० चन्द्रमा की गति १२ अंश×६०=७२० कला ।

७२०)३५२५०(४८ घ. ५७ प.
२८८०
————
६४५०
५७६०
————
६९०
×६०
————

४१४००(
३६००

५४००
५०४०

------ =४८।५७ यह स्वाती का

३६० भुक्त (भयात) हुआ।

अब ८०० कला
(–) ५८७।३०

२१२।३० शेष की विकला (२१२ × ६० + ३०)
= ७२)१२७५०(१७ घ. ४२
७२०

५५५०
५०४०

५१०
×६०

३०६००
२८८०

१८००
१४४०

३६०

=१७ घ. ४२ पल भोग्य।

अतः ४८।५७ + १७।४२ = ६६।३९ सर्वमान (भभोग)।

(इ) योग—सूर्यस्पष्ट और चन्द्रस्पष्ट का योग करके उसे कलात्मक सवर्णित कर, उसमें ८०० का भाग देने से लब्धिगत योग तथा उससे अगला

प्रचलित योग होगा। इसमें भी शेष जो बचे उसकी विकला बना कर सूर्य और चन्द्रमा की गति के जोड़ से भाग देने पर लब्धि योग की भुक्तघटी होंगी।

८०० में घटाने पर शेष बचे को ८०० में घटाने पर शेष में इसी प्रकार सूर्य + चन्द्र की गति के योग से भाग देने पर भोग्यकाल आयगा। दोनों का योग सर्वकाल होगा।

लघु गुणक कोष्ठक से ग्रहस्पष्ट विधि

(अ) एफेमरीज से ग्रहस्पष्ट विधि प्राय: वार्षिक एफेमरीज में प्रत्येक दिन के या प्रति सप्ताह एक नियत समय के ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, वह समय लिख लें। जन्म के समय (अथवा जिस समय के स्पष्ट ग्रह जानने हों) इन दोनों समयों का अन्तर निकाल लें (जन्म समय में एफेमरीज के ग्रहस्पष्ट का समय घटाकर)।

(आ) एफेमरीज में दो दिन के ग्रहस्पष्ट का अन्तर करने से उसके एक दिन की गति ज्ञात होगी। ज्ञात करें।

(इ) एक दिन अर्थात २४ घण्टे की जितनी गति हो, उससे अंश, कला, विकला, यहां पर अंश = घण्टा, कला = मिनट, मानकर लाघवांक ज्ञात होंगे। लाघवांक ज्ञात कर लें। अंशात्मक गति हो तो अंश के भी घंटे बना लें।

(ई) उपरोक्त 'अ' के अनुसार दोनों समयों में जो घण्टा मिनटात्मक अन्तर है, उसके भी लाघवाँक ज्ञात कर लें।

उपरोक्त (इ) और (ई) दोनों से प्राप्त लाघवांकों का योग लघुगुणक कोष्ठक में जहां मिलें, उन अंश-कला को एफेमरीज के ग्रह स्पष्ट में जोड़ने से अपने वाँछित समय का ग्रहस्पष्ट होगा।

ध्यान दें—राहु, केतु तथा जो ग्रह बक्री हो उसमें जोड़ने के स्थान पर घटाना होगा।

उदाहरण

दिनांक १७ नवम्बर ९० को प्रात: ८।४५ बजे सूर्य स्पष्ट क्या होगा ?

(अ) एफेमरीज में ग्रहस्पष्ट का समय ३।० है वाँछित या जन्म समय ८।४५ (८।४५ --३। =५।४५) अन्तर, घण्टा-मिनट

(आ) एफेमरीज में १७ नवम्बरप्रात: ३।० बजे सूर्य स्पष्ट ७।-।१३।५० और १८ नवम्बर को प्रात: ३।० पर ७।१।३४।२० है = १ अंश ० कला ३० विकला (१। ।३०) = २४ घण्टे की गति।

(इ) लघुगणक कोष्ठक में २४ घण्टे की गति = १ अंश, शून्य कला पर प्राप्त लाघवांक = १.३८०२२।

(ई) पूर्वोक्त (अ) के अनुसार ५ घं० ४५ पर प्राप्त लघुगणक कोष्ठक में लाघवांक = .६२०५।

अब (इ) तथा (ई) से प्राप्त लाघवांकों का योग—

१.३८०२२
+०.६२०५४
―――――
२.०००७६

यह योग लघुरित्थ कोष्ठक में (लगभग) ० अंश १४ कला में प्राप्त है, अत: एफेमरिज के सूर्य स्पष्ट में इसे जोड़ने पर अपने वाँछित समय का सूर्य स्पष्ट प्राप्त हुआ—

१७।११।९० प्रात: ३।० बजे सूर्य—७।०।३३।५०
+ ०।०।१४।०
―――――
१७।११।९० को प्रात: ८।४५ पर = ७।०।४७।५०

विशेष

यदि एफेमरीज में साप्ताहिक ग्रहस्पष्ट हो तो अपने वाँछित समय और एफेमरिज के समय में दिन और घंटों का अन्तर निकालें।

जैसे वाँछित समय —१४ नवम्बर ८।४५ प्रात:।
एफेमरीज के ग्रहस्पष्ट १० नवम्बर ३। ० प्रात:।
―――――
= ४ ---- ५।४५

अर्थात् अन्तर ४ दिन तथा ५ घं० ४५ मि०।

अथवा ४ × २४ = ९६ + ५
= १०१ घंटा ४५ मिनट।

लघुरित्थ कोष्ठक में केवल २३ घण्टे तक का ही गणित है, अत: ऐसी स्थिति में, एक सप्ताह के ग्रहस्पष्ट का अन्तर कर उसमें ७ का भाग देने पर एक दिन की गति ज्ञात होगी। इस एक दिन की गति को जितने दिन का अन्तर हो उतने दिन से गुणा करने पर– उतने पूरे दिनों की स्थिति ज्ञात होगी। शेष घण्टों की स्थिति पूर्ववत निकाल सकते हैं।

इस उदाहरण में—

१७ नवम्बर ३।० पर सूर्य स्पष्ट —७।०।३३।५०

१० नवम्बर ३।० पर सूर्य स्पष्ट – ६।२३।३०।५६(—)

एक सप्ताह में = ७ । २।५४

= ७ दिन में = ७ अंश, २ कला ५४ विकला।

अत: एक दिन में (इसमें सात का भाग देने पर)

१ अंश, ० कला, २५ विकला = २४ घण्टे या एक दिन की गति सिद्ध हुई।

हमारा अन्तर है ४ दिन, ५ घण्टा, ४५ मि० अत: :—

(अ) ४ दिन X १।०।२५ = ४।१।४० (चार दिन में)

(आ) शेष ५ घण्टा ४५ का मिनट का उपरोक्त क्रियानुसार –

१ अंश ०कला पर लाघवांक = १.३८०२२

५ घण्टा ४५ मि. पर लाघवांक = .६२०५४

= २.००७६

यह ० अंश १४ कला पर प्राप्त होते हैं

अत: ५ घण्टा ४५ मि० पर = ०।१४।०

	रा०	अं०	क०	वि०
१० नवम्बर ३।० प्रात: सूर्य	६	२३	३०	५६
+ ४ दिन में	०	४	१	४०
+ ५ घं० ४५ मि० में—	०	०	१४	०
१४ नवम्बर ८।४५ पर =योग	६	२७	४६	३६

कला ↓ मिनट ← **Log. Table Hours Or Degrees** →

M	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	° 10	11
0	—	1.38022	1.07918	.90309	.77816	.68126	.60206	.53512	.47712	.42597	.38022	.33882
1	3.15836	1.37303	1.07558	.90068	.77635	.67980	.60086	.53408	.47623	.42517	.37949	.33816
2	2.85732	1.36597	1.07200	.89829	.77455	.67836	.59966	.53305	.47533	.42436	.37877	.33750
3	2.68124	1.35903	1.06848	.89592	.77276	.67692	.59846	.53202	.47443	.42356	.37805	.33685
4	2.55630	1.35218	1.06494	.89354	.77097	.67549	.59726	.53100	.47353	.42276	.37733	.33619
5	2.45939	1.34546	1.06146	.89119	.76920	.67406	.59607	.52997	.47263	.42197	.37662	.33554
6	2.38021	1.33883	1.05799	.88886	.76743	.67264	.59488	.52895	.47173	.42117	.37589	.33489
7	2.31326	1.33229	1.05456	.88652	.76567	.67122	.59370	.52793	.47083	.42038	.37517	.33424
8	2.25527	1.32585	1.05115	.88420	.76392	.66982	.59251	.52692	.46994	.41958	.37446	.33359
9	2.20412	1.31951	1.04777	.88190	.76216	.66840	.59134	.52592	.46905	.41879	.37375	.33294
10	2.15836	1.31326	1.04443	.87962	.76042	.66700	.59016	.52489	.46817	.41800	.37303	.33229
11	2.11698	1.30710	1.04109	.87733	.75869	.66560	.58899	.52389	.46728	.41722	.37232	.33164
12	2.07918	1.30105	1.03779	.87506	.75696	.66421	.58782	.52288	.46640	.41642	.37161	.33099
13	2.04442	1.29504	1.03451	.87281	.75524	.66282	.58665	.52187	.46552	.41564	.37090	.33035
14	2.01223	1.28913	1.03126	.87056	.75353	.66143	.58549	.52087	.46464	.41485	.37019	.32970
15	1.98227	1.28330	1.02803	.86833	.75182	.66005	.58433	.51987	.46376	.41407	.36949	.32906
16	1.95424	1.27755	1.02482	.86612	.75012	.65868	.58317	.51888	.46288	.41329	.36878	.32842
17	1.92791	1.27187	1.02164	.86390	.74843	.65730	.58202	.51788	.46202	.41251	.36808	.32777
18	1.90309	1.26627	1.01848	.86170	.74674	.65594	.58087	.51689	.46113	.41173	.36737	.32713
19	1.87962	1.26074	1.01535	.85952	.74506	.65457	.57972	.51590	.46026	.41095	.36667	.32649
20	1.85733	1.25527	1.01223	.85733	.74339	.65321	.57858	.51492	.45939	.41017	.36597	.32585
21	1.83614	1.24988	1.00914	.85517	.74172	.65186	.57744	.51392	.45852	.40940	.36527	.32522
22	1.81594	1.24455	1.00607	.85302	.74006	.65052	.57630	.51294	.45766	.40863	.36457	.32458
23	1.79663	1.23928	1.00303	.85087	.73841	.64916	.57516	.51196	.45679	.40785	.36387	.32394
24	1.77816	1.23408	1.00000	.84873	.73676	.64782	.57403	.51098	.45593	.40708	.36318	.32331
25	1.76042	1.22894	0.99699	.84662	.73512	.64648	.57290	.51000	.45507	.40631	.36248	.32267
26	1.74339	1.22386	0.99401	.84450	.73348	.64514	.57178	.50903	.45421	.40555	.36179	.32204
27	1.72700	1.21884	0.99105	.84238	.73185	.64382	.57065	.50805	.45335	.40478	.36109	.32141
28	1.71120	1.21388	0.98810	.84030	.73023	.64249	.56953	.50708	.45250	.40401	.36040	.32077
29	1.69596	1.20897	0.98518	.83822	.72862	.64117	.56842	.50613	.45164	.40325	.35971	.32014
30	1.68124	1.20412	0.98227	.83614	.72700	.63985	.56730	.50515	.45079	.40249	.35902	.31951
31	1.66700	1.19932	0.97939	.83408	.72539	.63853	.56619	.50419	44994	40173	.35833	.31888
32	1.65322	1.19457	0.97652	.83203	.72379	.63722	.56508	.50322	.44909	.40097	.35765	.31826
33	1.63985	1.18988	0.97367	.82998	.72220	.63592	.56397	.50226	.44825	.40021	.35696	.31763
34	1.62688	1.18523	0.97084	.82795	.72061	.63462	.56287	.50131	.44740	.39945	.35627	.31700
35	1.61429	1.18064	0.96803	.82593	.71903	.63332	.56177	.50036	.44656	.39869	.35559	.31638
36	1.60208	1.17609	0.96524	.82391	.71745	.63202	.56067	49940	44571	.39794	.35491	.31575
37	1.59016	1.17159	0.96264	.82190	71588	.63073	.55957	.49846	.44487	.39719	.35442	.31513
38	1.57858	1.16714	0.95971	.81991	71432	.62945	.55848	49750	.44403	.39643	.35354	.31451
39	1.56730	1.16273	0.95697	81792	71276	.62816	.55739	.49656	.44320	39568	.35286	.31389
40	1.55630	1.15836	0.95424	.81594	71120	.62688	.55630	.49560	.44236	.39493	.35218	.31326
41	1.54558	1.15404	0.95154	.81397	70966	62562	.55522	49466	.44152	.39419	.35150	.31264
42	1.53512	1.14976	0.94886	.81201	.70811	.62434	.55414	.49372	44069	.39344	.35083	31203
43	1.52489	1.14553	0.94617	.81006	70658	.62307	.55306	49278	.43986	.39269	35015	.31141
44	1.51492	1.14133	0.94352	.80811	70504	.62180	.55198	49184	.43903	.39195	.34948	.31079
45	1.50516	1.13717	0.94088	.80618	.70352	.62054	.55091	49092	43820	.39121	34880	.31017
46	1.49560	1.13306	0.93826	.80425	70200	.61929	.54984	48998	.43738	.39046	.34813	.30956
47	1.48626	1.12898	0.93566	.80234	70048	.61803	54877	48905	43655	.38972	34746	30894
48	1.47712	1.12494	0.93306	.80043	.69897	.61678	.54770	.48812	43573	.38899	34679	30833
49	1.46817	1.12094	0.93048	.79853	.69746	.61554	.54664	48719	.43491	.38825	.34612	.30772
50	1.45939	1.11697	0.92792	79663	.69596	.61429	.54558	.48626	.43409	.38751	34545	30710
51	1.45079	1.11304	0.92537	.79475	.69447	.61306	.54453	48534	.43327	.38678	.34478	.30649
52	1.44236	1.10914	0.92283	.79287	.69298	.61182	.54347	48442.	.43245	.38604	.34411	30588
53	1.43409	1.10528	0.92032	79101	.69149	.61059	.54240	.48350	.43164	.38531	34345	30527
54	1.42598	1.10146	0.91781	.78915	.69002	.60936	.54136	.48258	43082	.38458	.34278	.30466
55	1.41800	1.09766	0.91532	.78729	.68854	.60813	.54030	.48167	43001	38385	34212	.30406
56	1.41016	1.09390	0.91285	.78545	.68707	.60690	.53927	.48076	42920	.38312	.34146	.30345
57	1.40249	1.09018	0.91039	.78361	.68561	.60569	.53823	47984	42839	.38239	34080	.30284
58	1.39493	1.08648	0.90794	.78179	.68415	.60448	.53719	47893	42758	.38166	34014	30224
59	1.38751	1.08282	0.90551	.77996	.68269	.60327	.53615	47803	42677	.38094	.33948	.30163
60	1.38021	1.07918	0.90309	.77815	.68124	.60206	.53510	47712	42597	.38021	33882	30103

कला↓ ← लघुगणक कोष्टक घटि अथवा अंश →

M	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
0	.30103	.26628	.23408	.20412	.17609	.14976	.12494	.10146	.07918	.05799	03779	.01848
1	.30043	26572	23357	.20364	.17564	.14934	.12454	.10108	.07882	.05765	.03746	01817
2	.29983	.25516	.23305	.20316	.17519	.14891	.12414	.10070	.07846	.05730	.03713	.01785
3	.29922	.26460	.23253	.20267	.17474	.14849	.12373	.10032	.07810	.05696	.03680	.01754
4	.29862	26405	23202	.20219	.17429	.14805	.12333	.09994	.07774	.05662	.03647	.01723
5	.29802	26349	23151	.20171	.17384	.14764	.12293	.09956	.07738	.05627	.03615	01691
6	29743	.26294	.23099	.20123	.17339	.14722	.12253	.09918	.07702	.05593	03582	.01660
7	29683	26239	23048	.20076	.17294	.14679	.12213	.09880	.07666	.05559	03549	.01629
8	29623	.26184	.22997	.20028	.17249	.14637	.12173	.09842	.07630	.05524	03516	.01597
9	.29563	26129	.22945	19980	.17204	14595	.12133	.09804	07594	.05490	03484	01566
10	.29504	26074	22894	.19932	.17159	.14553	.12094	.09766	07558	05456	03451	01535
11	.29445	.26019	.22843	.19884	.17114	.14510	.12054	.09729	.07522	.05422	03418	.01504
12	.29385	.25964	.22792	.19837	.17070	.14468	.12014	.09691	.07486	.05388	.03386	.01472
13	.29326	.25909	.22741	.19789	.17025	.14426	.11974	.09653	.07450	05353	.03353	.01441
14	.29267	.25854	.22690	.19742	.16980	.14384	.11935	.09616	.07414	.05319	03321	.01410
15	.29208	.25800	.22640	.19694	.16936	.14342	.11895	.09578	.07379	05285	.03288	.01379
16	.29148	.25745	.22589	.19647	.16891	.14300	.11855	.09540	.07343	05251	.03256	.01348
17	.29090	.25690	.22538	19599	16847	.14258	.11816	.09503	.07307	.05217	.03223	.01317
18	.29031	.25636	22488	.19552	.16802	.14217	.11776	09465	.07272	.05183	03191	.01286
19	.28972	.25582	.22437	.19505	.16758	.14175	.11736	.09428	.07236	05149	.03158	.01254
20	.28913	.25527	.22386	.19457	.16714	.14133	.11697	.09390	.07200	05115	.03126	01223
21	.28854	.25473	22336	.19410	16669	.14091	.11658	.09353	.07165	05081	.03093	.01193
22	.28796	.25418	.22286	19363	.16625	.14049	.11618	.09316	.07129	.05047	.03061	.01162
23	.28737	.25365	.22235	.19316	.16581	.14008	.11579	.09278	.07094	.05014	.03029	.01130
24	.28679	.25311	.22135	.19269	.16537	.13966	.11539	.09241	.07058	04980	.02996	.01100
25	.28621	.25257	.22135	.19222	.16493	.13925	.11500	09204	.07023	.04946	.02964	.01069
26	.28562	.25203	.22084	.19175	.16449	.13883	.11461	.09166	.06987	.04912	.02932	01038
27	.28504	.25149	.22034	.19128	.16405	.13842	.11421	.09129	.06952	.04878	.02899	01007
28	.28446	.25095	.21984	.19081	.16361	.13800	.11382	.09092	.06916	.04845	.02867	.00976
29	.28388	.25041	.21934	.19035	.16317	.13759	.11343	.09055	.06881	.04811	.02835	.00945
30	.28330	.24988	.21884	.18988	.16273	.13717	.11304	.09018	.06846	.04777	02803	.00914
31	.28272	.24934	.21834	.18942	.16229	.13676	.11265	.08981	.06810	.04744	02771	00884
32	.28214	.24881	.21785	.18895	.16185	.13635	.11226	.08943	.06775	04710	02739	00853
33	28157	24827	.21735	.18848	.16141	.13593	.11187	.08906	06740	.04676	02706	00822
34	28099	24774	.21685	18802	.16098	.13552	.11148	.08869	.06705	04643	.02674	00792
35	28042	24720	21655	.18755	.16054	.13511	.11109	.08832	.06670	04609	.02642	00761
36	27984	.24667	21586	.18709	.16010	.13470	.11070	.08796	.06634	04576	02610	00730
37	27927	.24614	21536	.18662	.15967	.13429	.11031	.08759	.06599	04542	.02578	.00699
38	27869	.24561	.21487	.18616	.15923	.13388	.10992	.08722	.06564	.04509	02546	.00669
39	27812	24508	.21437	.18570	.15880	.13347	.10953	.08685	.06529	.04475	02514	.00638
40	27755	.24455	.21388	.18523	.15836	.13306	.10914	.08648	.06494	.04442	02482	00607
41	.27698	24402	.21339	.18477	.15793	.13265	.10876	.08611	06459	.04409	.02450	.00577
42	.27641	24349	.21289	.18432	.15749	.13224	.10837	.08575	.06424	.04375	.02419	.00546
43	.27584	.24296	.21240	.18385	.15706	.13183	.10798	.08538	.06389	.04342	.02387	.00516
44	.27527	.24244	21191	.18339	.15663	.13142	.10760	.08501	.06354	04308	.02355	00485
45	.27470	.24191	.21142	.18293	.15620	.13101	10721	.08464	.06319	.04275	.02323	:00455
46	.27413	.24138	.21093	18247	.15576	.13061	.10682	.08428	.06284	04242	.02291	.00424
47	.27357	24086	.21044	18202	.15533	13020	.10644	.08391	.06250	.04209	.02259	.00394
48	27300	24033	.20995	18155	.15490	12979	10605	.08355	.06215	.04175	.02228	.00363
49	.27244	.23981	.20946	18110	.15447	.12938	.10567	.08318	.06180	.04142	.02196	.00333
50	.27187	.23928	.20897	18064	.15404	.12898	.10528	.08282	.06145	.04109	.02164	.00303
51	.27131	23876	.20848	18018	.15361	.12857	.10490	.08245	.06111	.04076	.02133	.00272
52	.27075	23824	20800	.17973	.15318	.12817	.10452	.08209	.06076	.04043	.02101	.00242
53	27018	23772	.20751	.17927	.15275	.12776	.10413	.08172	.06041	.04010	.02069	.00212
54	26962	.23720	.20702	17881	.15232	.12736	.10375	.08136	.06006	.03977	.02038	.00181
55	.26906	.23668	.20654	.17836	.15190	.12695	.10337	.08099	.05972	.03944	.02006	.00151
56	.26850	23616	.20605	.17790	.15147	.12655	.10298	.08063	.05937	.03911	.01974	.00121
57	.26794	23564	.20557	.17745	.15104	.12615	.10260	.08027	.05903	.03878	.01943	00091
58	.26738	.23512	20509	.17700	.15061	.12574	.10222	.07991	.05868	.03845	.01911	.00060
59	26683	23460	.20460	.17654	.15019	.12534	.10184	.07954	.05834	03812	.01880	.00030
60	.26627	.23408	.20412	17609	.14976	.12494	.10146	.07918	.05799	.03779	.01848	.00000

भारतीय पंचांगों से ग्रहस्पष्ट

इस लघुगणक कोष्ठक का गणित भारतीय पद्धति से बने पंचांगों से गणित करने में भी प्रयोग हो सकता है। इसके निमित पंचांग में जिस तिथि, जिस समय के ग्रह स्पष्ट दिये हैं, उन्हें राष्ट्रीय समय (स्टैण्डड) में परिवर्तित करलें। इसके बाद जन्म समय और अपने वांछित समय में जितने दिन घण्टादि का अन्तर हो वह अन्तर निकाल लें। ग्रह की गति को अंश कला में परिवर्तित कर लें। यथा—उपरोक्त १७ नवम्बर ९०—८।४५ प्रात: का ही समय लें।

(अ) पंचांग में १६ नवम्बर को इष्टकाल ५२।५ के ग्रहस्पष्ट हैं। सूर्योदय ६।१७ है। इष्टकाल ५२।५ के घन्टा मिनट = २० घं ५० मि० हुआ, इसे सूर्योदय ६।१७ में जोड़ा = २७।७ अर्थात् रात्रि ३।७ बजे के ग्रहस्पष्ट हुए। जो पाश्चात्य मत से १७ नवम्बर प्रात: ३।७ हुआ। = पंचांग के ग्रहस्पष्ट ३।७ प्रात:।

(आ) पंचांग में सूर्य की गति ६० कला ३० विकला। अर्थात् ६० कला = १ अंश और ३० विकला।

= १ अंश ० कला ३० विकला—सूर्य की एक दिन की गति। अब उपरोक्त प्रकार से ग्रहस्पष्ट कर सकते हैं।

सप्तवर्ग चक्र [सारिणी] का प्रयोग

प्राय: होरा, देष्काण, सप्तांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश—इन सातों कुण्डलियों में ग्रहों की स्थिति जानने हेतु अलग-अलग गणना करने में पर्याप्त समय लगता है। इस सारिणी से एक साथ सप्तवर्ग ज्ञान हो जाते हैं। समय की बचत के साथ यह सुविधा जनक है। लग्न या जिस ग्रह के सप्तवर्ग जानने

सप्तवर्ग चक्र

राशि	अं. क. वि.कला	२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २५	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४३	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
० मे.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

हों, उसकी स्पष्ट राशि, अंश, कला विकला के अनुसार उसके सप्तवर्ग में स्थिति का ज्ञान होगा। उदाहरण—सूर्यस्पष्ट ७।१२।८।३० है, अर्थात तुलाराशि के १२ अंश, ८ कला, ३ विकला। तुला (६) राशि के सामने और ऊपर १२ अंश ३० कला, शून्य विकला के नीचे क्रमश: ५, ११, ९, १०, ११, ९ अंक हैं (ऊपर ध्यान से देखें—अंश १२।०।० से लेकर १२।३०।० तक एक खण्ड है, हमारा सूर्य स्पष्ट इसी खण्ड के मध्य है, अत: इसी के नीचे के अंक ग्रहण किये)।

राशि	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	१०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	२७	०	०	०	२५	२०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
४ सिं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कं.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
६ तु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२

इसका तात्पर्य यह हुआ कि सूर्य होरा कुण्डली में सिंह (५) का, देष्काण कुण्डली में कुंभ (११) का, सप्तमांश कुण्डली में धनु (९) का, नवमांश कुण्डली में मकर (१०) का, द्वादशांश में कुंभ (११) का, और त्रिंशांश में (९) धनु का हुआ। इसी प्रकार लग्न स्पष्ट से प्रत्येक के लग्न भी सिद्ध होंगे।

राशि	अं	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	२८
	क	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	वि	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	२०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
८ ध.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	२	२	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं.	हो	५	२	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२
	द्वा	१	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८